अंक- 85-86

सितम्बर- 2017

पाती

सहयोग- 50/-

फोटो-साभार

चम्पारण सत्याग्रह के स्मृति में, जलज कुमार मिश्र आ कृष्णकुमार, विमर्श में-डा० प्रकाश उदय, भगवती प्र० द्विवेदी आ सौरभ पाण्डेय के साथ- डा० जयकान्त सिंह, केशवमोहन पाण्डेय के आलेख, धरोहर में आचार्य विद्यानिवास मिश्र, डा० कृष्णबिहारी मिश्र, 'कथक्कड़ी' में प्रो० सदानन्द शही। डा० रमाशंकर श्रीवास्तव, अनिल ओझा 'नीरद', डा० सुमन सिंह, आशारानी लाल के कहानी आ हरिराम द्विवेदी, दयाशंकर तिवारी, स्व० नगेन्द्र भट्ट, सौरभ पाण्डेय, कमलेश राय, गुलरेज शहजाद, आनंद सन्धिदूत, गंगाप्रसाद 'अरुण', पाण्डेय कपिल, अशोक द्विवेदी, अंचित, शशि प्रेमदेव के कविता आ अशोक कुमार तिवारी के ललित-व्यंग्य के साथ अन्य स्थायी स्तम्भ।

"पाती -आजीवन सदस्य, [illegible]"

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुघ्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भरूच, गुजरात), राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विनय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती पसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली)

एह अंक में ....

- व्यक्ति-विशेष (एक)/डा० कृष्णबिहारी मिश्र
  पृ० सं०/ ३६-४०

- व्यक्ति-विशेष (दू)/पाण्डेय कपिल
  पृ० सं०/ ३६-४०

- धरोहर -
  - आचार्य विद्यानिवास मिश्र के निबंध
  - कृष्ण बिहारी मिश्र के 'गाँव-संस्मरण'

भोजपुरी-साहित्य के पठनीय सृजन/प्रकाशन

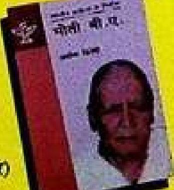

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)

अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या
एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019
Mobile: +91-8004375093, 8373955162, 9919426249, Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंक: 85-86

(तिमाही) सितम्बर **2017**

प्रबन्ध संपादक

प्रगत द्विवेदी

कंपोजिंग / ग्राफिक्स

अरूण निरंजन, शैलेश कुमार, सत्यप्रकाश

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी

डा0 ओम प्रकाश सिंह

संपादक

डॉ0 अशोक द्विवेदी

आवरण चित्र

(फोटो, साभाररायटर-पूरब मे बाढ़ 2017)

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', विजय मिश्र, शिवजी पाण्डेय, शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) विष्णुदेव, डा० अरूणमोहन 'भारवि' (बक्सर) कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय, डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी, डा० कमलेश राय (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण)जलज कुमार मिश्र 'अनुपम' (बेतिया, पश्चिम चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, तुषारकान्त उपाध्याय (पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरूण', अजय ओझा (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन

अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-paati.bhojpuri@gmail.com
ashok.dvivedipaati@gmail.com

संपादन-कार्यालय:-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 91–9919426249, 91–8373955162

एक अंक पर सहयोग-50/-
सालाना सहयोग–250/-
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

www.bhojpurisahityangan.com

एह अंक में ....

हमार पन्ना -
- साँच उघारल जरूरी बा... / 3–4

विमर्श -
- हिन्दी के 'खाता' आ 'त्राता' / डा0 प्रकाश उदय / 5–6
- भोजपुरिया समाजः कब बदली / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 9–10
- रचनात्मक आन्दोलन के लौ... / सौरभ पाण्डेय / 11–14

सरधा के अँजुरी -
- स्व0 नगेन्द्र भट्ट के 'देसगान' / 14

प्रदेश-विशेष-
- चम्पारन गाँधी से पहिले आ बाद / जलज कुमार मिश्र / 21–24
- चम्पारन सत्याग्रह आ पं0 राजकुमार शुक्ल / कृष्णकुमार / 19–20

निबन्ध (थाती)
- मानिक मोर हेरइले / आचार्य विद्यानिवास मिश्र / 15–16

आलेख -
- भोजपुरी लोक आ लोकसंस्कृति / डा0 जयकान्त सिंह / 46–53
- भोजपुरिया नारी–संस्कृति आ गीत / केशवमोहन पांडेय / 25–28

कविता-गीत-गजल-
- सौरभ पाण्डेय / 7 • कमलेश राय / 8 • अंचित / 17
- गुलरेज शहजाद / 18 • हीरालाल 'हीरा' / 24 • पाण्डेय कपिल / 43
- शिवजी पाण्डेय 'रसराज' / 45

व्यक्ति-विशेष -
- डा0 कृष्णबिहारी मिश्र / 39–40
- पाण्डेय कपिल / 41–42
- भोजपुरियन के प्रतिनिधि डा0 कृष्णबिहारी मिश्र / डा0 प्रमोद कुमार तिवारी / 38
- पाण्डेय कपिलः जिनिगी के हिसाब / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 44–45

संस्मरण-
- कब हरि मिलिहें हो राम / कृष्णबिहारी मिश्र / 33–37

कहानी-
- कहे के त सब केहु आपन / डा0 सुमन सिंह / 29–30
- कहनी गइल बन में... / डा0 आशारानी लाल / 31–32
- मुँहनोचवा / उमेशजी ओझा / 54–56
- हवा–पानी / रमाशंकर श्रीवास्तव / 67–69
- गहिर चोट / अनिल ओझा 'नीरद' / 70–74

कविता-गीत/गजल-
- हरिराम द्विवेदी / 62 • विजयशंकर पाण्डेय / 63
- आनन्द सन्धिदूत / 64 • शशि प्रेमदेव / 65
- दयाशंकर तिवारी / 66 • गुरूविन्द्र सिंह / 66 • गंगाप्रसाद 'अरूण' / 75–76
- अशोक द्विवेदी / 77–78 • जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 69

लघुकथा-
- खाली खोंता / राजगुप्त / 20 • बेटी–पतोहि / हीरालाल 'हीरा' / 56

कथक्कड़ी-
- पाँच गो कथा–संस्मरण / प्रो0 सदानन्द शाही / 59–61

ललित-व्यंग-
- सुरा–पुराण / अशोक कुमार तिवारी / 57–58

राउर पन्ना-
- प्रतिक्रिया पाठक लोगन के / 79–80

www.bhojpurisahityangan.com

साँच उघारल जरूरी बा!

हम भोजपुरी धरती क सन्तान, ओकरे धूरि - माटी, हवा-बतास में अँखफोर भइनी। हमार बचपन आ किशोर वय ओकरे सानी-पानी आ सरेहि में गुजरल । भोजपुरी बोली-बानी से हमरा भाषा के संस्कार मिलल, हँसल-बोलल आ रोवल-गावल आइल। ऊ समझ आ दीठि मिलल, जवना से हम अपना गँवई लोक का साथे, देशो के इतिहास भूगोल समझनी, आनो के आपन मननी । संग-साथ का सामूहिक उतजोग से पारस्परिकता के भाव जगल। जीवन-संस्कृति के लूर-सहूर सिखनी हमरा एह व्यक्तित्व का निर्मान में पहिल भूमिका भलहीं हमरा माई-बाप, सगा-सम्बन्धी चाचा-चाची, मामा-मामी, फुआ, ईया-बाबा क रहे, बाकिर ओहू अनगिनत लोगन के रहे जे समय समय पर भाई, गुरु, सँधतिया, हीत-मुदई बनि के मिलल । आपन धरती, हवा-पानी, डँड़ार-सिवान, नदी-ताल, बाग-बन आ बोली-बानी केकरा ना रास आवे, केकरा ना रुचे ! हमरो अपना ओह सगरे क गरब-गुमान बा, जवन हमरा के रचलस-ओरिचलस !

इस्कूल, कालेज ,विश्वविद्यालय में पढ़ला-लिखला-सिखला के जेवन मोका मिलल, ओहू क क्षेत्र, भोजपुरिये रहे --याने गाजीपुर, बलिया, बनारस। हमार माई सिवान (बिहार) जिला के रहे, जवना कारन हमरा में भोजपुरी लोक के ऊ सोगहग संस्कार आइल, जवना में लोक-संस्कृति के जियतार विस्तार आ गहिराई के अनुभूति-प्रतीति भइल। पोथी ज्ञान खातिर हिन्दी, अंगरेजी, संस्कृत जइसन प्रचलित भाषा हमरा शिक्षा क माध्यम जरूर रहे, बाकि ओह सबसे सटल आ ब्यौहारिक रूप से जुड़ल उर्दुओ के शब्द ज्ञान कामे आइल। हमरा उच्च शिक्षा में निजी रुचि का कारन साहित्य पढ़े के रहे, एहसे अवधी, ब्रजी, मैथिली, राजस्थानी आदि भाषा- सब के जाने-समझे के अवसर मिलल। ओइसे गोसाईं तुलसीदास के रामचरित मानस त हमरा भाषा-समाज के ब्योहारे में रहे बाकि हिन्दी साहित्य पढ़े में, एह सब लोक-भाषा के विस्तार आ गहिराई के थोर-बहुत थाहे आ ओमे पँवरे के संजोग भेंटाइल । बड़ जेठ क नेह-प्रीति, असीस-प्रोत्साहन मिलल त दीठि आ समझ के फइलाव भइल।

ओह समय भोजपुरी, अवधी, ब्रजी, बुन्देली, राजस्थानी, पंजाबी वगैरह के हिन्दी से कवनो भेद दुराव ना रहे, बुझाव जइसे सब हिन्दिये के हऽ आ हिन्दिया सिखावे-पढ़ावे वाला लोगवा एह सबके हिन्दिये क माने । थोर-बहुत संस्कृत, पालि, अपभ्रंश, अवहट्ठ आदि पुरनकी भाषा सब के शब्दवा अटपट आ दुरूह जरूर लागे, बाकि ई खूब नीक से बुझाय कि एकरा जनला बिना हिन्दियो क जानकारी ना पूर होई । अभी हे दे ले हमनी के, अपना माई -भाषा में लिखत पढ़त, कुछ हिन्दियाइन लोग का उपेक्षा-तिरस्कार का बावजूद ईहे बूझत रहनी कि सब मिला के एक्के हवे । थोर-ढेर अन्तर का बादो, एह देश का लोकतंत्र में सब भाषा के बिकसे बढ़े क समान अधिकार आ

www.bhojpurisahityangan.com

अवसर बा । भोजपुरी भा राजस्थानी वाला लोग, अपना साहित्य आ बोलनिहार-संख्या का दिसाईं सबल भइला का बावजूद अपना के, एह समानता के अवसर से वंचित बूझत बा । एकर कारन, ऊ भेदभाव आ बरकाव बा, जवना में कवनो बड़-बरियार भाई अपना छोटका पर, आपन बर्चस देखावेला आ रोब झाड़ेला।

राजनीति में ई भेदभाव आ बरकाव साफे चिन्हा जाला। तब झुठिया के रेवड़ी बाँटल आ लेमनचूस देके फुसिलावल कामे ना आवे। ओइसे हमन जइसन लोगन में, ई भेदभाव आ भाषा-दुराव ना कबो पहिले रहे, ना आज बा, हँ ...कुछ स्वनामधन्य 'हिन्दी बचाओ' अभियान वाला कथित हिन्दीप्रेमी लोग के 'भोजपुरी' 'राजस्थानी' बिरोध देखि के अचरज आ दुख जरूर भइल । ओइसे अनुज डा० प्रकाश उदय हमरा नाँवें लिखल अपना चिट्ठी में एह महान हिन्दीप्रेमी लोगन के ''हिन्दी के 'खाता' आ 'त्राता' नाँव देले बाड़न सहिये लागल । अपना कुतरक-प्रोपेगेन्डा से एह लोग क बिसूरल देखि हँसियो आवऽता आ रोवाइयो ! पता ना ऊ लोग आ ओह लोगन के पोंछिटा सँभारे वाला लोग हिन्दी के अजान-अनचीन्ह भुतभाँवर से बँचावल चाहत बा कि ओकरे पाछा से लुत्ती लेसि के आगि लगावल चाहत बा । अइसे भाषिक दुराव आ हिन्दी के खण्डित- राष्ट्रवाद का आड़ा, छिपल एह 'खाऊ' बर्चस्व देखावे वाला लोगन के काहें हिन्दी के हितकारी मानल जाव? हिन्दी पूरा देश के जोड़े वाली सम्पर्क भाषा आ राजभाषा हउवे, कवनो एगो खोंढ़िला के भाषा थोरे हवे !कवनो एगो क्षेत्रविशेष के भाषा थोड़े हवे, ऊ त सबसे मिलके, सबसे लेके, सबसे जुड़के आपन बल-बउसाय आ सामरथ बढ़वले बिया । ए भइया लोग, काहें ओके कुतरक का गँड़ासी से टुकी टुकी करे पर लागल बाड़ऽ जा !

संबिधान के अठवीं अनुसूची देश आ देश के भाषा-समाज के सँवारे-सँभारे खातिर हऽ । ओमें राजस्थानी, भोजपुरी के शामिल करे क माँग कइला पर काहें दूनी ए 'हिन्दी बचाओ' मंच वालन का पेटे बत्था आ मरोड़ उठऽता। कहीं कि हिन्दी के खइलका एह लोगन के अपच आ बेगँव कइले बा। ए भाई, हमहन का 'जीये आ जिये दऽ' वाला भोजपुरी-लोक के हईं जा, खाली 'अपने' ना, 'लोको' के कल्यान खातिर रोवे-गावे वाला, सभका जोग-क्षेम क मंगलकामना करे वाला, देश खातिर जीये-मुवे वाला, बुड़बक-बकलोले सही, ठोक-बजाइ के निठोठ बोले वाला भोजपुरिया हईं जा ! भला के अपना भाषा संस्कृति आ लोकपरम्परा के हेठी करे आ ओकरा राही काँट बिछावे वाला के आसनी बिछाई ? भोजपुरिया त असहीं बे बेजाँय कइले, अपना सोझ साफ कड़ेर बोली-बानी बदे बदनाम बाड़े सन।

भोजपुरी जनपदन का लोक के लोहा देश के गुलाम बना के राखे वाला अंगरेजवो मनले बाड़े सऽ! ओकरा प्रतिभा, बल-पौरुख आ पराक्रम के पताका बिदेस ले फहरल, ओकरा कुशलता आ मेहनत -मजूरी से देश क बड़-बड़ महानगर दमकले सऽ । एही भोजपुरिया लोक से राष्ट्रपति निकलले, महामना निकलले, बड़ -बड़ साहित्यकार, रणनीतिकार आ सिद्ध महतमा निकलले। देश खातिर जूझे-मरे वाला बीर बलिदानी निकलले, जवना के गिनती गिनले ना गिनाई । करोड़ों का संख्या वाला ओ भोजपुरियन के एह जनतांत्रिक देश में अपना भाषा खातिर निहोरा-प्राथना करे के पड़त बा।

भइया-बाबू, बहिनी हो, एह भाषा में 'मैं' ना, 'हम' बोलल जाला । 'हम' सहभागी-समूह क बोध करावेला, ओह संस्कृति चेतना के अँजोर देखावेला कि सबका साथे मिल के करे !, मिल के चले ! मिल के खा-पीये! मिल के गावे-बजावे !, उत्सव करे! परब -तिहवार मनावे ! हमहन जोरला में बिश्वास राखीले, तुरला में ना !, सोगहग के उपासना करीले, खण्ड-खण्ड के ना ! तूहूँ बनल रहऽ ! हमहूँ बनल रहीं, हिन्दियो बनल रहे, भोजपुरियो बनल रहे । ई बाँटे- अलगावे वाली राजनीति चाहे जे करे, ओकर मुखौटा उतरे के चाहीं । भाषा के आड़ लेके, भाषा के राजनीति आ मठाधीशी करे वालन क साँच उघारल जरूरी बा ! ••

अशोक द्विवेदी

www.bhojpurisahityangan.com

[संपादक का नाँवें चिट्ठी]

हिन्दी के 'खाता' आ हिन्दी के 'त्राता' से रार पर मनुहार

✍ डा0 प्रकाश उदय

भइया हो, जतने मयगर तूँ भाई, संपादक तूँ ओतने कसाई। लिखे खातिर तहरा दिकदिकवला के मारे असकत से हमार मुहब्बत बेर–बेर बीचे में थउस जाला, बाकिर तवना खातिर तहरा मने ना कवनो मोह ना माया। के जाने कवन कुमुर्खी तहरा घेरले बा कि भोजपुरी के पोंछ तहरा से छुटले नइखे छूटत। हिंदी के अतना मानिन्द– मानिन्द बिदमान लोग नरेटी फार–फार के बतावत बा कि भोजपुरी के बढ़न्ती से हिंदी के बड़ा भारी नुकसान होई तब्बो तहरा होश नइखे होत। हिंदी के नुकसान माने सीधे–सीधे हिंद के नुकसान, अतना त तहरा बुझाते होई! तब्बो तूँ , भोजपुरी में लिखे के के कहो, लिखववावहूँ से बाज नइखऽ आवत।अपने त अपने, हमरो के चाहऽ तारऽ कि ओही में घसेटले रहीं।

जानत बाड़ऽ कि हम हिंदिए के महटरई करींला, ओकरे कमाई खाईला। अइसना में तहरा फेरा में पर के हमहूँ अगर एह भोजपुरिए के बढ़न्ती बतियाइब त अपना हिंदी–बचाओ– भाई–जी–लोग' के भला कवन मुँह देखाइब ! हिन्दी के खा के भोजपुरी के बजाइब त ई भाई जी लोग लागी हमारे के बजावे। गनीमत कहीं कि रामविलास शर्मा इन्हन लोग के उपराये से पहिलहीं सिधार गइल बाड़े । ऊ बेचारू अंग्रेजी के महटरई करत रहन आ हिंदी के बढ़न्ती बतियावत रहन। कवन ठीक कि हिंदी के खा के भोजपुरी के बढ़न्ती बतियवला प पितपिताइल भाई जी लोग कहियो उनुको फँफेली ना पकड़ लिहित कि 'तुम अंग्रेजी का खा के हिन्दी का काहे बजावता है!'

जे जेकर खाय ओकरे बजावे– भाई जी लोग के ई बात हमरा त भइया हो,बड़ा मनभावन लागत बा। एक जना बीएचऊ के हिन्दी के पोरफेसर के भोजपुरी के बात बतियवला प एही भाई जी लोग में से एक जना से उनुका बारे में ई सुने के मिलल कि यह बेशर्म जिस पत्तल में खाता है उसी में छेद कर रहा है । ई सुन के हमरा अइसन जीव त बुझऽ जे अघाइए गइल। राज–रजवाड़ा आ जमींदार जी लोग के ढह–ढिमिला गइला के बाद से एह वजन के बात–बतकही सुने खातिर करेजा खखन गइल रहे।ओंइसे, हिन्दी वाला लोग हिन्दी के खाता– ईहो कवनो ब्रेकिंग न्यूज से कम नइखे । पता लगावे के चाहीं कि अतना–अतना हिन्दिहा लोग अतना–अतना दिन से हिन्दी के खाता, खाते जाता, तब्बो हिन्दी ओरात काहे नइखे! जे खाय में लागल बा ओकरा लगन में कुछ कमी बा कि जवन खवाता तवने में थेथरई कुछ जादे बा! भला कि भाई जी लोग अभी ईहे मान के चलत बा कि हिन्दी के खनिहार लोग हिन्दिए विभागन में पावल जाला। जहिया एह लोग कि ई पता चली कि एह देश के कुछ दोसरो–दोसर लोग दोसरो–दोसर विषय हिन्दिए में पढ़त–पढ़ावत बा,आ अपना विषय के अलावा हिन्दियो के खात बा, त सोचीं, कि भाई जी लोग के कतना मरिचा लागी——च्च्–च्च्–च्च् ।

अइसना में, रउरा भोजपुरी के बात उठा के एह भाई जी लोग के पेट प काहे लात मारे प लागल बानीं? रउरा लाजो नइखे लागत ? इहाँ सब हिन्दी के बचावे में लागल बानीं त काहे खातिर, खाहीं खातिर न? रउरा से केहू के खाइलो–पीयल नइखे देखल जात ? रउरा त एह बात के गुमान होखे के चाहीं कि इहाँ सब एके साथे हिन्दी के 'खाता' आ 'त्राता' दूनो के भूमिका निबाह रहल बानीं । ई कवनो मामूली बात बा जी? जवन हिंदी अपना बले सँउसे हिन्दुस्तान के एकवट के अंग्रेजन के भगा भेजलस तवना हिंदी के भाई जी लोग बचावे के बेंवत राखत बा! त रउआ मान लेबे के चाहीं कि ई बेंवत धुर्की–धूर–कट्ठा वाला ना ह,एकर बिगहन बिस्तार बा।

सँउसे देश के, गुजराती के गांधी जी आ बंगला के सुभाष बाबू आ असहीं जाने कवना–कवना भाषा के कतने–कतने विभूतियन के एक भाषा–बल बन के, आजादी के लड़ाई के जवन हिन्दी हिन्दुस्तान के जन–गण–मन से जोड़ देलस तवना हिंदी के एह प्रबल प्रताप के जवन भाई जी लोग कवनो गिनती में

www.bhojpurisahityangan.com

नइखे राखत,ओकरा के अतना दीन–हीन बतावत बा कि भाई जी लोग ना आपन अलम देबे, ना सहारा देबे त भहरा के गिर परे, तवना भाई जी लोग के घनघमण्ड के घनघनहट से हम त भइया हो, थरथरहट में परल बानीं आ चाहत बानीं कि तूहूँ थरथरा। जे एह हिन्दी के भोजपुरी से डेरवावत बा, मैथिली आ मगही आ अवधी आ छत्तीसगढ़ी आ बघेली आ मेवाती आ अउर–अउर से डेरवावत बा आ मान लेत बा कि एह डेरववला से हिन्दी डेरा जाई ओकरा एह हिम्मत से ना, त कम से कम, ओकरा एह हेहरई से, एह थेथरई से त तहरा थरथराहीं के चाहीं।

हमरा पता बा कि भाई जी लोग के बल–बेंवत प जतना हमरा भरोसा बा ओतना तहरा नइखे । तूँ त जइसे ओकर मुँह थूर देल चाहेलऽ जे अपना भगवान के रछेया खातिर कवनो मींया के भा अपना खुदा के हिफाजत खातिर कवनो हिन्दू के कपार फोर देबे खातिर तइयार होला,कि ऊ ना बचइहें तोरा के त तें का बचइबे रे उनुका के, ओसहीं, हमरा पता बा कि हिन्दियो के बचावे के बात करे वालन खातिर तहरा लगे लबदा–लाठी छोड़ के कुछ आउर बा ना, कि हिन्दी ना बचाई तोरा के त तें का बचइबे रे हिन्दी के। बाकिर हम त ईहे कहब कि भइया हो, तहरा हमरा भाई जी लोग के समरथ के कवनो खबर नइखे। खिसिया मत त हम तनी कोशिश करीं तहरा के समझावे के । देखऽ, भाई जी लोग के सकत के दूगो छोर बा,एगो त हिन्दी के 'खाता' वाला आ दुसरका हिन्दी के 'त्राता' वाला। पहिलका वाला के महिमा कि हिन्दी जवना के हिन्दी प्रदेश कहल जाला तवना में अतना खवा चुकल बा कि एक ओर अंग्रेजी इस्कूलन के बाढ़ बढ़ियाइले जाता आ दुसरका ओर हिन्दी से बीए–एम्मे करे वालन के परीक्षा के उत्तर–पुस्तिका उठा के देख लीं, रुपया में बारह आना में जवन भाषा पढ़े के मिली ओमें जहाँ मन तहाँ से, जइसे मन तइसे, जियते नोच–बकोट के खइला–खवइला के अनगिनत निशान मिल जाई।

ई नोचन–बकोटन चलत रहो तवना खातिर जरूरी बा कि हिन्दी के एह भोजपुरी, मैथिली, मगही, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, ब्रजी, कौरवी, हरियाणवी, बुंदेली, कन्नौजी, मारवाड़ी, जयपुरिया, मेवाती, मालवी, कुमाउनी, गढ़वाली, निमाड़ी के इलाका से छूट–छटक के बहरी मत निकले दियाव, देश भर में मत पसरे दियाव। हिंदी यू पी,बिहार, एम पी,राजस्थान वगैरह के मिला–जुला के बनल कवनो एगो प्रदेश के भाषा ना ह,ई सँउसे देश के भाषा ह आ एह नाते एह हिन्दी प खलिसा भोजपुरियने के दावा नइखे, जतना दावा भोजपुरियन के बा ओकरा से जरिको कम भा बेसी बंगला भा पंजाबी भा मलयाली बोले वालन के नइखे–– ई बात भइया हो तूहीं सोच के देखऽ कि हिन्दी के जे नोच–चोंथ के खाए–चबावे में आ एगुड़े एही परोजन से बचावे में लागल बा ओकरा कइसे सोहाई, कइसे सहाई! आ भाई जी लोग के ई जवन सु–भाव, सु–बिचार बा कि हिन्दी के एही भोजपुरियादिक इलाका में बान्ह के राखल जाय तवन तब्बे ताड़ प चढ़े पाई जब ई भोजपुरियादिक भाषा लोग लुकाइल रही,आपन मुँह ना उठाई, संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के नाम ना लीही।

रउरा से हमार दूनो हाथ दसो नोह जोड़ के अरज बा, निहोरा बा कि हमरा एह हिन्दी–बचाओ–छाप–भाई जिउअन के महामहान मन–भावन के समझीं, हिन्दी के देश भर में बँउड़ियाय से बचा के लरही में बान्ह के घरहीं में राखल ई लोग चाहत बा त रउआ एह लोग के ओह लोग के बरोबर मयगर मानीं जे चिरई के अपना पिंजड़ा में बान्ह के बुला एसे राखेला कि खुला आकाश में उड़ला प जान के खतरा बा। अंत में ईहो कहब कि हिंदी के 'खाता' बनल रहे खातिर ओकर 'त्राता' बने के नाम प भाई जी लोग भोजपुरी प जवन तरनाता तवना के पापी पेट के आग के राग मान के उहाँ सब के अतमा के शान्ति खातिर भोजपुरी के बात आ भोजपुरी में बात के बात कुछ हजार साल नाहिंए बतियावल जाय त का हरज! नाहीं...कहे के माने कि तनी सोचे के त चहबे करी... ••

हिन्दी विभाग, श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज,
बड़ागाँव, वाराणसी

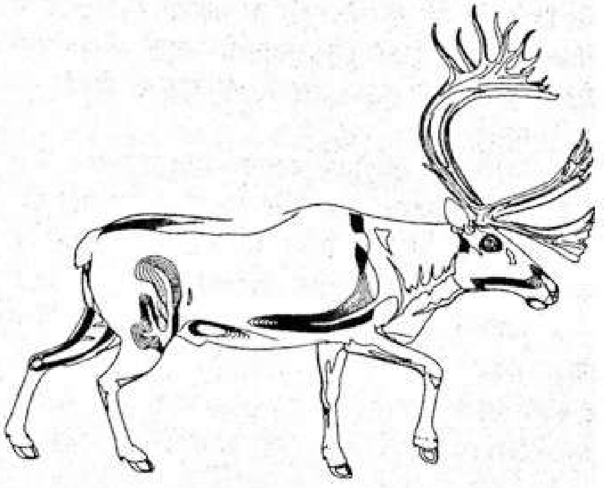

www.bhojpurisahityangan.com

सौरभ पाण्डेय के दू गो गीत

(एक) मेह घिरल बा

मेह घिरल बा
बाकिर मन के ओद करी का ?

झीहीं-झींहीं
फाहा-फाहा
एक फजीरे से नभ सरिसे
बात-बात में
आह अउँटते
कोर आँख के जइसे बरिसे
सिसम-सिसम के आगि हिया में
तबहूँ दँवके,
हूलि हरी का ?

मन के खेते
क्यारी-क्यारी
मोथा-जंगल घास अँटल बा
बाकिर मनहीं जोरत-जारत
दिन बीतल बा,
रात कटल बा
आस सिराइल दरद दाबि के
पूछे,
होखी एह घरी का ?

(दू) फेर भइल बा चाक्का जाम

फेर भइल बा चाक्का-जाम
दलित-गरीबन के उकसावत !

बचवन के मन में छटपट्टी
कोरा आँखिन में अचकच बा
बूढ़ आँखि के सोझा एने
बिला गइल, झुठहीं मचमच बा
दिल्ली वाली अधबुढ़िया के
चाल-चलन बड़ुए भरमावत !

बही-कलम ना पँजरे आइल
आखर-भँइसी एक बरोबर
तवना पऽ ऊ जीयसटी के
तान चढ़ावे बुढ़वा दोबर
पाना पऽ दाना जे पावे
उन्हनीं के चलते बहकावत !

••

एम-२/ ए-१७, ए.डी.ए. कॉलोनी,
नैनी, इलाहाबाद -२११००८
संपर्क - 9919889911

www.bhojpurisahityangan.com

कमलेश राय के दू गो गीत

(एक)

सूरज से पहिले अंगना में
उतरे सोनपरी
सोनचिरइया चारा चूँगें
चहके घरी-घरी।

पुरुबी छोर लाल चूनर सजि
बांटे रंग-रंगोली
दुलहिन भोर फांड़ भरि भरिके
छिरके अच्छत रोली
पिजरें सुआ हिरामन बोले
शिव-शिव हरी-हरी।

झुर-झुर बहत बयार लगे जस
राग पराती गावे
पंखुरिन-पंखुरिन बिछल ओस-कन
मोतियन थार लुटावे
बून-बून बिखरल लागे जस
दूध भरल गगरी।

कंचन-कलस ढरल अम्बर से
रंग पीत पसरल
छिटकल नया उछाह चहूँदिसि
सगुन गीत पसरल
भोर भइल धरती ओढ़ेले
हेमबरन चुनरी।

(दू)

हिया-हिया में प्रीति जगावत
सावन आइल
अधरन-अधरन गीत जगावत
सावन आइल।

झिर-झिर झरत फुहार गगन से
मन-परान भींजे
घर भीजें आँगन भींजे सगरी
सिवान भीजें
असरा औ परतीत जगावत
सावन आइल।

मेंहदी हाथ रचाके केहू
पिय कऽ राह निहारे
लेके दरपन हाथ केहू
पिय खातिर रूप संवारे
सूतल मन कऽ मीत जगावत
सावन आइल।

जागल भाग जरत धरती कऽ
अँचरें चमकत पानी
तिल-तिल बढ़त हरियरी चहुंदिसि
जौ-जौ बढ़त किसानी
घर-घर श्रम-संगीत जगावत
सावन आइल।

कजरी कहीं, गीत रोपनी कऽ
मेघ-मल्हार कहीं
अगर धूप अच्छत-चन्नन संग
मंगल थार कहीं
सगरो सगुन सुरीति जगावत
सावन आइल। ••

मऊनाथ भंजन-मऊ,

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरिया समाज : कब बदली तेवर

भगवती प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरिया समाज शुरूए से कबो ना थाकेवाली मेहनत, जीवटता, संघर्षशीलता, अपना दम – खम आउर बल – बेंवत का बदउलत मनमाफिक मुकाम हासिल करे खातिर जानल जाला। 'कर बहियाँ–बल आपनो, छाड़ि बिरानी आस' इहवाँ के मनई के मूल मंतर रहल बा। तबे नू, खाली देसे में ना, बलुक विदेसो में गिरमिटिया मजूर बनाके जवना लोगन के भेजल गइल, उहे लोग उहाँ के झाड़–झंखाड़, ऊसर – बंजर आ बिरानी के खून – पसेना के गमक से, लहलहात हरियाली – खुशहाली से लबालब भरि दिहल आउर तमाम तरह के साँसत सहत ना सिरिफ आपन पहिचान बरकरार राखल, बलुक उहाँ के सभसे बड़हन पद – पदवियो पावे में कामयाब भइल। किछु लोग इहो कहेला कि भोजपुरियन के लाठी आ लंठई मशहूर हऽ। बाकिर इहो सोरह आना साँच बा कि एकर इस्तेमाल ऊ दबदबा कायम करे में ना, देश समाज के हक में क्रान्ति के बिगुल बजावे बदे करत आइल बाड़न। राष्ट्र के आजादी में भोजपुरियन के तेयाग – बलिदान आ सभ किछु होम करें के दियानत के कइसे भुलाइल जा सकत बा! कोई बड़ – छोट कहत अपराधू! हे ओजह रहे जे देस के आजाद होखे का पलिहीं आरा आ बलिया जिला आजादी के जसन मना चुकल रहें। जन – जन के जगावे आ देश – प्रेम के भाव भरे में रघुबीर नारायण के 'बटोहिया' गीत – 'सुन्दर सुभूनि भइया भारत के देसवा से, मोर प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया' अगहर आ ऐतिहासिक भूमिका निभवले रहे। दोसरकी अजादी दिअवावे में अगुवाई करे वाला जयप्रकाश नारायण के लोकनायकत्व सऊँसे संसार में चरचा में रहे। सबसे पहिले दलित समाज के दयनीयता के तसबीर उकेरे में हीरा डोम के कविता 'एगो अछूत के शिकायत' कबो बिसरावल ना जा सके।

बाकिर एकइसवीं सदी के भूमण्डलीकृत बाजारवादी दौर में भोजपुरिया समाज के तेवर तब्दील हो रहल बा, सोच के दिशा, विकास के नाप – जोख के पैमाना बदल रहल बा। 'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी' वाला सवाल आजु आत्ममंथन खातिर अलचार करल बा। प्रश्न इहो बा, वर्तमान बदलाव कतना सकारात्मक बा आ कतना नकारात्मक? पहिले एक तथ के पड़ताल जरूरी बुझात बा कि पिछिलका बीसवीं सदी में भोजपुरिया समाज के दशा आ दिशा का रहे?

बाबा साहेब डॉ0 भीमराव आंबेडकर के कहनाम रहे कि 'हम कवनो समाज के तरक्की ओह समुदाय के औरतन के तरक्की से नापेलीं।'' आई देखल जाउ जे ओह घरी भोजपुरिया समाज में मेहरारून के का हाल रहे। सैतालीस ले, ओने देस गुलामी के बेड़ी में जकड़न रहे, एने मेहरारू पुरुष प्रधान समाज में त्रासद आ दयनीय जिनिगी जीए खातिर मजबूर रहली। ताजिनिगी नारी के हैसियत बाजार के माल आ बेजान चीजु – बतुस से अधिका किछु ना रहे। जनमे से ओह लोग का संगे सौतेला बेवहार कइल जात रहे। होश सम्हारते लइकी के चूल्हा – चउका का घरेलू काम – काज में अझुरा दिहल जात रहे। बाल विवाह के रिवाज रहे आ अक्सरहाँ मजबूरी में, कमसिन किशोरी के कवनो बूढ़ मरद के हाथ में सउँपि के महतारी – बाप चैन के साँस लेत रहलन। बेटी बेचिके धन कमाए के चलनो रहे आ धन के बदउलत बूढ़– अपाहिज पुरुष कवनो सुकवार कनिया के अर्धांगिनी बना के खुद के गौरवान्वित महसूसत रहलन। नतीजतन, बूढ़ मरद त किछुए दिन में परलोक सिधारि जात रहलन, बाकिर ताजिनिगी रोवल – कलपल बेचारी बेबा के नियति बनि जात रहे। अगर विधुर के मरजी होखे, त ऊ कई बेर बियाह करि सकत रहे, बाकिर विधवा – बियाह पर सख्त पाबन्दी रहे। त्रिशंकु – अस बेवा के जिनिगी ओह कुकुर नियर होत रहे, जवन ना घर के होला, ना घाट के। ना ससुरा में जगह, ना नैहरें में। बियाह – गवना कराके नवकी दुलहिन के गाँवें में छोड़ि के पति रोजी – रोटी के फिकिर में नगर – महानगर में निकल जात रहें आ कबों – कबों उहँवें दोसर बियाहों रचा लेत रहें। एह तरी जायज आ जारज दूगो बियाहता नारकीय जिनिगी जीए खातिर बेबस हो जात रहली। ओने गाँव में मरद के इंतजार करत मेहरारू बड़मुँहवा लोगन के हवस के शिकारो हो जात रहे। कुल्हि मिलाके, नारी के जीवन के पर्याय बनि के रहि गइल रहे। ओहू पर तुर्रा ई कि बेटा भइला पर खुशहाली में नाच – सोहर के इन्द्रधनुषी आलम, बाकिर बेटी के जनमते विपदा के मातमी लहर। मरदन के खाए – कमाए के अनगिनत राह, बाकिर परदा में खूँटा में बन्हाइल गाय–अस स्त्री खातिर सभ केवाड़ बन्न। ओही समाज के चित्रित करत भिखारी ठाकुर 'बिदेसिया' नाटक के सिरिजना कइलन

www.bhojpurisahityangan.com

आ महापंडित राहुल सांकृत्यापन 'मेहरारून के दुरदसा' के नाटक में राहुल बाबा के गीत झकझोरि के राखि देले रहे –

ओह घरी के गँवई भोजपुरिया समाज में अशिक्षा के बोलबाला रहे। शराब के, नशाखोरी के लत परिवारवालन के तबाह कके ध देले रहे। पहिले जमीदारन के, आगा चलि के सामंती दमन – चक्र आ दलित वर्ग के उत्पीड़न। तीरथ – बरत, मेला, गंगा नहान में अबला के आबरू का सँगे खेलवाड़। कुल्हि मिलके, सामाजिक कुरीति आ अंधविश्वास के शिकार भोजपुरिया समाज।

आजु के समकालीन भोजपुरिया समाज का ढाँचा आ बात–व्यवहार में किसिम – किसिम के बदलाव नजर आवत बा। अशिक्षा आ सेहत पर किछु हद ले कामयाबी हासिल भइल बा। लड़किनियों के पढ़ाई लिखाई पर लोग फिकिरमंद भइल बा, बाकिर तिलक – दहेज के मोट रकम उगाहे खातिर बेटा के बिक्री बदस्तूर जारी बा। नारी सशक्तीकरण के दिसाईं लरिकी परदा के बहरी आके आपन मुकामो हासिल करि रहल बाड़ी स, पुरूष प्रधान समाज के नजरिया में कवनों बदलाव नजर नइखे आवत। इहे कारन बा कि भोजपुरिया समाज के अनगिनत हुनरमंद 'दामिनी' समाज के दरिंदन के सामूहिक दुष्कर्म के शिकार हो रहल बाड़ी स। ना त नारी के प्रति सम्मान के भाव लउकते बा, ना बड़ – बुजुर्ग खातिर। नाप जोख के तरजूई धन दउलत हो गइल बा आ एही 'अर्थ खातिर मए अनर्थ हो रहल बा। सामूहिकता आ सामाजिकता के भाव के खतम हो जा रहल बा आउर संयुक्त परिवार एकल परिवार में विघटित हो चुकल बा। सामाजिक – सांस्कृतिक – नैतिक – राजनैतिक मूल्य छरित हो रहल बाड़न स आ ईमानदारी – सच्चाई नियर अच्छाइयन पर तरह – तरह के बुराई हावी हो रहल बाड़ी स। सादा जीवन, उच्च विचार कि कवनो मोल नइखे रहि गइल। समरथ लोग दबंगई पर उतरि आइल बा आ उदारता का जगहा सवारथ, आडम्बर, देखावा जिनिगी के मकसद बनि गइल बा। तबे नू, अपना माई आ महतारी भाषा खातिर ऊ नेह – छोह आ सगरपन नइखे झलकत। नतीजनत, लमहर समय से "भोजपुरी" के आठवी अनुसूची में शामिल होखे खातिर बाट जोहे के परि रहल बा।

समकालीन भोजपुरिया समाज के बदलत तेवर कई गो सवाल खड़ा करत बा। विकास आ समृद्धि का सँगें आखिर ओकर मानवीय चेहरा कब शामिल होई? अपना हक – समरथ का साथे सामाजिक हक – हुकूम खातिर हमनी के कब आगा आइब जा? अपना महतारी भाषा खातिर कब सही मानें में नेह–छोह के भाव जागी? का भोजपुरिया बेटी दामिनी जइसन लड़किन के बलिदान अकारथ जाई? आखिर नारी–शिक्षा, सशक्तीकरण का सँगहीं समाज नारी का प्रति सम्मान के भाव, समानता के भाव कब अंगीकार करी? का लोक आ सामूहिकता से कटि के भोजपुरिया मनई कबो सच्चा सुख आ अमन चैन हासिल क पाई? आखिर कब भोजपुरिया समाज सामाजिक समरसता मानवीयता आ प्रगतिशील सोच के जियतार दरपन बनि पाई? फिलिम आ गायकी के जरिए भोजपुरी के नाँव पर भासाई घालमेल, फूहड़ता आ अश्लीलता परोसे वालन के खिलाफ भोजपुरिया समाज कब अपना सजगता के परिचय दी?

आजु भोजपुरिया समाज के एह सवालन पर, बदलाव पर बदलाव खातिर सोचे – विचारे, चिंतन, आत्ममंथन करे के समय आ गइल बा। नींन तूरीं आ एक – दोसरा के जगावे के दिसाईं रचनात्मक पहल करीं। अपना व्यवहार आ आचरन से एह समाज के ऊँचा स्थान दियावे में जोगदान दीं। ••

शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीणपुर,
पोस्ट बॉक्स ११५, पटना

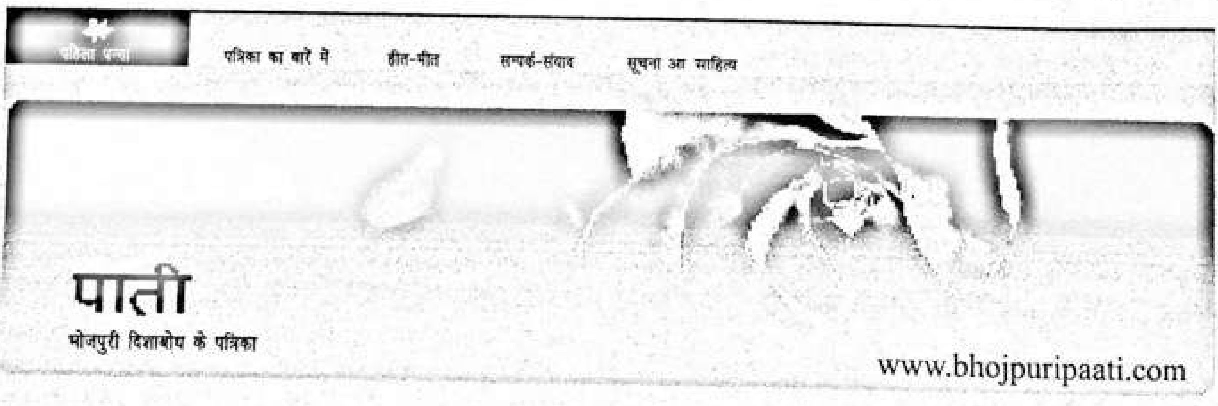

www.bhojpurisahityangan.com

रचनात्मक आन्दोलन के लौ भोजपुरी भासा के हर दौर में बरल बा

✍ सौरभ पाण्डेय

भोजपुरी के भासाई तागत भर ना, बलुक एकर आजु ले बनल रहला के तागत प केहू निकहे से सोचे लागो आ अंदाजे लागो, त ऊ एह बात प ढेर अचकचाई जे ई भासा कतना काबिल, आ कतना लोचगर भासा हऽ ! भासा के तौर प भोजपुरी लोचगर बिया तबे ई आजुओ ले बनल बिया। एह कहनाम से एइजा दू बात जाहिर होता। एक, जे ई निकहा पुरान भासाई परम्परा के जियत–सम्हारत भासा हऽ। दोसर, एह भासा के जीवनी–शक्ती निकहा दमगर बिया। ई भासा कइसन बोलनिहारन के भासा हऽ, ई भोजपुरिहा समाज के भा एह जवार–समाज से बहरी जाई के बसल भोजपुरिहा मनई लोगन के जियत देखि के बूझल जा सकेला।

इस्थिती आ परिस्थिती चाहें कतनो मुकाबिल ठाढ़ काँहें ना होखो, भा अनसुना बेवहार करत होखो, एगो भोजपुरिहा कतनो प जी के, आ आगा देखबि, त ओही में निकहे रहि के, आ फेरु ओह इस्थिती–परिस्थिती प जीत के देखा देही। जौन ऊ अपना जिनिगिये में ना जीत सकल, त ओकर पूता भा ओकर पोता ओह इस्थिती–परिस्थिती में जीति के देखा दीहें। ई होला जियत मनस के मनई के तागत। इयाद पारल जाव मारिशस, गुयाना, सुरीनाम अइसन देसन के। भोजपुरिहा पूता–पोता लोग ओह देसन के सरकारी बिधी–बिधान के अनुसार राजा भइल बा लोग। जिये के लकम मन में बसवले कुली, हमाली आ मजूरी करत बाप–दादा–परदादा के पूता–पोता लोग आजु ओह समाजन के, ओह देसन के सामाजिक, सांस्कारिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, बैचारिक, अने सभ तरहा के पहलुअन प आपन गहिर छाप छोड़त ओजुगा के मालिक–मुख्तार, गुप्ता–गुप्तार आ साहेब–सरकार भइल बा लोग। आ अपनो देस नइखे भुलाए के। एगो औसत भोजपुरिहा अजादी के साठ–पैंसठ बरिस बादो जवन परिस्थिती में जियेला, ऊ अछछ गरीबी कहाले। बाकिर जवना ढङ से ऊ परिवार सम्हारत अपना जियते भर बनल रहेला, ऊ ओकर कतनो पर जी जाए के तागते कहाई। ई कइसे होला ? भा ई कइसे होत आ रहल बा ? भोजपुरिहा मनई के ई तागत मिलेला ओकरा आपन जमीनी संस्कार से। एही संस्कार आ बेवहार के ढोअनहार ओकर भासा होले। आ भोजपुरिहा के आपन माईबोली ओकरा जिये के भरोसवे भर ले ना देले, बलुक मनई के निकहे चेतावत, ओकरा मन में भरोसा बइठावत जिये आ बनल रहे के बिधी–सुधी सिखावेले। ई हऽ तागत, संस्कार के सान प चढ़ल कवनो जियत भासा के ! कवनो जियत भासा के बनावट आ बुनावट बूझे के कोरसिस करीं जा, जान जाइब जा, जे भासा के अस्तर प लोचगर भइल का कहाला ! एक से एक भाव खातिर शब्दन के गठन मिलि जाई। कारन, जे भोजपुरी एगो भासा के तौर प निठाह जीवन जियत लोक–समाज–परिवार के सङे–सङे बेक्तीगतो भाव के बोल के बतावे में बिसवास करेले। ई बोलिये अइसन हऽ। जतना पर्यायवाची शब्द भोजपुरी में बड़ुए, ओतना संसार के आउर कवनो भासा में होखी, संदेहे बा।

भोजपुरी भासा के इतिहास के ढेर लोग आपन–आपना ढङ से सोधले बा। बाकिर, ई सभे एकमत होई, जे पाली भासा के बाद भारतीय भूखण्ड में एकर सोरि अवहट्ट भा अप्रभंस के समै तक चहुँप जाले। जहँवाँ से एह भासा के जीवनी–शक्ती खातिर खाद–पानी मिलत आ रहल बा। एही अप्रभंस भासा के भरत मुनी (विक्रम तीसर सदी) 'देसभासा' कहसु। एह बिन्दू प आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहत बाड़े – 'वररूची के 'प्राकृतप्रकास' में अप्रभंस भा अवहट्ट के कतहीं नाँव नइखे।' एही सुर में शुक्लजी आगा बतावत लउकत बानीं – 'बाण अपना 'हर्ष चरित' में संस्कृत कवियन के सङे–सङे भासा के कवियनो के चर्चा कइले बाड़े।' ई कवन भासा हऽ ? ईहे हऽ भोजपुरी के आदि सरूप। तबके परभाव आ भाव–शब्द जियत–अपनावत भोजपुरी आपन रूप धरत गइल बिया।

बौद्धधर्म के जब फाड़ होखल सुरु भइल त एकर एक रूप वज्रयान नाँव से देस के पुरबी भाग में फइलल। एह संप्रदाय के कर्मकाण्ड के लेके तबके समाज में भयंकर हँड़भङ मचल रहे। खैर, एह प चर्चा नइखे करे के। एही सम्प्रदाय में चौरासी सिद्ध भा जोगी लोगन के उठान भइल मनाइल बा। हमार धेयान ओही लोगन आ उनका सदी–शताब्दी में समाज के भासा प बा। कुछ सिद्धन भा जोगियन के रचना त अवहट्ट के खालिस सरूप में भइल करे, बाकिर ढेर जोगी लोगन के पद–रचना ओही 'देसीभासा' में भइल करे जवन तबे आजु के पूर्वांचल आ बिहार के पच्छिम–दक्खिन

www.bhojpurisahityangan.com

में बोलल जाय। जोगी लोग आपन संदेसा आ आपन मत के 'रहस्यवाद' के बिन्दू लोगन के बीचे फैलावत रहले, त ऊ आपन बात राखे खातिर आपन भासा ऊहे राखसु जवन तब एह क्षेत्र के आम भासा रहे। सरहपा, जिनकर जीवनकाल 690 बि०स० मानल जाला, के पद के नमूना प धेयान दिहल सही होखी।

जेहि मन पवन न संचरई, रवि–ससि नहीं पवेस।
तहि बट चित्त बिसाम करू, सरेह कहिअ उवेस ।।
घोर अधारे चंदमनी, जिमि उज्जोअ करेइ ।
परम महासुह एखु कने, दुरिअ असेस हरेइ ।।

ओही लगले सिद्ध कण्डहपा जोगी के साधना खातिर एगो डोमिन के अवाहन देखल जाव –

गंगा जँउना माझे रे बहई नाइ।
ताहि बुड़िलि मातंगि पोइआ, लीले पार कराइ ।।
बाहतु डोंबी, बाहलो डोंबी, बाट त भइल उछारा।
सदगुरु पावे पऽए जाइब, पुणु जिणउआरा ।।

ई डोमिन भा ब्राह्मणेतर जाती के भा नीच कहाए वाली जतियन के मेहररुअन के साधना में का जोगदान आ जरूरत भइल करे, ई कूल्हि एह आलेख के सीमा से बहरी के बिन्दू बाड़न सऽ। एही लगले 990 बि०सं० के बाद कुक्कुरिपा के एगो रचना देखीं जा –

ससुरी नींद गइल, बहुड़ी जागऽ । कानेट चोर निलका गइ मांगऽ ।।

दिवसइ बहुणि काढइ डरे भाऽ । रति भइले कामरू जाऽ ।।

एह सिद्ध जोगी लोगन के रचना भा जनता के बीच उपदेसन के भासा ऊहे भासा रहे जवना के भरत मुनी 'देसभासा' कहले बाड़न। आगा चलके एही भासा के नाथ सम्प्रदाय के पुरबिया जोगी लोग अपनवलस। धेयान से देखला प ई कइसे ना कहाउ जे ईहे भोजपुरी प्रोटोटाइप सरूप रहे ? भा, ई कइसे ना कहाउ, जे एह भासा में पूर्वांचल के लोक–भासा के शब्दन भा भासा–बिन्यास के अस्थान नइखे मिलल ? एह बात प एगो बात अउरी साफ भइल बा, जे ओह घरी के ढेर जोगी लोगन के उपदेस खातिर अपनावल गइल भासा आ गीत वाली भासा में फरक भइल करे। ईहे, भा अइसने फरक कबीर तक के रचना में लउकेला। कबीर के पद भा गीत–रचना पुरबी भासा में भइल करे – 'मन ना रङावे, रङावे जोगी कपरा !' कबीर के साखी आ रमैनी के भासा पुरबिये भासा बिया। ई पुरबिया भासा अउरी कुछऊ ना, साफ–साफ देखल–बूझल जाव, त भोजपुरिये के पुरान सरूप के तौर प लउकी।

कहे के माने ई, जे भोजपुरी के मौजूदगी आ भासाई दसा लमहर समै से चलल आ रहल बा। एकर निठाह होसगर–जागल साहित्य गते–गते समृद्ध भइल बा। ई भासा तबके समै से लेके आजु ले एक बरोबर बहत आवऽतिया। हतना लमहर काल आ वाचिक परम्परा के बेवहार से भोजपुरी में भाव के अनुसार किसिम–किसिम के शब्द अपनावे आ गढ़े के तागत आ उदारता दूनो बढ़त गइल। चूँकी भोजपुरी के नेंव तबके ओह 'देसीभासा' के सरूप में बड़ुए जेकर सोरि मागधी से रस पावत लउके। ईहे मागधी आगा चलि के अर्द्धमागधी के सरूप धइलस। भोजपुरी के सुरुआत एही ढङ से भइल बा। देस–समाज में ढेर कूल्हि ऊँच–नीच, नीमन–बाउर देखत–भोगत ई भासा बनल आ रहल बिया। ईहे लोचगर भासा के निसानी हऽ। भासा के तौर प भोजपुरी लोचगर रहे, तबहीं नू ई आजुले जियत बिया ! आजु कतना अइसन राज्याश्रय से वंचित भासा कूल्हि बाड़ी सऽ जवना के अइसन लमहर इतिहास बड़ुए ? आ, जे व्याकरण के सान प चढ़ल अपना समृद्ध बुनावट आ निकहा लमहर परम्परा के बनवले चलल आ रहल बिया ? साँचहूँ सोचे के परी। भासा के ईहे बिसेसता ओकरा बोले वालन के प्रवृती आ बिसेसता बनि जाले। ईहे कारन बा जे भोजपुरिहा जहँवाँ गइले आपन वर्चस्व बनाइ के रहले। ना ई भासा मूअल, ना लोग थहरइले।

अब एह प सवाल उठऽता, जे एह कूल्हि में हिंदी कहँवाँ रहे ? हिंदी भासा के तब ना लिपी रहे, आ ना व्याकरण रहे। ना कवनो मानल क्षेत्र रहे। हिंदी खातिर खलसा भाव रहे। ओकरा में व्यापक भासा बन जाये के संभावना रहे। बलुक एही प लोगन के धेयान बनल रहित। आजु जे 'हिंदी–हितैषी' लोग भोजपुरी के लिपी आ व्याकरण प सवाल करत टंटा खड़ा कर रहल बा, खलसा सइ–सवा सइ बरिस पहिले हिंदी के गती काहें नइखे देखत लोग ? तब त भोजपुरी के लिपियो रहे आ व्याकरण त रहबे कइल। का बे व्याकरने के एह भासा में रचना होत रहे, साहित्य लिखात रहे ? आ, ई भासा अतवत बड़हन क्षेत्र में फइलल रहे ? एह सवालन से आँखि चोरावल कुतर्के के जनम दीही। एही से हिंदी के बिकास के लेके अनेरिया के कुतर्क हो रहल बा। लोग सही सवालन से आँखि चोरा रहल बाड़े।

हिंदी के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अद्भुत जोगदान रहल बा। एह बात से कवनो केहू के संदेह केने बा ? एकर भाव सभ पुरोधा लोग आ देस स्तर के नेता लोग मनले बा। बिसेस क के अ–हिंदी भासा–भासी पुरोधा

www.bhojpurisahityangan.com

आ नेता एकर भाव मनले बाड़े। बाकिर, एह हिंदी के कहँवाँ त अंगरेजी के हटावत संपर्क भासा के तौर पर बढ़ावल जाइत, एकरा माईभासा के नाँव देबे के बेकूफी चल निकलल। जवना जमीन, परंपरा आ भासा से हिंदी के खाद–पानी मिलत आवऽता, ओही जमीन, परंपरा आ भासा प खन्ती चले लागल। बिद्वान लोग एगो पुरान पोढ़ भासा के हँहखा के जनमल भासा हिंदी के बोली, सहयोगी आ जाने का–का बतावत गाल करे लगले। ई गाल कइल अब हिंदिये पर भारी पर रहल बा। एह गलती के जतना हाल्दे से दुरुस्त क लियाव, नीमन रही। भोजपुरी खातिर त नीमन होइबे करी, हिंदियो खातिर नीमन होई। झूठ के मुलम्मा प भासा के, के कहे, कुछऊ के उत्थान ना होखे। हिंदी भोजपुरिहा क्षेत्र के माईभासा हऽ, एह कहनाम से जतना हाल्दे निजात पा लियाव, ओतने नीमन रही।

बाकिर ईहो ओतने साँच बा, जे अब खलसा पुरनके के गावत–पीटत रहला से भोजपुरी के भलाई नइखे होखे के। कारन ई, जे ई भासा ढेर नीमन–बाउर दौर से गुजरत आपन दसा प निकहा नजर चाहत बिया। रचनात्मकता आ लेखकन के रचनाधर्मिता के लेके कतना तरह के मत–मंतव्य बनत रहल बा। बाकिर पाछिल पचास–साठ बरिस में भोजपुरी मेहरारू, अँगना आ रसोई के भासा भर बनिके रहि गइल बिया। एकर व्यावसायिक दम ओह तरी टाँठ नइखे, जइसन कबो भइल करे। तवना प स्वतंत्रता मिलला के कुछ पहिले से लेके स्वतंत्रता मिल गइला के बाद ले हिंदी के उत्थान के फेरा में भोजपुरिहा बेटा–पूता लोग एक सीमा से बहिरी जाइ के हिंदी के बनावे में आपन जोगदान देले बा। एह जोगदान के बड़हन फाएदा हिंदी के मिलल बा।

ई पहिलहीं से जानकारी बा, जे सुरुआती हिंदी आ पुरनकी भोजपुरी के बिकास एकही भासा–रूप के गरभ से नइखे भइल। बाकिर ईहो साँच बा, जे हिंदी में भोजपुरी के शब्दन के (देसज शब्द) अउलाह प्रयोग भइल बा। शब्दन के अइसन आवाजाही कवनो भासा के अनुभासा साबित ना कऽ सके। जबकि हिंदी के बात करेवाला आ भोजपुरी के बिरोध करे वाला लोगन के एगो छोट जमात एही आधार प बलाते भोजपुरी के हिंदी के अनुभाग भा बोली जतावे में लागल बा। एह अतार्किक सोच के सुरुआत आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी से सुरु भइल आ डॉ० रामबिलोचन शर्मा के समै तक आवत–आवत पकठा गइल। हिंदी के पौढ़ आ पुरान साबित करे के फेरा में अइसन बिद्वान लोगन के उत्साह आंचलिक भासा कूल्हि के संकट के कारन बनि गइल। आ आजु, ओही लकीर के पीटि–पीटि के नारा बनावल जा रहल बा, जे भोजपुरी हिंदी के बोली हऽ। जबकि एह बात के केनियो से साबित ना कइल जा सके। हिंदी के महावीर प्रसाद द्विवेदी ना मिलल रहिते, त हिंदी के पद्य प्रवाह में भासाई पोढ़पन के आवे में अबहीं पाँच–सात जुग अउरी लागल रहित। हिंदी ब्रज भासा भा भोजपुरी भासा के कान्हे आपन राहता तय करत फिरित। खैर, जवन भइल तवन भइल। एह गलत बात के, जे भोजपुरी हिंदी के बोली हऽ, हर–हमेसा पुरजोर ढङ से नकारल जरूरी बा। आ पूरा गर्व आ गुमान से भोजपुरी भासा के प्रयोग करे के बा। हिंदी के बिकास में भोजपुरी भासा के जवन शब्दन के प्रयोग भइल बा, ऊ भोजपुरी भासा के गहराई आ समृद्धी के नमूना हऽ। बाकिर एह गर्व आ गुमान में हिंदी भासा के बिरोध नइखे करेके। हमनी के हिंदी से ना कबो बिगाड़ रहल बा, आ ना बिगाड़ होखी। जे, जइसन बिगाड़ हिंदी के 'उत्थान' में लागल नवहा पुरोधा लोग भोजपुरी से ठनले बा। हिंदी भासा के संबंध भोजपुरी भासा से शासक आ शोषित वाला ना बनावे के चाहीं।

सोचे के त बात ई बा, जे अंगरेजी भारत में संपर्क भासा काहें बनल रहो ? एह प त सवाले नइखे उठत? ई अस्थान हिंदी के काहें ना दिहल जाव ? राज्यवार भा क्षेत्र बिसेस, अने अंचल, में जवन समृद्ध भासा बाड़ी सऽ, उन्हनीं के लसारि के हिंदी के परचम फहरावे वालन के कमनजर से अनघा क्षोभ होला। हिंदी बनो आ बढ़ो। एह में कवन बेजाई ? बाकिर, का ई हिंदी भाव–शब्द आ संप्रेषण से धनी आ व्याकरन सम्मत बाकिर आंचलिक भासा कूल्हि के लहास प फुफुंदी लेखा जीही ? तब त हमनी के ओइसन निर्दयी हिंदी ना चाहीं ! अपना भूभाग में अंगरेजी कम रहे जे हिंदियो ओही तरी भासा–बेवहार के नासत हड़कंप मचाई ? कवनो समाज के भासा सैकड़न सालन से ओह समाज के बेवहार आ प्रवृती के भावनात्मक आ चारित्रिक उत्पाद होले। भासा के मरले खलसा शब्द ना मुअऽ सऽ, बलुक ओह समाज के संस्कार, बेवहार आ प्रवृती मू जाले। हिंदी के झंडाबरदार लोग ई बात काँहें नइखे बूझत ? हिंदी के राष्ट्रभासा त बनवा ना सकल लोग, उत्तर भारत के कौ गो ना राज्यन में हिंदी के माईभासा के मुखावटा ओढ़वावत, भरम जरूर पैदा क रहल बा लोग। कहे के जरूरत नइखे, जे अइसना लोगन के हाँथे हिंदी के औपनिवेशिक रूप जरूर मिल रहल बा, जवना के मुख्य गुन बाद–बाकी भासा के दमन होला। ईहे त अंगरेजी के गुन बड़ुए। जहँवें अंगरेजी गइल, ओह जगहा के मूल भासा के वजूदे मिटा गइल। का एही तोहमत सङे

www.bhojpurisahityangan.com

हिंदियो के जियावल आ बढ़ावल जाई ? का हिंदी अपना भासाई सरूप से हतना कमजोर बिया, जे आन्ह भासा के समृद्धी से ई आपन रूप–संस्कार ना बचा पाई ? हमरा त ई केनियो से नइखे लागत। एकर माने ई, जे **ई सभ बवाल हिंदी के नवहा उछाह में बउराइल झंडाबरदारन के** कमती सोच आ छाँछर समुझ के कारन हो रहल बा। एह लोगन के लगे ना संवेदना बा, आ ना कायदे से अध्ययन आ तर्क बा। एकरा बावजूदो ई लोग हिंदी के नाँवें आपन दोकानदारी चला रहल बा। अइसन लोग हिंदी के बढ़ावा नइखे देत। बिकास नइखे करत। बलुक हिंदी के खिलाफ दुसमन पैदा क रहल बा लोग। अबले का त हिंदी के मुखालफत अ–हिंदी भासा–भासी करत रहलन। आजु हिंदी प्रदेस कहाए वाला राज्यन में हिंदी आ ओह अंचल के भासा के बीच डेंड़ार घिंचा रहल बा। सही मानीं, त हिंदी–प्रदेसन में भोजपुरिहा लोग हिंदी के लेके कवनो अवाज ऊँच नइखे करत। बलुक बिरोध होता असंवेदनशील, अतार्किक आ बेबुद्धी के अहंकारी हिंदी–हितैसी लोगन के खिलाफ। ई लोग संख्याबल के दोहाई देत हिंदी के कद लहान करत, सभ आंचलिक भासा के मर्सिया पढ़े के उत्जोग करि रहल बाड़े। हिंदी संपर्क भासा होखो, आ ऊ भारत के हर राज्य में बोलल आ बूझल जाव, एह से केहू के का बिरोध होखी ? हिंदी के उत्थान में भोजपुरिया बिद्वान लेखकन के कमती जोगदान रहल बा ? जवन आंचलिक भासा समृद्ध बाड़ी सऽ, ओकनी के बढ़ावे आ जियावे के निकहा उत्जोग होखो। गहन गहीर उपाय कइल जाव जे भासा के साहित्य आ शब्द–धन बहिराव। हिंदी संपर्क भासा होखो आ भोजपुरी, मैथिली, अवधी आदी अपना–अपना राज्यन के भासा होखऽसऽ। फेरु काँहें केहू हिंदी के बिरोध करी आ अ–हिंदी भासी राज्यन में बवाल मची ? ई ना कइल गइल त, हिंदी के दोसर राज्य के लोग काँहें अपनाई, जब ओह राज्य के भासा हिंदिये सडे 'राजभासा' मनाइल बिया?

मारिसस में फ्रेंच, क्रियोल आ अंगरेजी के बावजूदो भोजपुरी आ हिंदी के मान्यता दिहल गइल बा। नेपाल में नेपाली का सडे–सडे मैथिली, भोजपुरी आदि के मान्यता दिहल गइल बा। सबले बड़ बात ई बा, जे नेपाल में भासा के लेके कवनो बवाले नइखे ! जबकि ओजुगो हर क्षेत्र के आपन–आपन भासा बड़ुए। भासा के लेके अइसन समरसता खलसा राजनीति कइले ना आवे। ••

एम–2/ए–17, ए०डी०ए० कॉलोनी, नैनी,
इलाहाबाद - 211008 (उप्र)

इयाद

अगस्त में स्व0 नगेन्द्र भट्ट (बलिया) के

देस गान

स्व0 नगेन्द्र भट्ट

हउवा झूमि के चँवर डोलावे
बदरा चरन पखारे ना !

दम-दम दमके भाल कि गोदी मचले गंगा-जमुना
कतहूँ सिंह दहाड़े हो मइया, कहीं कुलाँचे हिरना
बिजुरी चमक -चमक के जेकरा, घर में दियना बारे ना !

साँझ- सुन्दरी साँझ क बेरा, दीपक-राग सुनावे
गावे रात मल्हार रात भर भोर भैरवी गावे
पछुआ लोरी गावे पुरवइया आरती उतारे ना !

मन्दिर मस्जिद गिरिजाघर गुरुद्वारा के ई देस
जौहर करे पद्मिनी इहवाँ पूजा करे नरेस
सागर गरजे, गरजि-गरज के रोजे नजर उतारे ना !

कंठ -कंठ में जेकरा गूँजे रामायन आ गीता
जहवाँ जनम राम के होला ,खेत में उपजे सीता
जहवाँ गूँजे बेद क बानी हरदम नदी किनारे ना !

जेकर मान बढ़ावे परबत ,हर परबत के चोटी
पूत करेले रच्छा जेकर ,खाके घास के रोटी
खाला मात इहाँ जे आवे कबहूँ बिना बिचारे ना !

जेकरा आँचर, हरसिंगार के फूल झरेला झर-झर
जस गावेला निसिदिन जेकर नदिया नाला निर्झर
जनमे खातिर जहवाँ देवता आपन हाथ पसारे ना !

••

(''पाती'' के अंक ३२- ३३, बरिस २००० से)

www.bhojpurisahityangan.com

(व्यक्ति–व्यंजक निबन्ध)

मानिक मोर हेरइलें

✍ आचार्य विद्यानिवास मिश्र

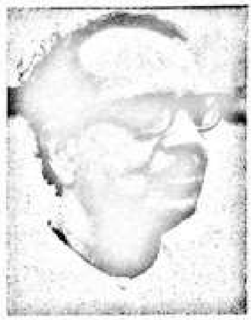

भोजपुरी में लिखे के मन बहुते बनवलीं त एकाध कविता लिखलीं, एसे अधिक ना लिखि पवलीं। कान सोचीलें त लागेला जे का लिखीं, लिखले में कुछ रखलो बा! आ फेरो कइसे लिखीं? मन से न लिखल जाला! आ मन–मानिक होखो चाहे ना होखो–हेरइले रहेला, बेमन से लिखले में कवनो रस नइखे। घरउवाँ चइता के बोल हः 'जमुना के मटिया; मानिक मोर हेरइलें हो रामा'...! हमार घुँघुची अइसन मन, बेमन से पहिरावल फूलन के माला में हेरात रहेला। जवन ना चाहीलें तवन करे के परेला लोगन के मन राखे खातिर। जवन कइल चाहीलें तवना खातिर एक्को पल केहू छोड़े देबे के तइयार नाहीं। लोक के चिंता जीव मारत रहेला। मनई जेतने लोक क होखल चाहेला, लोक ओतने ओके लिलले जाला। चलऽ चारा पवलीं नाहीं, बड़ा नरम चारा बा। एह लोक के कोसे चलीलें त एक मन बड़ा ताना मारेला– 'ए बाबू! तूहीं त एके सहकवलऽ, अब काहें झंखत हव ! बतिया ओहू सही बा–सहकावल त हमरे ह, लोक–लोक हमहीं अनसाइल कइलीं। देखीलें लोक केहू के होला नाहीं, जेतना लेला ओकर टुकड़ो नाहीं देला। निरालाजी के गीत बा 'देती थी सबके दाँव बंधु', हमरो जिनगी सबके दाँवे दिहले में सेरा गइलि, हमार दाँव केहू देई, ई एह जनम में त होखे वाला नाहीं बा!

एतना घुमलीं, एतना देखलीं, एतना पढ़लीं, एतना गुनलीं, सज्जी में अपने भाग लगावत गइलीं। भाग लगावत–लगावत भजनफल ले गइलें नेउरा मामा, बाकी बाँचल सुन्न। अब एमें का भाग लगाईं? अब किछू हासिल नाहीं लागी, हमरे भागि में बस सुन्नवे आई। आजो हमके चैन से बइठे त दे। उहो नाहीं होई। मन उमड़त–घुमड़त रही, कवने कवने कोना–अँतरी से महीन आवाज आवत रही, 'बाबू, लिखऽ न हमरो बतिया! कब्बो अमवाँ के बारी कही, एही बरिया में जेठ के दुपहरिया के घाम नेवरले बाऽ बाबू, अधपाकल आमे खातिर रार कइले बाऽ, एह अमरइया के सुधि कब्बो लेबऽ! छीदी आ दीदी के समवरिया मनमतिया, रोरा, परोरा, सुनरदेइया ई सब दुलरा के बोलावेली, बाबू हमन के आँखिन के पुतरी, झुलुवा ना झुलबऽ! एगारह बरिस के भइलीं, इस्कूल जाए लगलीं, हुडु अस नोकरन के साथे इमली के डारि में झूला पड़ल, ऊ हमहूँ के बइठा लिहलें, पेंग मारे लगलें नोकर, हम झूला के बीच में बइठलीं, एक ओरि पिछवारे के जोलहा के बेटी, एक ओर हम। इमली के अड़ार डारि। ओसे हुड्डन क पेंग सहि ना गइल। टूटल अउर अररा के गिरलि, पिढ़वो गिरल, नीचे लरिकिया के लागल, ओसे बेसी नोकरन के। चोट से ज्यादा चिन्ता ओह लोगन के ई मचल कि बाबू कहीं कहि दीहें त हमन के कुसल नाहीं। लरिकिया रोवे के रोवबे न करे–बाबू, केहू से कहिहऽ मति, बप्पा सुनिहें त हमार कवन गति होई, हम नाहीं जनितीं। डर त अपने भीतर रहे। एसे हम त चुप रहब, चोटिया कइसे चुप रही। सबे चोटि उभरल आ सभे कहल कि राही में ठोकर खाके गिरलीं। एक्के साथ इतना जनी के ठोकर समुझि में काहें ना आवो, धीरे–धीरे बाति खुलल, हँसी–दिल्लगी भइल, बाति ओराइ गइल। लेकिन ऊ इमली के डरिया अब्बो कबे कबे टोकेले–ए बाबू, हमहूँ तोहरे सथवे गिरलीं, हमरो चोटिया मन परबऽ!

नइये उमिर में बियाह भइल, रेखियो अबहिन ठीक से भीनल नाहीं रहे, तब्बो हमके बड़वार बिटिहिनिन के हँसी–मजाक झेलेके रहे, खिझियो बरे, भितरे–भीतर गुदगुदियो लागे! पँचवे दिन बरात बिदा भइल त गीति उठल, 'चल न सखि, चलन चाहत रघुराई!' आँखि भरि आइल। एतना मोह–छोह कहाँ से उपराला ओह उमिर में, कइसे मनई बाति–बाति में आपन हो जाला, ओकरे सुधि में पँवरे लागेला। ऊ उमिरिया अब लवटी त नाहीं बाकिर ओह उमिरिया के कोहाइल, मान–मनउवल, नेह–छोह, बाति–बाति में अनखाइल, हेराइल आ मिलले पर बाति ना ओराइल...ई सब मन से नाहीं छूटेला। कुँआर हाथे के मेहदी के रंग छोवलो पर कहाँ छूटेला? ऊ कुँवारि अधकुँआर उमिरि, कब्बे–कब्बे हिसाब माँगेले, बाबू का पवलऽ? का गँववलऽ? जबाब दिहलो चाहीं त जबाब बा कहाँ? हिसाब बट्टे खाते के बा, का जबाब देईं! सूरदास के पद हवे, 'लरकाई की प्रीति कहो, सखि, कैसे छूटत।'

आजु खतियावे बइठीं त जानीं केतना हिसाब कपारे चढ़ल बा, कवनो जिनिगी उतरे के नाहीं; बस 'मूँदहुँ आँखि कतहुँ कछु नाहीं' के नियर ऊ सब बाति अन्हे के जिनगी बितवले में कुसलि बा। पिछवारे के सुधि कवनो नीमन काम नाहीं, आगा देखे के चाहीं, आगा देखे वाला के जमाना होला। बाकिर करीं का? पिछुवरवें त नेबुआ, अनार, कचनार के डारि में फूल आवेला, बँसवरिया में जाने कवन–कवन चिरई बोलेलीं। पिछुवरवें त आँखि मुनउवल खेललीं, ऊ पिछुवरवाँ के कइसे बढ़नी बहार दीं। आगा जाए के लचारी बटले बा, नाहीं जाइब त धकेलि के लोग आगे फेंकि देई। लोग के बाहर जा नाहीं पाइब। तब्बो मनवाँ रहि–रहि के भितरे–भितर बिहरेला। आँवाँ नियर एहीं खींचातानी में कवनो ओर क ना भइलीं, घाटे जाईलें, धोबिनिया दुतकारेले, कहवाँ ई मुँहलेसना आइल, घरे जाईलें त

www.bhojpurisahityangan.com

धोबिया डंडा उठावेला एके भेजलीं धोबिनियाँ के ऊपर नजर राखे के, आ ई घरघुसना घरे लवटि आइल। ओही धोबी के कुतवा नियर हमरो लिखंत बा, धोबिनियाँ के लीला नियर नवका जमाना के परपंचों समझे के मोका नहीं मिलेला। धोबिनियाँ हमरे ऊपर तनिको पतियइबो नाहीं करेले, ई ओही दहिजरवा के पाछे–पाछे रहेला। धोबिया के नियर आपन मन धोवे वाला जिनगी क मालिक हमार मजबूरी समझेला नहीं। दूनों से गइलीं घरवो से, घटवो से। हजारीप्रसाद जी कहले बाटीं 'जुगुप्सित जंतु सा उभयतो विभ्रष्ट।' ऊहे हालि बा।

एही में भोजपुरी के नवका पत्रिका के नेवता, भोजपुरी में लिखीं, कुछऊ लिखीं, लिखीं। कइसे ए बउराह लोगन के परतियाईं कि भोजपुरी में लिखे चलब त बिसरल–बिसरल बाति उपराई। हम केके रोकब। आ जब सब दउरल आ जाई त कलमियाँ केके–केके सम्हारी? चुप्पे रहल ठीक बा। अपने घर के भाखा में बाति त ऊ करे जेकर कवनो घर हो, जेके घरे जाए के फुरसति हो, जेके घरे गइले पर लोग चीन्हें। चीन्हे वाला लोग चलि गइल, केहू के आँखी नाहीं लउकेला, केहू चलि ना पावेला, केहू के होसे–खयाल नाहीं रहेला। जे बा ते हमरे सामने जनमल, ऊ का चीन्हीं? अइसन लागत बा कि चिन्हारी करावे वाली मुनरी कहीं हेरा गइल। मनई के चिन्हारी जब हेरा जाले, तब घर रहलो पर नाहीं रहेला। आखिर जिनगी चिन्हववले कै नाँव ह। अपने के केहू चिन्हवा नाहीं पाई त जीके का होई? एसे आपन चिन्हारी जरूरी होला। ई जमाना चिन्हारी के संकट के जमाना ह। आदमी के एक चिन्हारी से काम ना चले, एहसे कइगो चिन्हारी अदमी रखेला। कवनो–कवनो चिन्हारी त जोर–जबर्दस्ती से लोग पहिरा देला। एमें आपन असली चिन्हरिया बिसरि जाले; कवनो पुरनकी डेहरी में धरा जाले, हेरले मिलबे न करेले फेरू ओढ़ावल चिन्हारी जिउ के बवाल हो जाले, न उतारते बनेला न पहिरते।

जे खाँटी आपन होई, ओकरा आगे नकली चिन्हारी लेके कइसे जाईं, एही संकट में किछू लिखत नाहीं बनेला। मानिक से बेसी घुघुची हेरइले का दुख एह मनई–बेसाहे वाला जमाना में के समझी? हँ, हम ई जरूर पूछब, मनई त किनले मिलि जइहें ढेबुआ में तीन, लेकिन घुँघुँची कहाँ मिली? अब सोनरो के दोकानी पर मिलीग्राम के बाट बा; रत्ती नाहीं चलेला। रत्तिया घुँघुँचिये के न होले। जंगल सब काटि लिहल, बचल–खुचल में जवन गाछि होबो करी त के चीन्ही? अब सब पेड़ नाहीं चीन्हत बा, पेड़न के जीव चिन्हऽता, ओकर जीवकोस जूड़ में रखता। भला एह गुंजाह के पूछी। हमरे लेखा गुंजा थाती के लरिकाई के, रेखिभिनाई के, बन–बन बिहरे वाला किसोर–कन्हइया के, दूसर केहू एकर मोल का जानी? दूसर मान लेईं मिलू जाय, ओके कहाँ मिली लरिकाई, कहाँ मिली पहिला फगुनहट के सिहरन, कहाँ मिली 'मनेर मानुस'! मन के मीत के हियरा से हियरा जुड़ाइब। अपने पंचनि गुंजा के चीन्हा पूछबि से जवने के हाथ में लेते सज्जी नकली चिन्हारी उतरि जाय, ऊहे हमार गुंजा होई। अपने पंचनि ई चमक–दमक वाली चिन्हारी उतरवावे के जोखिम लेबे ना करब। एसे काहें देईं? आप लोगन के दू ठो मीठि–मीटि बात एही बहाने सुने के मिलल, एतनो मिलत जाय, नकलिए सही, फूल–पाती जूनी–जूनी लोग चढ़ावेला, भितरे–भितर हँसी छुटेले। सोचीलें, लोग पाथर ढेला नाहीं फेंकऽता, ईहे कम बा? टटका फूले के तरसला के जरूरत नाहीं बा। टटका किछु रहि नाहीं पावऽता।

आप सब कहब आगे बढ़े बदे ई बलिदान करे के परेला, रथ के नीचे जाने केतना लहलहात फसिल कचरा जाले, केतना गीति केतना पुरइन के चउक, केतना नान्ह–नान्ह जीव कचरा जाले, रथवा वेग से चलावे में के देखी कि का कचराता, आगे बढ़ला के काम बा, रुकला के नाहीं। आपके बाति एक सौ एक नया पइसा सही, बाकिर हमके सोचे त देबऽ न, कवनो अउरो राह होई जवन मनई बनाई, सबके गुंजाइश राखी, ओपर रथवो दउराई त सब बँचलो रही, बचले भर नाहीं रही, ऊ सब रथ के सजवले रही, कब्बे रथ के बनावट बनि के, कब्बो रथ पर चढ़ेवाला के सोभा बनि के, कब्बो ओकरे मन के उमंग बनि के। ओकर चिन्ता अपने पंचनि नाहीं करब, खाली सिनेमा के तरह ही बनब, खाली अपने लोटवा में गुड़ फोरब, भोजपुरी के लेके आंदोलन करब, भोजपुरी के भितरे कवनो नकारे वाला बा, ओकर सुर सुनबे ना करब, खाली 'बलम लरिकइयाँ' के गीति गवाइब आ मने मन सोचब, 'भोजपुरी में बड़ा रस बा।' बाति बढ़वले में का बा, एही जा बतिया समेटऽताटीं। राधाजी के मानिक जमुना के माटी में हेराइल आ घाँटो गावे वाला गवलें, 'मानिक मोर हेरइलें, एही जमुना के मटियाँ'। हमार घुंघुची त माटी में हेराइल नाहीं, ऊ त जवन बयारि बहऽतिया ओही में एतना चीकट धुआँ बा, गन्होर बा, एतना कउवारोर बा, ओही में कतहूँ हेरा गइल। आपन दीदा खोईं तब त हम अँखिगर लोगन के आगे आपन दुःख कहीं। कब्बो न अइसन होई कन्हइया, घुंघुचिया के माला पहिरे बिना बँसुरी बजावे के तइयार नाहीं होबऽ, खोजि हेरि के घुंघुची उनके गँटई में डारहीं के परी, ओनकर बँसुरी बाजी, हमरो चिन्हारी मिली जाई।

जमुना तट बेनु बजावत स्याम सुनाम हमारो हू टेरि फिरैंगे।

एक दिना नहिं एक दिना कबहूँ दिन वे फिरि फेरि फिरैंगे।।

www.bhojpurisahityangan.com

अंचित के तीन गो कविता

अंचित

(एक) काव्य गोष्ठी

जे जेतना बड़ कवि रहे
ओकर रहे ओतने बड़ तामझाम।

चश्मा कइल गइल ठीक
पन्ना सरियावल समय लिहलस

इन्तेजार में बइठल रहल लोग

कविता पढ़े के बादो
दुनिया के कुल कष्ट में
जरिको फेर बदल ना भइल।

(दू) बाढ़

दुःख धमकेला
अचानके
हाँ, झेले के सीमा
लमहर होत जाला।

पहिले पता रहेला
पानी आई,
कौन घड़ी धमकी एकर कोई अता पता ना।

बांध टूटी,
खेत डूबी,
फसल दही -
ई सब पता बा।

तब्बो
जिए के अलावा
आखिर अउरी का करी आदमी।

डूबल जाला
दहले जाला।

(तीन) अस्वीकार के युग बा

जे ना लही मन के,
ओकरा के झूठ कह दिहल जाई

जे कहबऽ की रउरा सही नइखीं
त तू गलत हो जइबऽ।

एक दिन
मन बाँध के निकलबो करबऽ
बजार में कि कुछ मोल लागे,
कुछ पेट भरे
कुछ चना चबेना घर जाए,
कुछ हल्का फुल्का मन लायक होखे
कि दू चारो बूँद सही, आस रहे।

अस्वीकार होके
लौटे के पड़ी वापस,
फिर अन्हार के ओर
कि रौशनी राजा के बपौती बा। ••

■ तुषारकान्त उपाध्याय, मेन रोड, बुद्धा कालोनी (स्व० अनिल पांडे आइ.पी.एस. के बगल में), पटना-800001

www.bhojpurisahityangan.com

सावन के बहाने
दू बून कबिता

✍ गुलरेज शहजाद

(एक)

"बदरी के बदरा पिठियवलस"
श्याम रंग में मौसम गावे
आसमान के खोंखी उखड़ल
लागल बरसे झमझम बूनी
लागे जइसे छमछम करत
गोरिया अइली

जंगला धइले देखऽ तानीं
आई हो दादा
आहा हा हा ....

पड़ल जे छिंटका बूनी के
मुंह पर लागल
अमरित गिरल
पपनी पर पपनी सटियाइल
सिहक गइल देहिया, भितरी
गुद्गुद्दी उपिटल

फुहियाता ई बूनी खाली
बहरे नाहीं
हमरो भीतर
बून-बून के झांझर बाजे
एह लय में आ ताल में हमरो
मन के माटी भींज गइल बा
बाहर भीतर सब कुछ गीले गील भइल बा !

(दू)

खाली पड़ल सावन ले झूला
ऊँघ रहल मल्हार
झूम के बरसे हमपे गोरी
भींजे हमर प्यार

भींजे हमर प्यार कि आपन
संग सुहावन होए
ऊसर मन हो जाए जलथल
अइसन सावन होए

अइसन सावन होए कि
सपना हो जाए धानी
जेने देखीं ओने लउके
पानी पानी पानी ! ••

नकछेद टोला, मोतिहारी -845401
पूर्वी चम्पारण (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

चम्पारण सत्याग्रह आ पं0 राजकुमार शुक्ल

✍ कृष्ण कुमार

चंपारन सत्याग्रह से जुड़ल कई गो कहानी अइसनो बाड़ी सन, जवन साइत इतिहास के पन्ना में जल्दी ना मिलें स बाकिर ओह कहानियन के, ओह इलाका क लोग पीढ़ियन से सुनत आ रहल बाड़े। लोग बतावेला कि चंपारन का तत्कालीन मरमभेदी सच्चाइयन के सुन–देखि आ जान के 'बापू' महात्मा बन गइले। एइजा गरीबी एह हद तक रहे कि मेहरारुन के पास आपन पूरा तन ढाँपे के कपड़ा ले ना मिलत रहे, कस्तूरबा जब एह सचाई के बापू के बतवली त दुखी होके ऊहो अपना देह से कपड़ा तेयाग करे के संकलप ले लिहले । तबे से ऊ चरखा कात के, ओह सूत से बीनल चदरा आ धोती से आपन देह ढाँकसु । चम्पारन महात्मा गाँधी के अइसन बन्हलस कि ऊहाँ का जनता खातिर उनकर, दमन आ शोसन का खिलाफ चलावल आन्दोलन इतिहास का पन्ना में हमेशा खातिर अमर हो गइल । ओह घरी के सत्याग्रही बागियन क जब चरचा होला त गाँधी बाबा के सँगे एगो नाँव पहिला स्तर पर उभरेला –– पं0 राजकुमार शुक्ल जी के ।

बंगाल से नील के खेती उजरल त नीलवर अंगरेज आपन बोरिया बिस्तर लेले बिहार पहुँच गइले सन। उहाँ उन्हनी के चंपारने सबले पिछड़ल जगहा लउकल, जहाँ उनहन के, उहाँ का भोला भाला लोगन पर आपन मनचाहा राज कर सकत रहलन स। चंपारन नील का खेतियो लायेक उरबर लउकल। नीलबरन के सरदार जेम्स मैक्लिआड बेतिया के लाल सरैया कोठी में आपन डेरा जमवलस। 1866 में जब चम्पारन जिला बनल, ओह घरी ले जेम्स नील का खेती के टन्ट घंट उहवाँ फइला चुकल रहे। कहाँ अनाज, कहाँ नील, जमीन आसमान क फरक। खेतिहरन के घाटा आ रैयत के भुखमरी। चारू ओर धुआँ धुआँ सुनुगे लागल। आजिज आइ के रैय्यत नील क खेती बन्द कर दिहले सन, तब नीलवर अपना असली रूप में आ गइले अमानुषिक अत्याचार आ मार पीट जबरजस्ती के सिलसिला शुरू भइल। आजिज आके बेहाल रैय्यत फरियाद कइले। जब कुछ सुनवाई ना भइल त लालसरैया का लगे बटुराइ के कोठी में आग लगा दिहले । बाकिर एह आग लगवला में रैय्यत का खिलाफ कवनो सबूत, कवनो प्रमान ना मिलला का बादो पटना के कमिश्नर, राज में अशान्ति फइलावे का आरोप में उहाँ का लोगन के दोषी करार दिहलस। हालाँकि रैय्यतन का ओर से फरियाद में साफ कहल गइल कि गरीबी में पिसात रैय्यतन से, उनहन क जमीन, नील खेती खातिर जबरन पट्टा लिखवावल जात रहल हा। खेती नीक ना भइला पर जुलुम ढाहल जात रहल हा। लोग खइलो बिना मरे आ जुलुमो सहे, ई अन्याय ह !

नीलहन के पहुँच रहे । ऊहो सरकार से मदद के गोहार लगवलें स । जेकर राज ओही क दोहाई। सरकार मोतिहारी में दू गो जजन के अदालत बना के एकर सुनवाई करे क हुकुम सुना दिहलस। उहाँ नीलवर, रैय्यतन का खिलाफ मोकदिमा करें स आ जीत उन्हने क होखे लागल। मजबूरन नील के खेती बन होखे के सवाले ना पैदा भइल । एह स्थिति में रैय्यत में क्षोभ आ खीसि बढ़ल जात रहे । सन् 1978 में नीलवर बिहार प्लाटर्स एसोसियेशन के सभा में दू गो निर्णय भइल । पहिला–नील के दाम बढ़ावे के, दुसरका नील फसल उगावे वालन से मालगुजारी ना वसूले के । बाकिर ई देखावा क चोंचला रहे । मालगुजारी असुलात रहे । फेर एसोसियेशन ई फैसला कइलस कि बिगहा में तीन कट्ठा नील के खेती करे वाला के मालगुजारी ना बढ़ावल जाई । ईहे तीनकठिया प्रथा के शुरूआत रहे । 1887 में जब बिहार में भारी अकाल पड़ल त नीलहा, नील के दाम साढे दस से बढ़ा के साढ़े बारह रुपया क दिहलें स। रैय्यतन में बढ़त असंतोष कम ना भइल। अत्याचार से खिसियाइल, तेलहुडा कोठी के रैय्यत उहाँ का अंगरेज मनेजर के हत्या कर दिहले स। ओकरा बाद त पूरा चम्पारन अंगरेजन का जुल्मो सितम का आगि में धधके लागल।

एह आगि के बुतावे में चंपारन समेत पूरा उत्तरबिहार में देश खातिर मरे मिटे वाला अनेक नवहा अंग्रेजन से लोहा लेबे खातिर तइयार हो गइले । ओह जन आन्दोलन में, के नेता आ नायक रहे, ई महत्व ना रहे सबकर मिलल जुलल भूमिका रहे। कई नायक रहले, अपना अपना जवार के । चम्पारन आन्दोलन के प्रणेतन में पं० राजकुमार के महत् भूमिका के गाँधियो जी स्वीकार कइले रहनी । अगर शुकुल जी ना रहिते त साइत गाँधी जी चंपारन ना अइते, ना ई जबर्दस्त आन्दोलन होइत। राजकुमार शुक्ल जी गाँधी जी के चंपारन ले आइ के महात्मा के संबोधन से पुकारे आ चम्पारन सत्याग्रह खातिर उदबेगे वाला लोगिन में अगुवा रहले। 1929 में साबरमती से लवटि के शुक्ल

www.bhojpurisahityangan.com

जी अपना चंपारन के गाँव सतवरिया के बजाय ओहि साहू का मकान में रहे लगनी, जहवाँ गाँधी जी रुकत रहनी । स्वास्थ ठीक नाहियो रहला पर, शुकुल जी ओइजे से चंपारन आवत जात, गरीबन आ देश के सेवा करत रहि गइनी । मोतिहारी में उहाँ के देहावसान हो गइल । मरे से पहिले अपना बेटी से मुँहें आगि देबे के जवन इच्छा उहाँ के रहे, ओकर पालन भइल । उहाँ का श्राद्ध में डा० राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रहनारायण सिन्हा आदि नामी लोगन का सँगही एगो अंगरेज अफसर 'ऐमन' पहुँचल रहे । राजेन्दर बाबू ओकरा से चुटकी लेत पुछलीं, "अब त रउआ खुश होइब ऐमन जी, काहे कि राउर दुश्मन एह संसार से चल गइल ..।"

राजेन्दर बाबू के बोल सुनिके ऐमन साहब का आँखिन से झर झर लोर बहे लागल । ऊहो सुराज का एह धुनी सेनानी के लोहा मनले रहे । ओकरा मुँह से अतने भर निकलल रहे, "—चम्पारण का अकेला मर्द चला गया !" ऊ अपना चपरासी के तीन सौ रुपया देत पंडित जी के श्राद्ध के बेवस्था करे के कहले रहे कि 'ई मर्द आपन काम धाम सब कुछ छोड़ के देश अउरी गरीबन का सेवा में पचीसन साल गँवा दिहलस आ हम, एह एह त्यागी के सर्वस्व छीन लिहनी। अंगरेज अफसर ऐमन के मन में एतना हलचल रहे कि शान्त होखे क नाँव ना लेव । शुक्ल जी का मुअला का बाद, ऊ अपने मन के तोख देबे खातिर पंडित राजकुमार शुक्ल जी का दमाद सरयू राय के अपना कोठी में बोलाइ के, मोतिहारी के पुलिस कप्तान का नाँवें एगो चिट्ठी दिहलस जवना का आधार पर, सरजू राय के पुलिस जमादार के नौकरी मिलल।

पं० राज कुमार गाँधी जी का लड़ाई के एगो जुझारू आ समर्पित सिपाही रहलन, बाकिर चम्पारण आन्दोलन के अइसन सामाजिक नायक रहलन, जिनका दिहल त्याग, सेवा आ संघर्ष का बुनियाद पर आगा स्वतंत्रता आन्दोलन खातिर देश के, बिहार के, चंपारन के कतने बीर सपूत अपना के होम कइलन। ••

▩ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला,
आरा 802301 (बिहार)

लघुकथा

खाली खोंता

✍ राजगुप्त

घर के दू तल्ला के छत पर एगो चिरई आपन खोंता लगवले रहे। कुछ दिन बाद देखलीं कि खोता के दस पाँच हाथ फइले मधुमाछी आके छत्ता लगा लेले बाड़ी स। छत पर आवे–जाये के उहे रास्ता रहे। एक दिन ओने गइलीं त मारे जे मधुमाछी उड़ि–उड़ि भिनभिनाये लगली स। हम डेरा गइलीं। काटे स ना। बाकिर ना कटली स। सुनले बानी कि जेकरा के जूझि के काटि दीहे स, त ओकर जिअल दुसवार हो जाला। बाकिर इ का? खोता के चिरई अपना बच्चन खातिर दाना लेके आवे–जा त ओकरी आवाज पर इचिको ना सकपका स। जइसे घर के सवांग होखे। जइसे चाहे जब चाहे आवऽ–जा। चिरइन के कुछ ना बोले स। ढ़ेर दिन हो गइल। एक दिन सुनलीं कि हमार छोट लड़िका करेड़ाहे धुवाँ क देले ह। मय मधुमाछी भागि गइली स। सुनते खिसिया के लड़िका के डपटली। काहे अनबोलतन के बेधले ह। भगवले ह। कहि के छत पर गइलीं। देखली छत पर मधुमाछी छत्ता चाटि–चूटि उडसि गइल बाड़ी। चिरई के खोंता खाली बा। लड़िका के बेजाइँ पर बहुत पछतइलीं। पछतात कबो–कबो छत पर दाना छींटे लगली। का जाने भागल चिरई एहु बहाना वापस आ जाय। बाकिर दाना चुगे खातिर कबूतर बेर–बागर अइले। भागल गौरैया लवटलि ना। ••

▩ राज साड़ीघर, चौक, बलिया (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

प्रवेश

चंपारन गांधी से पहिले आ गांधी के बाद

✍ जलज कुमार 'अनुपम'

चंपारण, बिहार के उत्तर–पच्छिम सीमा पर अवस्थित बा, जवन वर्तमान में, पुरबी आ पश्चिमी जिलन के नाँव से जानल जाला। पच्छिमी चंपारण के मुख्यालय बेतिया अउरी पुरबी के मोतिहारी बाटे। हिमालय के तलहटी में अउरी गण्डकी के आँचर में लपेटाइल चंपारण अपना ऐतिहासिक गौरव से महिमामंडित बाटे। चंपारण के चौहदी देखल जाव त उत्तर में नेपाल अउरी हिमालय के पर्वतश्रृंखला, दखिन में पुरान प्रसिद्ध गण्डकी के चंचल धार, पुरुब में बेगवती बागमती के उद्दाम लहर, अउरी पश्चिम में देवरिया अउरी गोरखपुर के जिला बा। पद्म पुराण के अनुसार ध्रुव के तपोबन गण्डकी के किनारे बा।

"ततोध्रुवस्य धर्मज्ञ स्माविश्य तपोवनम्
गुह्यकेषु महाभाग मोदते नात्र संशय।।"

इतिहासः

चंपारण के साहित्य में ब्यापक चर्चा बा। चंपारण गाँधी जी के जुड़ला से बहुत पहिले से जगमगात रहे। त्रेता, द्वापर चाहे बुद्धकालीन सभ्यता संस्कृति, के ध्वजा आ पहचान ई क्षेत्र आजो मजबूती से पकड़ के रखले बा। रामायण लिखे वाला महर्षि बाल्मीकि के आश्रम एही चंपारण में रहे, जवन आज के बाल्मीकीनगर बाटे। हिमालय के तराई अउरी नेपाल से सटल बाल्मीकीनगर में बनजीव के संरक्षण खातिर बाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान बाटे। एहीमें बाघ आरक्षित क्षेत्र (टाइगर रिजर्व) बाटे। लव–कुश अउरी श्रीरामचंद्र जी के लड़ाईयो एही इलाका में भइल रहे। महाभारत काल मंल पांडव लोग जब वनवास के समय राजा विराटनगर में छिपल रहल ऊहो एही क्षेत्र में पड़ेला।

एह क्षेत्र से मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। सम्राट अशोक के बनवावल अशोक स्तम्भ आजो अरेराज से सटल पश्चिम लौरिया गाँव, बेतिया से सटल पश्चिम लौरिया अउरी रामपुरवा में जस के तस खड़ा बाटे। केसरिया से पिपरा जाए वाला सड़क पर सागरडीह नाम के एगो टीला बा जवना के बौद्ध कालीन स्तूप के भग्नावशेष समझल जाला । लगभग ४०० ई. के आस पास चीनी यात्री फाह्यान ओह जगह के देखलें रहल जहवा भगवान् बुद्ध राजसी वस्त्राभूषण उतार के सन्यासी के भेष धारण कइलें रहलें।

मध्यकाल में कर्नाट राजवंश के संस्थापक नान्यदेव से ले के गयासुदीन तुगलक तक के चंपारण से सन्दर्भ रहल बा। मुहम्मद इब्न युसूफ के बेदी बेन शिलालेख से ई सिद्ध होला की चंपारण के एक भाग पर तुगलक के अधिकार रहे। १५३० ई. में अलाउदीन हुसेन शाह के पुत्र नसरत शाह तिरहुत पर आक्रमण कइके अपना राज में मिला लिहलें।

राजा उदयकरण के बीरता से प्रभावित होके राजा टोडरमल उनका के चंपारण के शासन के भार सउँप देहलें। १५८२ ई. में राजा टोडरमल चम्पारण सरकार पर लगान निर्धारित कइलेन। अकबर के बितमंत्री अउरी बिद्वान अब्दुल फजल आईने अकबरी (बलोच मैन के अनुवाद की तीसरी पुस्तक) में चम्पारण के विशेष स्थान देहले बाड़ें। सूबा बिहार के उल्लेख करत लिखलें बाड़ें "चम्पारण के भूमि पर बिना जोतले दलहन के बीया बो देहल जाला , जवन बिना परिश्रम के उपजाऊ होला। इहवाँ के जंगल में पीपर के पेड़ बहुत जलदी बड़ हो जाला।" अलीवर्दी से लगायत मीर कासिम से लेले १७६२ ई. में ध्रुव सिंह के मृत्यु के बाद उनकर दौहित्र युगल किशोर सिंह मीर कासिम के सेना के खदेड़ देहलें।

बक्सर के लड़ाई में २२ अक्टूबर १७६४ ई. के मेजर मुनरो एक संगे मुगल शाह आलम द्वितीय, अवध के नबाब शुजाउदौला अउरी मीरकासिम के संयुक्त सेना के पराजित कके अंग्रेजन के उतरी भारत के भाग्य बिधाता बना दिहलें। एकरा बाद दहशत के, परतंत्रता के, गुलामी के, आतंक के, जबरदस्ती राजस्व वसूली, भय अउरी डर के दौर के दौर शुरू भइल।

किसान आन्दोलनः

चम्पारण के खेती आ किसानी के एह बात से समझ सकल जा सकत बा की डॉ. राजेंदर बाबू "चम्पारण में गांधी" नामक किताब में चंपारण के प्रसंशा में कहले बानी कि "बाटे इहवें एगो जगह मझउआ जहवा भात ना पूछे कउवा ।"

ब्रजबिहारी प्रसाद "चूर" जी कुछ एह तरह से कहले बानी की –

रामनगर के धनहर खेती / एक दुएक खेत रहू के पेटी,
भात बने बटुला गमकेला / चंपारण के लोग हँसेला।

www.bhojpurisahityangan.com

लार्ड कैनिंग २६ अप्रैल १८५६ के प्रजा लोगन के स्थिति के उन्नत बनावे खातिर बंगाल लगान अधिनियम के हरी झंडी देखवलस। बंगाल काश्तकारी अधिनियम १८८५ के तहत १८६२–६६ ई. ले चंपारण जिला में कईल गईल सर्वे बंदोबस्त बहुत हद तक रैयत के अधिकार के सुरक्षित कर देहलस ।१८७५ के बाद अंग्रेज लोग चम्पारण में नील के खेती के मोटा मोटी शुरुआत कर देहलें। १८८८ में बेतिया राज अंग्रेजन के नील के खेती खातिर ४१७ गो गाँव मुकर्ररी बंदोबस्त कर के दे देहलस।

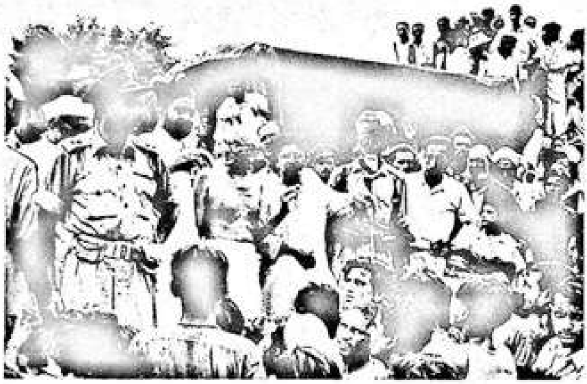

चम्पारण में नील के खेती अंग्रेज लोग मुख्यतः दू तरीका से करावे पहिला जीरात पद्धति कहाय आ दुसरका असामिवार पद्धति। एह दुनु प्रथा से निलहा लोगन के खास फायदा होखे। चम्पारण एह दौर में निलहा अत्याचार के बोझा से दबल जात रहे। चम्पारण के पकड़ी गोविन्दगंज जवन आज पूर्वी चंपारण में बा, उहवाँ के एगो किसान कवि शिव शरण पाठक एक दिन आपन फरियाद लेके बेतिया राजा के दरबार में उपस्थित भइलन आ आपन दुखड़ा भोजपुरी में सुनवलें जवन निम्नलिखित बा –

राम नाम भये भोर, मोर गाँव लिलहा के भइले।
चवर दहे सब धान, गोंयड़ में लील बोअइले।।
भये आमिल के राज प्रजा सब भयेउ दुखारी।
मिल जुल लूटे गाँव गुमस्ता और पटवारी।।
थोरका जोते बहुत हेंगावे, तापर चेपा थुरवावे।
कातिक में तैयार करावे, फागुन में बोअवावे।।
जइसे लील दुपत्ता होखे, तइसे लगावे सोहनी।
मोरहन काटत थोर दुःख पावे, दोंजी के दुःख दोबरी।।
एक उपद्रव रहले रहल, दोसर उपद्रव भारी।
सभे लोग से गाड़ी चलावे सभे चालावे तांड़ी।।
ना बाँचेला ढाठा पुअरा, ना बाँचेला भूसे।
जेकरा से दुःख हाल कहिला, से मांगेला घूसे।।
है कोई वीर जगत में धरमी, लील के खेत छोड़ावे।
बड़ा दुःख ब्राह्मण का भइले दुनू साँझ कोड़वावे।।
सभे लोग कहेला काहेला दुःख सहहूँ।
दोसरा से दुःख ना छूटत तब महाराजा से कहहूँ।।
महराजा जी प्रसन्न होइहें, छनही में दुःख छूटी।
काली जी जब कृपा करिहें मुँह बैरी के टूटी ।।

ई कविता सुन के राजा के पीड़ा के अनुभूति भइल बाकिर ऊ कुछ कर ना सकत रहलें, काहे कि सारा अधिकार अंग्रेजन के पहिलहीं दे दिहल रहे। बजार में कृत्रिम नील के अइला से नील के बिरोध त १८६३ से शुरू हो गइल रहे बाकिर १६०७ ले ई बिकराल रूप ध लेहलस।

गाँधी जी के चंपारण आगमनः

नील के आतंक से मुक्ति खातिर चम्पारण के साठी क्षेत्र के शेख गुलाब, लौरिया के शीतल राय, सतवरिया के पंडित राजकुमार शुकुल, बेतिया के राधेमल एवं पीर मोहम्मद मुनीस, लौकरिया के खेन्हर राय अउरी साथ में किसान लोग मिल के आपन विरोध प्रदर्शन करत रहे। गांधी जी ओहबेरा दक्षिण अफ्रीका से आ गइल रहलें आ उनकर नाम सगरो चर्चा में रहे। एगो विशेष व्यक्ति यमुना प्रसाद के राय राजकुमार शुकुल जी के एह राय से मिलत रहे कि गांधी जी चम्पारण के उद्धार कर सकत बाड़ें । एही क्रम में राजकुमार शुकुल जी तमाम बिकट परिस्थीति से जूझत भारतीय राष्ट्रीय कांगेस के ३१वाँ अधिवेशन लखनऊ में गांधी जी से भेंट करेके के लालसा अपना करेजा में लेहले पहुँचले । एह अधिवेशन में बिहार से राजेंद्र प्रसाद, ब्रज किशोर प्रसाद पहुँचल रहे। कांगेस के एह अधिवेशन में चम्पारण के निहला के अत्याचार पर प्रस्ताव पास भइल। गांधी जी एह बात के भरोसा दे के छोड़ देहनी की हम जल्दी उँहवा आइब। ३ अप्रैल के गांधी जी राजकुमार शुकुल जी के तार भेजनी की हम कलकता जात बानी आ उहवाँ हम भूपेंद्र बाबू के इहवाँ रुकब। शुकुल जी गाँधी जी से पहिलही उहवाँ पहुँच गइल रहलें आ गांधी जी के ई बात निमन लागल ।६ अप्रैल के राजकुमार जी गाँधी जी के राजेंदर बाबु किहाँ पटना में रुके के जोगाड़ कइनी। फेरु उहाँ का मुज्जफरपुर निकल गइनी। मुज्जफरपुर में निलहा संघ के मुख्यालय रहे। बिहार के तमाम नेता लोग मुज्जफरपुर पहुँचल। इहवाँ कुछ रणनीति कुछ बनल आ मोतिहारी के धरती पर गाँधी जी १५ अप्रैल के आपन कदम रखलें। उहाँ के संगे दू गो वकील धरनीधर बाबू आ रामनवमी प्रसाद रहले जे दू भाषिया के काम करे। गांधी जी के

www.bhojpurisahityangan.com

चंपारण अइला पर अंग्रेजी कोर्ट से नोटिस निकल आइल हाजिर होखेला । १८ अप्रैल के १९१७ के दिन चंपारण के इतिहास में यादगार दिन रहे जब गांधी जी कोर्ट के आदेश पर अपना आप के कोर्ट में सरेंडर करे पहुचलें ।

मोतिहारी कोर्ट में हजारों के संख्या में लोग टकटकी लगवले गाँधी जी के अपना भाग्य बिधाता के रूप में सुने खातिर तइयार खड़ा रहे ।गाँधी जी रैयत लोगन के दुःख आ तकलीफ देख के द्रवित हो उठलें आ कुछ करे के ठान लिहलें । इहवें से शुरुआत भइल चंपारण सत्याग्रह के आ मुक्ति मिलल चंपारण के किसान लोगन के निलहा आतंक से । 10 अप्रैल, 1917 के पहली बार महात्मा गांधी बिहार आइल रहनी। एह तारीख के एह साल सौ साल पूरा हो गइल। बिहार सरकारो गांधीजी के चंपारण सत्याग्रह के सौवाँ वर्षगांठ मना रहल बा।

साहित्य कला अउरी संस्कृतिः

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय एगो भाषा के लेके हिन्दियो आन्दोलन चलत रहे, जवना के बल देवे में सर्वाधिक जोगदान उतर भारत यू.पी. बिहार के रहे। एने के लोग अपना मातृभाषा के मोह त्याग के हिंदी के मजबूत करे खातिर हिंदी में अखबार, पत्रिका निकालें आ कविता दृसाहित्य हिन्दिये में लिखे।

रतनमाला (बगहाँ) के श्री चंद्रशेखरधर मिसिर जी भारतेन्दु के मित्र मंडली में रहनी। हिंदी में आशु कविता खातिर उहाँ के नाँव लियाला। हिंदी साहित्य के संस्कृत वृत्त में कुछ पद पहिले पहल मिसिरे जी के रहे। बेतिया राज का जमाना में ध्रुरुपद, धमार अउरी ख्याल गायन के चंपारण प्रमुख केंद्र रहे। खुद महाराजा हरेंद्र किशोर के लिखल एगो रचना ध्रुपद ताल तेवरा में मिलेला –

पावस रितु पाये दादुर उनै–उनै घनघोर गरजत
बून्द झरी लावत दामिनी कौंधत रैन अँधेरी सूझत ना कर है।
दादुर मोर शोर करत छत्रिक मिली झंकार
पवन झझकत झकझोरत तरु तोरहत पपिहा पिक टेरत वर है।

मूर्ति कला में चम्पारण के अलग शैली एगो अलगे विविधता लेले आजो खड़ा बा। सरभंग संप्रदाय से करता राम, धवल राम, भिखम राम, टेकन राम, राम स्वरूप राम, सदानंद, परम्पत बाबा, गौरीदत, मनसा राम, हरलाल बाबा, बालखंडी, भिनक राम, सीतलराम, योगेश्वराचार्य लेके बौद्ध धरम के ब्रजयान चाहे सहजयान से निकलल चौरासी सिद्ध अउरी नाथपंथी लोगन के नाँव एने आदर से लिहल जाला। भक्ति काल में छतरबाबा, केसोदास, बाबा रामजीवन दास, महाराजा आनंद किशोर, महाराजा नवल किशोर सिंह अमृत नाथ झा, रामदत मिश्र राम, भुवन झा, शम्भू नाथ त्रिवेदी, तपसी तिवारी, राम प्रसाद सिंह, बाबूलाल त्रिपाठी, कमलाधर मिसिर, लक्ष्मी कान्त चौधरी लोग प्रसिद्ध बाटे। प्रबन्ध काव्य अउरी फुटकल काव्य चाहे खातिर गणेश प्रसाद निर्भीक, शक्ति नाथ झा, हरिहर गिरी, चन्द्रशेखर धर मिसिर, अयोध्या प्रसाद खत्री, शिव शरण पाठक आ अउरी लगभग ५०० नाम बा। शोभाकांत झा के लिखल "हिंदी साहित्य को चंपारण की देन" के मुताबिक सिद्ध कवि चम्पकपा के मानल जा सकत बा। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी आ प्रो. कामेश्वर शर्मा इनका के चंपारण के मनले बाड़ें। समकालीन साहित्य लेखन में ए क्षेत्र के गोपाल सिंह नेपाली, बृज बिहारी प्रसाद "चूर", विंध्याचल प्रसाद गुप्त, ब्रजकिशोर नारायण, विमल राजस्थानी, शिव प्रसाद किरण, रमेश चन्द्र झा, विष्णुकान्त पाण्डेय, डॉ० अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा "अखिलेश" राजेन्द्र "अनल", दिनेश भ्रमर, डॉ० बलराम मिश्र, रविकेश मिश्र, डॉ० चतुर्भुज मिश्र, डॉ० उमाशंकर सिंह, हरीन्द्र "हिमकर", डॉ० सतीश कुमार राय 'अंजान', गुलरेज शाहजाद, प्रसाद रत्नेश्वर, डॉ. रेवती रमन, मधुबाला सिन्हा, एंथोनी दीपक, महेंद्र प्रसाद सिंह, महेश्वर प्रसाद सिंह (कवि जी), अशोक कुमार 'राकेश', धनुषधारी कुशवाहा, योगेन्द्र नाथ शर्मा, ओमप्रकाश पंडित, अश्विनी कुमार 'आंसु', अश्विनी कुमार 'प्रदीप' डॉ० जगदीश 'विकल', राम द्विवेदी 'अलमस्त', दिल मेहशवी, यमुना प्रसाद 'झुनझुनवाला', स्व० पाण्डेय आशुतोष, पंडित गणेश चौबे आदि लोगन के नाम लेहल जाला।

पर्यटन स्थलः

पश्चिमी चम्पारण में बाल्मीकि नगर, त्रिवेणी के घाट बागहा में, बावनगढ़ी, भिखनाठोरी, सुमेश्वर, गवनाहा के वृन्दावन, गांधी जी के भीतहरवा आश्रम, नंदनगढ़, रामपुरवा के अशोक स्तम्भ आ सरेया के सरैया मन (सरोवर) देखे योग्य मनभावन बाटे।

www.bhojpurisahityangan.com

पुरबी चंपारण के बात कइल जाव त केसरिया के बौद्ध स्तूप, लौरिया नन्दनगढ, गाँधी स्मारक (मोतिहारी), जॉर्ज ऑरवेल स्मारक, विश्व कबीर शांति स्तंभ, बेलवातिया, सोमेश्वर महादेव मंदिर अरेराज अउरी सीताकुंड पीपरा लगे बा आ ई सब भी मनोरम स्थान बा। एक बेर जे चम्पारन आवेला ओकर मन चंपारण में रम जाला । ओकर मन करेला की हम चम्पारणे के बन के रह जाईं।

आज के चम्पारण:

१६७१ में चंपारण पुरबी आ पश्चिमी में बाँट देहल गइल। जिला बटाइल बाकिर दिल ना त बटाइल बा ना कबो बँटाई। आज के चम्पारण भारत के फलक पर हर क्षेत्र में आपन मजबूत स्थिति दर्ज करवले बा। राजनितिक इच्छा शक्ति के उदासीनता के कारण आजो चम्पारण पलायन के दरद से कुहकत बा। एकरा बादो ऊ संघर्ष से हिम्मत नइखे हरले ।

शिक्षा होखे, बिज्ञान होखे, व्यापार होखे, पत्रकारिता होखे, सिनेमा होखे चाहे बात प्रोद्योगिकी के होत होखे चम्पारण के बेटा बेटी हर क्षेत्र में आपन सफलता के झंडा हौसला के संगे बुलंद कइले बाड़ें।

इंजीनियरिंग कॉलेज होखे चाहे बात मेडिकल कॉलेज के होखे चंपारण में शिक्षा के अच्छा अवसर मिल रहल बा।

पिछला दू दिन दशक में केंद्र चाहे राज्य सरकार में चम्पारण के मजबूत नेता ना हो सकला से विकास के रफ्तार तनी धीमा हो गइल बा। बाकिर ना त उम्मीद मद्धम पड़ल बा नाही अरमान।

अपना प्राचीनता आ गौरवशाली भविष्य पर हर चम्पारनी के गर्व आ गौरव के अनुभूति होला आ एही मजबूत बिरासत से आगे के मार्ग प्रसस्त करे योग राह भी लउकेला।

सन्दर्भ:

१. चम्पारण में गांधी : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
२. चम्पारण साहित्य और साहित्यकार : रमेश चन्द्र झा
३. चंपारण की साहित्य साधना : रमेश चन्द्र झा
४. हिंदी साहित्य और बिहार : आचार्य शिवपूजन सहाय
५. हिंदी साहित्य को चम्पारण की देन : शोभाकांत झा
६. बेतिया राज्य और चम्पारण के किसान : डॉ बादशाह चौबे

••

लक्ष्मन नगर, पथरी घाट बेतिया, बिहार पिन -845438

कविता

मँगरू के बाछा

(गँवई विसंगति)

हीरालाल 'हीरा'

झंखेले मँगरू जी धइले कपार
'कइसे बिकाई इ बाछा हमार!

खुद्दी से खरी ले ठेलि के खियवले
बेकतिन के मुँह जाबि, दुधवो पियवले
लड़िकन ले बेसिये उ कइले दुलार !

लगहीं बगलिये में, जोखना क पाड़ा
ओकरा बहेंगवा क अवरू बा गाड़ा
तवनो परले गँहकी कोड़े दुआर !

राखीं कि एकरा के छोड़ीं अनेरिया
सूझे न राह घाट, लउके अन्हरिया
लागत बा अब ईजति होई उधार !

उल्टा जमाना, समइये के फेर
गदहा क मोल भइल घोड़ो ले ढेर
ओकरे बनल बाटे सगरे सुतार !

कइसे बिकाई इ बाछा हमार !! ••

भारतीय स्टेट बैंक, सिटी, बलिया-277001

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरिया नारी, संस्कृति आ लोकगीत

✍ केशव मोहन पाण्डेय

भारत के माटी से लेके उपज ले, पहनाव–ओढ़ाव से लेके बोली–व्यवहार ले, रंग–रूप से लेके चाल–ढाल ले, सबमें विविधता देख सकल जाला। ई विविधता भोजपुरी की गहना बन जाला। एगो अलगे पहचान बन जाला। इहे विविधता तऽ भोजपुरी संस्कृति के विशिष्टता देला आ अलग पहचान बनावेला। भोजपुरी संस्कृति आ पहचान के कवनो बनल–बनावल निश्चित ढाँचा में नइखे गढ़ल जा सकत। ई तऽलहरत–बलखात अल्हड़ नदी जइसन कवनो बान्हो से नइखे घेरा सकत। ई तऽ ओह 'वसंती हवा' जइसन बावली, मस्तमौला आ स्वतंत्र हऽ, जवना पर केहू के जोर ना चलेला। एकरा कवनो दिशा–निर्देश के माने–मतलब पता नइखे। एह संस्कृति के केहू गुरू नइखे आ ना एह के कवनो बात के गुरूरे बा। ई तऽ बस जन–मानस के अंतस से निकलल एकदम निरइठ आ पावन मानसिकता आ भावुक–सरस सोच के देखेवाला हमनी के पहिचान हऽ। भोजपुरी संस्कृति में संबंधन के दायरा खाली अपना कुनबा आ आसे–पड़ोस ले ना होला, दोसरो गाँव के लोग 'फलाना' काका, चिलाना चाचा, भाई, ईया, फुआलागेला लोग। हमनी के रिश्तवे जस संस्कृतियों के परंपरा हियरा से बा।

आदमी के सपना आ ओकर इच्छा समाज अउरी इतिहास से प्रभावित तऽ होला, बाकिर समाज अउरी इतिहास से बान्हाइल ना रहेला। एही से तऽ आदमी सपनों के दुनिया बसाऽ लेला। इतिहास के कवनो काल–खंड होखे चाहे समाज में फइलल कवनो विचारध ाारा, स्त्री–पुरुष, नर–मादा, मरद–मेहरारु में भेदभाव साफ–साफ लउकेला। एह दूनो के पहिनाव–ओढ़ाव से लेके सामाजिक सीमा ले में भेद बा। ई भेद समय के साथे आज टूटत बा, तबो जीवन के कवनों कोर अइसन आवेला, जहाँ भेद सोंझा आइए जाला। एह सामाजिक आ पारिवारिक भेदवे के चलते जहवाँ पुरुष अपना सपना पर नगर, महल, स्मारक आ नया–नया राजवंशन के उदय करत रहल बा, ऊहवें औरतन के सपना आ इच्छा लोकगीतन में दर्ज होत रहल बा।

हम अपना बाप–महतारी के सबसे छोट संतान हँई, जवना कारने ओह लोग से हमार सन्निकटता ओह लोग के प्रौढ़ावस्था से वृद्धावस्था ले बनल रहल। हम कई बेर अनुभव करीं कि माई जब कवनो विषम परिस्थिति में पड़ जाव तब ना केहू पर चिल्लाव, ना बाबुजी से लड़े आ ना कवनो कोप–भवन में जाव, बाकिर ओह बेरा गीत गावे लागें। हम सुनी ऽतहमरा बाल–मन के बुझा जाव कि ओह बेरा माई के गीत खाली गीत ना हो के उनका अंतर के पीड़ा होखे। हमके साफ–साफ ईयाद बा कि ऊ गीत गावल कम, गीत रोअल अधिका लागें। कवनो विषम–परिस्थिति में ऊ अपना के द्रौपदी लेखा प्रस्तुत करत गावे लागें –

अब पति राखीं ना हमारी जी,
मुरली वाले घनश्याम।।
बीच सभा में द्रौपदी पुकारे
चारू ओरिया रउरे के निहारे
दुष्ट दुशासन खींचत बाड़ें
देहिंया पर के साड़ी जी,
मुरली वाले घनश्याम।।

जब माई हमरा के सुतइहन तब लगभग हमेशा गीत गइहें। उनका गीतिया के बोलवे से हमरा बुझा जाव कि उनका मन में एह बेरा हर्ष–उल्लास, पीड़ा–वेदना, ममता–दुलार आदि कवना भाव के अधिकता बा। जब ऊ सहज रहिहें तब आपन सबसे प्रिय गीत जवना में सिंगारों रहे, प्रेमो रहे, ऊहे गीत गइहें –

अजब राउर झाँकी ए रघुनन्दन।।
हिरफिर–हिरफिर रउरे के निहारे
रउरे ओरिया ताकीं ए रघुनन्दन।
अजब राउर झाँकी ए रघुनन्दन।।
मोर मुकुट, मकराकृत कुण्डल
पैजनिया बाजे बाँकी ए रघुनन्दन।
अजब राउर झाँकी ए रघुनन्दन।।

खाली हमार माइए ना, आस–पड़ोस के ढेर मेहरारू सहज रूप में गीत गाऽ के आपन दिनचर्या करे लोग आ सहज बनल रहे लोग। एह आधार पर हमरा तऽ लोकगीत आ लोक–साहित्य के समृद्धि में सबसे अध िक औरतने के योगदान बुझाला। उदाहरण के रूप में हम अपना माई के ईयाद कऽ के कहीं तऽ कवनो परब–त्योहार के बेरा जब भैया लोग घरे ना पहुँचे लोग चाहें आवे में देरी हो जाव तऽ हमार माई पूरा के पूरा कौशल्या बन जासु। ऊ कौशल्या, जेकरा राम के समय रूपी कैकेयी वन में भेज देहले बिया। ओह बेरा तऽ माई गावते–गावते इतना रोअस कि गरेऽबइठ जाव, –

www.bhojpurisahityangan.com

केकई बड़ा कठिन तूँ कइलू
राम के बनवा भेजलू ना।
हो हमरो केवल हो करेजवा
तुहूँ काढियो लेहलू ना।
हमरा राम हो लखन के
तुहूँ बनवा भेजलू ना।
हमरा सीतली हो पतोहिया
के तूँ बनवा भेजलू ना।
केकई बड़ा कठिन तूँ कइलू
राम के बनवा भेजलू ना।।

ओह बेरा हमहूँ उनका से छुप के उनका दर्द भरल गीतन के सुनीं आ पलक से टपके खातिर तइयार भइल लोर के पोंछ के कतहूँ दूर हट जाईं। लोकगीतन के बेर–बेर सुनके आ ओहमें आइल मुद्दन पर उनकर सोच आ संवेदना के तऽ ना, बाकिर अपना माई के एगो केंद्र मानके बहुत कुछ समझले बानी। हमरा पूरा विश्वास बा कि लोकगीतन के मरम समझे वाला हर आदमी अइसने अनुभव से गुजरत होई। औरत लोग के गावे वाला लोकगीतन के स्वभाव हऽ कि ओहमें बहुते बड़को बात अक्सर कवनो साधारण घटना–प्रसंग के जरिए, बाकिर अनुभूति के गहनता से कहल जाला। गीतन के अंत में एकाध गो अइसन पंक्ति आ जाला, जवना से पहिले के साधारण घटना–प्रसंगों असाधारण रूप से महत्वपूर्ण बन जाला। लोकगीतन में जीवन–जगत के बड़का–बड़का तथ्य वस्तुनिष्ठ सहसंबंधन के बहाना से कहल जाला। आज के औपनिवेशिक आधुनिकता के पहिले सृष्टि आ समाज तऽ का, परिवार के भारतो के अवधारणा खाली मनुष्य पर केंद्रित नइखे रहि गइल। ओह बेरा तऽ आदमी के भौतिक सुख–समृद्धि खातिर खाँची भर प्राकृतिक उपादानन के बेहिसाब दोहनो के परंपरा नइखे, बाकिर प्रकृति के अवयवन के साथे प्यार, पारस्परिकता आ सहनिर्भरता के जीवन जीये पर जोर रहल बा। एही कारने तऽ अपना किहाँ गंगा मइया बाड़ी, बिन्हाचल देवी बाड़ी आ लगभग सब जाति–प्रजातिअन के पेड़न पर कवनो ना कवनो देवता के बास आ घर–दुआर मानल जाला।

नारी के बिना कवनो देश, समाज आ वातावरण के लोक–संगीत के जीरो आ खार कहल जा सकल जाता। भोजपुरियो–संगीत में नारी के अनगिनत रूपन के चर्चा का बरनन देखल जाला। भोजपुरी के सिंगार, करुणा, वीर, हास्य, निरगुण संगीत होखे चाहें आजु काल्ह के फिल्मी ठुमका, सगरो झाँझ, पखावज, हारमोनियम, बैंजू, गिटार नारीए के आगे–पाछे अपना सुर के साधना करत लउके ले।एकरा बादो भले केहू हिम्मत कऽ के दिल खोल के आ जबान के ताला तुर के स्वीकार ना करे, बाकिर आजुओ ढेर लोग बा कि जब घर में बेटी के जनम होला तऽ ओह लोग के लागेला कि जिनगी में अन्हार हो गइल। महतारी बनल औरत जवन भोगले रहेले, ओह कारने अपनही के कोसे लागेले कि अगर ऊ जनती कि बेटी होई तऽ कवनो जतन कऽ के ओह मासूम के कोखिए में मार देती। बेटी के जनम के खबर पा के बाप मुँह लटका लेले। ई गीतिए समय के कोख में दबाइल समाज के चित्र आ दस्तावेज बा। एगो गीत देखीं ना –

जब मोरे बेटी हो लीहलीं जनमवाँ
अरे चारों ओरियाँ घेरले अन्हार रे ललनवाँ
सासु ननद घरे दीयनो ना जरे
अरे आपन प्रभु चलें मुरुझाई रे ललनवाँ।

अब ई साफ–साफ बुझाए लागेला कि समाज में बेटी के जनम से दुखी भइला पर, एह के खराब माने के आदत के एगो सीमा से अधिका बढ़े से रोके खातिर ओही समजवा के भितरीये एगो लोक–विश्वास उभरेला। लोग के बुझइबे ना करेला कि बेटी जनमला पर बाप–महतारी चाहे कुल–खानदान के लोग दुखी काहें होलें? चिंता काहें करेंले? वइसे तऽजनमला के बाद बेटियो माई के कोख से जनमल, ओकरे खून–दूध से सिरजल आ पैदा भइल एगो संतान होले। ऊहो एगो बेटे जइसन अपना बाल–लीला से बाप–महतारी के करेजा जुड़इबे करेले। ओकरा प्यार–दुलार में बाप–महतारी जीवन के सगरो पीड़ा, भले तनिए देर खातिर, भूला जालें।

ई सब भारतीय परंपरा से मान्यता प्राप्त संवेदना आ भावना हवे। आधुनिकता के साथे एगो आदर्श भारतीय परिवार के आदर्श स्त्री बनावे के अभियान के सथवे संवेदना आ भावना घटल बा। भावना स्त्री बनवला के, भावना लोक–गीतन के, भावना समानान्तर सहभागिता के। समय के साथे चले के होड़ लगावत आज के आदमी तर्क चाहे कुछू दे व बाकिर लोक–जीवन, लोक–साहित्य आ लोक गीतन के स्वरूप तऽ विकसिते भइल बा। समृद्धो भइल बा। लोक–गीत आ लोक–अस्तित्व आधुनिक तार्किक सोच के परिणाम ना हऽ। एकरा के तऽ बरिसन पहिले पोषित कइल गइल बा। ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध पुरुष सूक्त में 'लोक' शब्द के व्यवहार जीवन आ जगह दूनों के अर्थ में कइल गइल बा। –

नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत्।
पदभ्यां भूमिर्दिदशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन्।।

www.bhojpurisahityangan.com

एह तरे के अनगिनत उदाहरणन से साफ हो जाता कि सामान्य जीवन आ स्थान से जुड़ले संगीत के लोक–संगीत कहल जाला। गाँव–जवार के लोग संस्कार, ऋतु, पूजा–व्रत, अउरी दोसर कार्यकलाप के अवसर पर जब अपना मन के भावना के उदगाार गाऽ के करेला लोग तऽ अइसही लोक–संगीत के सृजन हो जाला। लोक–संगीत सभ्यता, संस्कार आ समाज के समृद्ध करे के साथे–साथे बोली, भाषा आ भावो के एगो अलगे पहचान देबे में सक्षम होले। भोजपुरी लोक–संगीत के तऽ अपना सरसता, मादकता, समृद्धि, उन्माद, अपनापन, ठेंठपन आदि के कारने सबसे समृद्ध कहल जा सकल जाता। जन–जन में अपना प्रचुरता, व्यापकता आ पइठ के कारने भोजपुरी लोक–संगीत के प्रधानता स्वाभाविक बा। लोक–संगीत के ईऽ स्वभाविकता निश्चित रूप से खाली नारी के कारण बा। दहलीज ले दबल नारी अपना राग–अनुराग, अमरख, ममता, दुख–दरद, इच्छा–अनिच्छा, सबके अभिव्यक्ति गीतन से करत रहल बाड़ी। ऊऽ अपना घरवे में दँपाइल घर–परिवार के चिन्ता करत रहल बाड़ी। अपना सासो–ननद के चिंता बाऽ तऽ अपना अनपढ़ पति के पढ़ाहूँ के चिंता बाऽ। ओही भाव के एगो स्रोत देखीं –

मजूरी कई के/हम मजूरी कई के
जी हजूरी कई के
अपने सइयाँ केऽऽ/अपने बलमा के पढ़ाइब
मजूरी कई के।।

भोजपुरी के भौगोलिक स्थिति पुरूब के बाऽ। भोजपुरी पुरूब के बोली हऽ। पुरूब! जहवाँ के माटी सदानीरा के लहर आ रस से हमेशा आप्लावित रहेले। अब देखीं नाऽ, जब मटिए सरस होई तऽ संगीत के सुर में नीरसता कहाँ समाई? जब सरसता, मादकता, सुन्दरता, प्रेम, ममता, समर्पण, परिश्रम, जीवटता, जीवन आदि के बात आई तऽ जीवन देवे वाली, जीवन भोगे वाली आ जीवन बनावे वाली नारी केऽ तरे बँच जाई? ––––चाहे कवनो सभ्य आ चाहे असभ्य समाज होखे, हर हाल में नारी तऽ जीवन के आधार होले। लोक–संस्कृति, लोक–संस्कार, लोक–जीवन नारीए से जीअता, तऽ लोक–संगीत ओह देवी के बिना के तरे हो सकेला? नारी तऽ अपना सब दुखवो में सुख के बहाना जोह लेली। प्रसव के पीड़ा के बाद सोहर के सुखद अनुभूति नारी के स्वभावो हऽ आ संस्कृतियो हऽ। सोहर में नारी के एगो रूप देखीं –

मचिया बइठल मोरे सास
सगरी गुन आगर हेऽ।
ए बहुअर, ऊठऽ नाही पनिया के जावहू
चुचुहिया एक बोलेलेऽ हेऽ।।

भोजपुरी लोक–संगीत में बरनन चाहे ऋतुअन के होखे, चाहे व्रत–त्योहार के, चाहें देवी–देवता के, चाहें संस्कार के, जातियन के होखे चाहें मेहनत–मजूरी के, हर कर्म में नारी के सहभागिता रहेला आऽ ओह सहभागिता के गीत में नारी के सगरो रूप मिल सकेला। भोजपुरी लोक–संगीत आल्हा भले वीर रस से सराबोर रहेला तऽ का हऽ, नारी विवशता, अधिकार, सुन्दरता आ समर्पन के बहाने लउकीए जाले, –

जाकी बिटिया सुन्दर देखी, ता पर जाई धरे तरवार।।
या
चार मुलुकवा खोजि अइलो कतहूँ ना जोड़ि मिले बार–कुँआर
कनिया जामल नैनागढ़ में राजा इन्दरमल के दरबार
बेटी सयानी सम देवा के बर माँगल बाघ झज्जार
बड़ी लालसा बा जियरा में जो भैया के करों बिआह
करों बिअहवा सोनवा सेऽ ––––––।।

फगुआ आ चइता में भले नारी प्रेम के वर्णनन मिलेला तऽ काऽ, ओह गीतन के एक–एक शब्द जइसे नारीए से जनमल बा। चइता में वियोगी नारी होखे भा फगुआ के मांसल रूपवती नारी, सगरो आकर्षण के बादो ओकरा हया के वर्णन मिलेला। समय के साथे नारी के माथे से सरक के अँचरा भले कंधा से उतर के गिर गइल होखे, बाकिर लोक–गीतन में नारी के रूप आ सुन्दरता के एगो आलंबन के माध्यम बाऽ। एगो गीत देखीं नाऽ–

गोरी भेजे बयनवा हो रामा
अँचरा से ढाकि–ढाकि के।।

सावन में ढेर परब–त्योहार होला। ओहमें कजरी के एगो अलगे रूप–रंग होला। ई त्योहार मध्य भारत में खासकर बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ आ उत्तर प्रदेश में बड़ा धूमधाम से मनावल जाला। अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग ढंग से मनावे वाला कजरी कहीं पुत्रवती नारी तऽ कहीं सगरो सुहागिन मनावेली। ओह दिन कई जगह तऽ औरत लोग पतई के दोना बनाके खेत से माटी भरके लेआवेला लोग। ओहमें जौ बोअल जाला। कई जगह चावल के घोल से चौक पुरल जाला आऽ एकरा सथवे झुलुआ के तऽ बहार रहबे करेला। सावन के हरिहरी में सगरो भोजपुरिया धरती लहलहात रहेले, तब कवनो नवही मेहरारू अपना सुहाग से दूर ना रहे के चाहेले। कजरी के गीतन में नारी के प्रेयसी स्वरूप

www.bhojpurisahityangan.com

के देख के केकर मन ना द्रवित होई, –

भइया मोर अइलें बोलावे होऽ

सवनवा में ना जइबें ननदी।

चहें भइया रहें चाहें जाएँ होऽ

स्वनवा में ना जइबें ननदी।।

भोजपुरी–क्षेत्र में मनावे वाला सगरो व्रत–त्योहारन में नारी के पावन रूप के बरनन अपने आपे लउक जाला। व्रत–त्योहार तऽ वइसही स्त्री के निष्ठा के प्रतीक हऽ, तऽ फेरू ओहसे नारी अलगा के तरे हो सकेले? भोजपुरी माटी के सबसे पावन व्रत छठ में करुणा से सनाइल, छठ माता के आशीष पावे के आग्रही एगो नारी के चित्रण देखीं, –

पटुका पसारि भीखि मँगेली बालकवा के माई

हमके बालकऽ भीखि दींहि, ए छठी मइया

हमके बालकऽ भीखि दींहि।

निर्गुण में तऽ नारी आत्मा बन जाली। ऊहे वाचको रहेली, ऊहे याचको रहेली। दाता अउरी भिखारी, सब नारी रहेली। प्रभु से प्रीति व्यक्त करे खातिर नारी के कोमल मन के जरूरत पड़ेला। एगो निर्गुण देखींऽ, –

जबसे गवनवा के दिनवा धराइल

अँखिया ना नींद आवे

देंह पिअराइल।।

हम कह सकेनी कि नारी चइता के बिरह हऽ। ऊ लोरी के थाप हऽ। नारी निरगुन के छंद हऽ। ऊ कँहरवा के कलपत पीड़ा हऽ। पचरा के झूमत भक्तिन हऽ। आल्हा के मर्दानी अवतार हऽ। नारी फगुआ के मांसल मतवना हऽ। छठ के समर्पित शुचि–सुशीलता हऽ। ऊहे विदाई की लोर हऽ। सोहर के सद्यः–प्रसूता ममता हऽ। बिरहा के अलाप हऽ। झूमर के भाव व्यंजना हऽ। जँतसार के ध्वनि पर नाचत राग नारीए हऽ। नारी बारहमासा के वर्णन हऽ। निर्धनता के आह नारीए व्यक्त करेले। रिश्तन के सगरो डोर नारीए सम्हारे ले। भोजपुरी के कवनो लोक–गीत के बात कइल जाव, नारी के रूप पहीले झलकेला। ननद–भौजाई के टिभोली होखे चाहें सास के शासन, देवर के छेड़छाड़ होखे, चाहे जेठ के शील–श्लील आ बदमाशी, नारी के उपस्थितिए से लोक–संगीत में इनकर बरनन संभव होखेला।

कुँआर लड़की भाई के शुभ के खातिर कातिक में पिड़िया के व्रत रहेली सों तऽ महतारी लोग अपना पूत के रक्षा खातिर जिउतिया। मेहरारू अपना सुहाग के रक्षा खातिर तीज व्रत रहली सों तऽ एही तरे औरतन में बहुरा आ पनढरकउवा जइसनका ढेर व्रत–त्योहार देखल जाला। नारी के माध्यम से भोजपुरी लोक–गीत में जन–जीवन के आर्थिको पक्ष के झाँकी प्रस्तुत हो जाला। देखीं ना, –

सोने के थाली में जेवना परोसलों,

जेवना ना जेवें अलबेला,

भोजपुरी लोक साहित्य में नारी के जवन चित्रण कइल गइल बा, ऊ मांसल, मादक आ आकर्षक भइला के साथे–साथे रसदार, शिष्ट आ सभ्यो बा। पति–पत्नी, भाई–बहिन, माई–बेटी, ननद–भौजाई, सास–पतोहके जवन बरनन हमनी के सामने मिलेला, ओह से समाज में नारी के अनगिनत चित्र अंकित हो जाला। नारी के जवना रूप के शुद्ध आ सत्य बरनन भोजपुरी लोक–गीत में पावल जाला, ऊ दोसरा जगे दुर्लभ बा।

समय के साथे बदलाव के बयार के गंध सभे सूँघता। भोजपुरी के लोक–संगीतो ओह से अछूता नइखे। व्यावसायिकता आ बाजारू संस्कृति लोकगीत–संगीत के कुछ रंगीन कऽ देहले बा। भोजपुरीओ लोकगीत–संगीत पर आधुनिकीकरण के मुलम्मा चढ़ाके बाजार में परोसल जाता। मांसलता के वर्चस्व के साथही रसदार रूपो के बिसारल जाता। भोजपुरी जइसन गंभीर आ समृद्ध भाषा के दूषित कइल जाता। भोजपुरी भाषा, भाव आ संगीतो में रोज नया–नया जीए–खाए आ दू पइसा कमाए के अवसरो सृजित कइल जाता। नारी के अनेक रूपन के बरनने से भोजपुरी के लोक–संगीत के अतीत तऽ समृद्धे बा, वर्तमानो में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो ता। एह आधार पर कहल जा सकता कि अगर अपना जबान आ कलम पर संयम रहल तऽ आवे वाला आपनो काल्हू बड़ा उज्जर बा। सचहूँ कहल गइल बा कि हर सफलता के पाछे एगो नारी के हाथ रहेला। एकरा के मानला के साथही स्वीकारो करे के क्षमता राखे के पड़ी। नारी से तऽ ई सृष्टि बाऽ, संस्कृति बाऽ, गीत–संगीत बाऽ। बस खाली पीड़ा ईहे बाऽ कि आज नारी आगे बढ़ रहल बाड़ी बाकिर ओही समाज में आजुओ गजरा–मुरई जस कचरातो बाड़ी, कुँचातो बाड़ी। ••

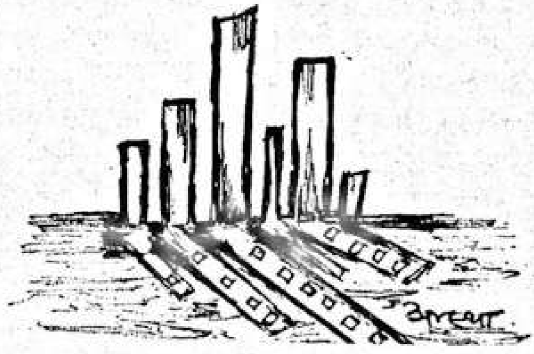

www.bhojpurisahityangan.com

कहे के त सब केहू आपन

डा० [illegible] सिंह

"का हो बहीन बेटा क बिआह करत हऊ तब्बो ना केहू के मन से पूछत हऊ? टेशन प जोहत –जोहत उबजिआय गइलीं हँ जा। घामे में परेसान घंटन ठाढ़ रहले प त रेक्सा वाला भेटाइल ह। गोड़धरिया करत–करत त केहुतरे आवे के तइयार भइल ह। छुट्टा पइसा ना ह हमरे लग्गे। होखे त तनी ओकर केराया दे देतू।" सीढ़ी चढ़त, हँफत–बोलत कान्ही प झोरा टंगले अपने लइकी के संगे पारबती चलल आवत रहलीं।

"सब केहू तोहरिहिं नियन नबाब हो जाई त कइसे काम चली। ई ना सोचलू ह कि बहिन परेसान होई, महीना भर पहिलहीं चल के तनी हाथ बँटा देहीं। अइलू ह बिआह ले एक दिन पहिले अउर अइते बहिन के तारे लगलू। माई–बेटी के ई ना बुझाइल ह कि कार–परोजन क घर ह। पचास ठो परपंच होई। हीत–नात अइहन। बाहर–भीत्तर सम्हारे के होई, हाट–बजार जाये के होई। कइसे बहिनिया अक्केले कुल सम्हारी ?" ओरहन देवे में लीन बहिन पारबती के पनियों के ना पुछलीं। एहर–ओहर घूम–घूम के कुल समान सईहारत रहलीं। पारबती क पियासन तारू चटके लागल। जब ना रह गइल त कहलीं– "तब्बे ले बोलत–बरबरात हऊ एक्को बेरी पनियो के ना पूछत हऊ। पियासन परान जात हऽ अउरी तोहके अपने लउकत हऽ बहीन। अइसन कठकरेज त ना रहलू ह हो।" पारबती बहीन से हंसी–मजाक करे लगलीं।

"आछा त तोहूँ के पानी पूछे के परी।घरहीं क न हऊ कि मेहमान हऊ हो ? कीचन में डब्बा भर के बरफी–पेठा रखल ह। सज्जे कंडाल पानी से भरल ह। जाके हीक भर खा पिया लोग। का रे सिम्पिया अब तोहूँ के नेवता देवे के पड़ी? जो उठ पानी पिया संन अउरी चाह–वाह बना के ले आऊ।' पारबती के बहीन से ई ब्यवहार क आसा ना रहल, उनकर लइकियो मउसी के बाउर जस टुकुर–टुकुर ताकत रहे।चाह बनावे क आदेस पाके ऊ रसोई में धऊड़ गइल।

पारबती फोने प बहीन क सनेस पाके भागल चल आइल रहलीं। दुन्नू जानी बस साल भर एक दोसरे से छोट–बड़ रहलीं। पारबती से बहीन एक्को बार ना पुछलीं कि पाहुन काहें ना अइलन ह। लभलिया अउर पिंकिया काहें ना अइली हं। मिंकुआ काहें ना आइल ह।कुल घर हीतनात से भरल रहे ।जेठ क महीना रहे। कूलर–पंखा चले त तनी राहत मिले, नाही त सब केहू जलबिन मछरी नियन तड़फड़ाये लागे। एक्के कमरा में एसी लागल रहे सब ओही में ठूँसायल रहे। सिंपियो जाके एक जानी के गोड़तारी अँड़स गइलीं। बहीन जब कुल काम धाम निपटा के सुत्ते अइलीं त पारबती भी पीछे लागल चल अइलीं। एसी वाला कमरा में गोड़ धरे के जगह ना रहे। बहीन देख के आग हो गइलीं–

'का रे सिम्पिया तोहूँ के एसी चाहत ह। एहि में अड़सल हई। गउँआ में कइसे रहेली रे बिना लायट–पंखा के? चल जो,दोसरे कमरा में । तनी ढ़रके दे।' सिम्पी गोड़तारी सुतल रहलीं उनके समझ ना आइल कि हेतना अदिमी में खाली उनही के काहें उठावल जात ह। एक बेरी ऊ माई ओरी तकलीं फीर उठ के दोसरे कमरा में चल गइलीं। पारबती बहीन के बेहवार से दुखी रहलीं बाकिर बेटी से कुछ कहे के हिम्मत ना पड़ल। रात भर रोअत–सिसकत भोर हो गइल।

'ए सिम्पिया सुनीला तू बड़ा नीक मेहँदी लगावेली। एहि से कवनो पारलर वाली के ना बुलवले हई। जवन पइसवा ओके देब ऊ तोके नेग में दे देब। हँ कि ना?' मउसी सिम्पी के पुचकरलीं।

'नेग–वेग छोड़ा मउसी, भाई क बिआह हऽ हम त अइसहूँ सोच के आइल रहलीं हँ कि खूब नाचब–गाइब अउर तोहके सजाइब।' सिम्पी मउसी से खुसी–खुसी मेहँदी क कुप्पी ले लिहलीं अउर दिन भर बिना खइले–पिअले सबके रच–रच के मेहँदी लगवलीं। नचली–गवलीं। बरात निकले से पहिले तक सबके सजवलीं। बीच –बीच में पारबती आके टोक जांय–'दिन भर लगल हई तनी चलके कुछ खा ले बचिया।'

सिम्पी माई क एक्को कहना ना माने, बस उनके एक्के धुन रहे कि कैसे मउसी उनसे खुस हो जायँ। मउसी सिम्पी से साँचो खुस हो गइलीं। बक्सा में से निकाल के आपन पुरान बनरसी साड़ी पहिरे खातिर देवे लगलीं त पारबती टोकलीं।

'रहे दा बहिन फराक–सूट ले आइल हवे पहिने के। कुल आरटिफिसल गहना क सेट लगउले हवे। सारी पहिनी त कुल एकर तइयरिया डाँड़ न हो जाई।' कहके पारबती हँसे लगलीं। बाकिर बहिन खुनुसा गइलीं–

'खाये के त अँटबे ना करेला। एतना ठाठ कइसे निबहेला हो सिम्पी। अबहीं ले त सिम्पी मउसी क बोली –टीबोली हँसके बरदास्त कइले चलल चल जात रहलीं, बाकिर एना पारी मारे हिचक–हिचक के रोये लगलीं।

www.bhojpurisahityangan.com

पारबती से अब बरदास्त ना भइल सिम्पी क बाँह खींचत आड़े ले गइलीं अउर लगलीं मारे। मारत जाँय अउर रोअत जाँय–"जो अब ना मउसी क लऊड़कम करबी। जाके अउरी घूम पाछे–पाछे। नचनिया जस गाव–नाच। अरे हमार करम ना फुटल रहत त हमार ई हाल होत। भगवान जी हमहूँ के अन्न–धन देले रहतन त का एतरे सब हीन समझत। तोरो बाबू कमअइतन त ई हाल होत? सगरी जिनगी चूल्ह झोंकत बीत गइल। फाटल–पुरान पहिनत रंग–रुप झंवा गइल। बाकिर तोहन लोगन के कवनो दिक्कत–परेसानी में ना पंड़े दिहलीं। खेतिये–किसानी से जवन जुरेला ओही में हमहन खुस हईं जा। केहू से माँग के खाईला जा का कि सब हमहन क पहिरल–ओढल निहारत हऽ।" पारबती बेटी के बहाने बहीन के सुनावे खातिर जोर–जोर से रोअत–चिचियात रहलीं।जब बात बढे लगल अउर हीतनात मजा लेवे लगलन त बहीन पारबती के मनावे गइलीं।

'सादी–बिआह क घर ह रे परबतिया काहें असगुनाह नियन रोअत हईं। अरे आपन खून हईं तू त। तोहूँ के अब बोले में जोगावे के परी। चल उठ हाथ–मुँह धो अउर तइयार हो जा। जो रे सिम्पिया। हई देखा अब मउसियो से रंज होवे लगल ई।' बहीन ठठाके हँसे लगलीं। परबतियो आँस पोछत तइयार होखे लगलीं। बाकिर सिम्पी तइयार ना भइलीं त उनकर मउसी खुनुसाये लगलीं–

'चलबू कि ना। हीतनात के समान से घर भरल ह। केहू क कवनो समान हेरा जाई त सब तोहरहीं के अछरंग लगायी।' सिम्पी क आँख भर आइल।

'हम चोर हईं का मउसी, ई हमार घर ना ह, अपनहीं घर में केहू चोरी करेला का ?' मउसी बारात भेजे के हड़बड़ी में रहलीं। केहू तरे सिम्पी के मनावल चाहत रहलीं बाकिर सिम्पी ना मानलीं त पारबती के भी संगे रुकेके पड़ल। रात भर दुन्नु जनी जाग के घर अगोरलीं। भोरे बरात आ गइल त पारबती के परिछन खातिर बोलावल जाये लगल बाकिर ऊ नीचे ना अइलीं। दुलही देखावल जात रहे सब नेग दे भइल। अंत में, चमचमात नया डिजाइन क खूब भारी झुमका जब पारबती दुलही के मुंह देखाई दिहलीं त सब आँख फाड़ के देखे लगल। बहीन त एतना खुस भइली कि पारबती के अँकवार में भर लिहलीं–

'हम एही से न कहीला सबसे कि भले भगवान हमरे बहीन के कम देले हउवन बाकिर एकर करेजा बहुत बड़ ह।' बहीन हँस–हँस के सबसे पारबती क गुन गावत रहलीं बाकिर पारबती क आँख भरि–भरि आवे।

••

एस–8 / 108, आर–1, डी.आई.जी., कॉलोनी,
खजुरी,वाराणसी–221002

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.......

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजीं अउर paati.bhojpuri@gmail.com, ashok.dvivedipaati@gmail.com पर मेल करीं।

(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे। आपन संक्षिप्त परिचय आ नया फोटो साथ में भेजीं। (रजि0 डाक से)

(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।

(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट रजि0 डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।

(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

www.bhojpurisahityangan.com

कहनी गइल बन में, सोच अपना मन में

आशारानी लाल

बेटी जनमली हऽ। केहू कहल कि देबी आइल बाड़ी, केहू कहल लछिमी जी अइली हऽ। तऽ केहू दुर्गाजी कहल। अवरियों लोग जे जानल आ देखल – उहो कुछु न कुछु कहबे कइल। बेटी भइल बाड़ी–ई केहू ना कहल, चाहे कहबो कइल तऽ कमे लोग, आपन मुँह दबाइए के बोलल लोग कि लइकनी भइली हऽ। जनमतुआ बेटी देबी बनली – बाकी बेटी नाऽ।

ई कुल नाँव सुनला के बाद जब कहवइयवा के मुँह ओरी बेटी तकली, तब उनका बुझा गइल कि एक सब नँउवाँ में केतना घिरना, उपेक्षा, दुराव, फटकार आ पीड़ा भरल बा, एहीसे सब मुँह बिचकाइए के ई बात बोलता। देबी अइली – तबो, घर में कबो नीक से सोहर गाके उनकर स्वागत ना भइल। सोहर क जगह मायूसी ले – लेलस। सबका हियरा में उदासी समा गइल। देबी, दुर्गा आ लछिमी जी क दसोनोह जोड़ के अगर सुआगत के हुए कइल –तऽ ऊ रही उनकर माई, चाहे नानी। एही दुनू जानी के मन में बेटी क पूजा क दीया टिमटिमाइल रहे – जेके केहू जान ना पावल, आ नातऽ देखिए पावल।

माई क मन क पूजा उनकर कुल गति करा देलस, काहे कि जब –जब ऊ अपना दुलरुवी बेटी के पुचकारल चहली–तब–तब उनके सभकर गरिए क बोली सुने के परल। अरे अतना मत दुलार करऽ हो, बेटी–टेटी भइल बा, भुखाइल बा–तऽका, रोवेद ऽ भूख सहे दऽ, अपने चुपा जाई– 'ओकरा मेहरारूए न बने के बा। चउका से निकलिहऽ तब जाके पियइहऽ।'

माई सब कहवइयवा ओरी तिरछे ताक के अपना काम में अँझुराइल रहत रही। फिर सुनली कि – बेटा ना–नऽहऽ–हो कि हमरा अगिला हरे चली। तूँ एतना कसमसात आ तिलमिलात काहे बाड़ू। बेटी कुल के तऽ कसहूँ रखबू – जीयान करिहन सन।

माई अपना बेटी के अपन छाती चटा–चटा के जियावत रहेली–काहे कि बेटी क जनमते ओह घर में कुल हरदी, गुड़, दूध, घीव सब में टूटिए पर जाला, तबो ई तऽ माई होली जे अपन हाड़–मास गलाइयो के अपना बेटी के जियावेली।

महतारी क दूध बेटी क भूख क रोवाई सुनके भले करकरात होखो, चाहे मन छटपटात होखो, तबो ऊ घर क कवनों काम काम छोड़के ओकर पेट–भरे ना जा सकेली। मने–मने कई बेर कहेली कि –'अरे हमार बाछी – चुप्प रहऽ। आवतानी, सहऽ– ए हमार – करेजा। तोहके तऽ जिनगीभर नऽ – सहे–के बा।

माई क अन्तरमन से निकसल ई आवाज बेटी क कान में पुचकार बन के चुपके – चुपके पहुँच जाला – तब ऊ रोवते – रोवते, माई के बोलवते – बोलवते चुपा जाली आ सुत जाली। जनमें से माई का छातिए में लुका के अपना जिनगी क ताना – बाना ई बेटी बीनत रहेली। जनमते समाज से पावल एह फटकार आ फटकार क ई तोहफा उनका भीतर खटास ना बलुक सहे क साहस के पुख्ता भाव भर देला। बेटी जान जाली कि उनकर जनम खाली माई क मन में गोटा बनके चमकता, अवरी कहीं ना। अपना काम – धन्धा से फुरसत पवते माई अपना अँचरा में लुकवा के बेटी के ओसहीं पियावे लागेली जइसे नानी माई के लुकवा के पियवले रही।

बेटी माई के निहार–निहार के जब चलविद्धदर बन जाली तब सगरो दुनिया ओरी लागेली ताके। बाप–भाई–चाचा–काका–बाबा सबकर गोड़ बनरिया नाहिन लागे लागेली, अपना सेवा क पानी लरिकाइएँ से सबके पियावे में बाझ जाली। बेटी क सेवा घर के स्वर्ग बना देला, तब लोगवा कहेला कि – बिना बेटी क कवनो घर सोभेला ना। एह सेवा क गुने के चलते– परिवार गाँव आ समाज सबका सोझा नाच–नाच के बेटी सबके रिझावेली। अपना एही गुन के चलते कबो–कबो ऊ एह देसों क नूर बन के चमक जाली।

सेयान होत अपना बेटी के देखते उनकर माई चौकन्ना हो जाली। माई अपना मन क स्नेह आ प्यार क टिमटिमात दीया क लव से बेटियों क दिल बाती जरा देली। दीया जरा के माई बेटी क कान में एगो मन्तर फूँकेली आ कहेली मि बेटी हो तोहार कई गो रूप बा। तूँ भाई लोगिन क बहिन बाड़ू तऽबाप क बेटी। जब पढ़ – लिखके कुल गुन क आगर तूँ बन जइबू तब केहू क मेहरारूओ बनबू, तोहके लोग फलाना बो कही। एतना तूँ जरूर इयाद रखिह कि सब जगह ई प्यार का ममते क दीया तोहके जिनगी क राह देखाई आ जग जिताई। एकरे के जियवले रहिहऽ।

बेटी का सयान होते उनकर माई उनके ईहो बतावेली कि ए बेटी–एह लमहर जिनगी क राह काँटा–कूसा से भरपूर जकड़ल बा। तूँ एक राह में आगे बढ़त जइहऽ बाकी कहीं अँझुरइह मत। तोहार

www.bhojpurisahityangan.com

बाप–भाई–चाचा–काका–मामा–फूफा–मउसा आ सब दोस्त लोग–तोहार अपने बन के तोहरा सोझा आइ लोग–तब भुलइह मत कि –ई सब लोग–'मरद' हउवे। केहू कबो कहीं तोहरा राह क रोड़ा बन सकेला–एहिसे कहतानी कि सबसे भटकले रहिहऽ। अपन जिनगी हरदमें होसियारिए से जीहऽ। घबड़इह, मत। एह संसार में सब ओरी तोहके मरदे लउकिहन, ऊ तोहके जब ना तब निहारल करिहन, बाकि तूँ हरिनिया नियर हरदम चौकन्ना बनल रहिह ऽ। ई बात हम एहसे कहनी हँ कि अब तूँ फूल क कली नइखू, फूल बन गइल बाड़ू आ बेटी कहात बाड़ू।

ए –बेटी तोहार बियाहो एही घड़ी होई। ऊँसें तोहके अपना के सँगही बहुते लोग मिली – जे तोहार ससुर–भसुर आ देवर बनी। सूनऽ केछू पर उँहों विश्वास कके तूँ निश्चिन्त सुनिहऽ मत। जानतारू नऽ कि इहो सब लोग तोहरा आगे–पीछे भँवरा बन के घुमते रही। तूँ कबो अनसइहऽ मत। कुल रिश्ता नाता अपना सुआरथे से जकड़ल रहेला। अपना ससुरो में तूँ अपना माई क मन्तर के कबो अनसुना मत करिहऽ। एके अँचरा से गँठियवले रहिहऽ।

एगो अवरी बात माई कहली कि, बेटी हो– अपना मन में कबो तूँ बेचारगी क भाव मत भरिहऽ। जानतारू नऽ कि दुब्बर क मुँह कुकुरो चाटेला। ई जब्बर समाज जब तोहार सीता–हरन चाहे चीर हरन करी, तब–तब सब चुपा जाई। केहू अपन ना बनी। तोहरा मुँह करिखा लागी आ तब चारों ओरी पंचायत बइठी – बाकी करी केहू कुछु ना। अपना मुँह क करिखा तोहके अपनहीं पोंछे के परी। एहू के घड़ी तू अपना मन के एकदम कमजोर मत बूझिहऽ। तूँ अपन जिनगी जब सबका बीचे बाघिन आ नागिन बन के बितइबू तबे तोहार कल्यान होई। तूँ–तऽ रोजे अखबार पढ़तारू आ टी0बी0 देखतारू, ओह में ईहे नऽ पावेलू कि सब तोहरा के एगो धरोहर बूझ के तोके बचावे में आ तोहार रक्षा करें में जुटल रहेला। बाकि होला कुछु नाही। एही से कहतानी कि – तूँ अपन बचाव अपने करिहऽ। निरीह मत बनिह ऽ। तोहरा तऽ भरल समाज से लोहा लेबे के बा आ सबका बीचे रहे के बा। बेटी क जिन्दगी बड़ा जतन खोजेला– ए बाछी, जवन बेटिए के करे के परेला।

बेटी हो – तोहरा जिनगी क राह उतना, सोझ आ सुरहर नइखे। जब समाज के एह मलीन सुभाव से लड़त – झगरत तूँ बूढ़िया बन जइबू, तबो तोहरा के सब दबोचलहीं रही। केहू छोड़ी ना। अब तूँ पुरान –चिरान कहइबू। देंह–घजा से तूँ भले लाचार रहबू बाकी एकर खियाल केहू ना करी। तोहरा अपना दिन के सूरज जब अस्त होत रही तब तोहरा राज क कमान तोहरा बेटा आ ओकरा बीबी क हाथ में आ जाई। तूँ कँहरतों रहबू, तबो केहू जल्दी तोहरा ओरी ताकी ना। सब कगरियाइए के चली आ मुँह फेरिए के बोली। जानतारू एह घड़ी क राज–बेटा कन्तऽ कहाई बाकी साँच पूछतऽ तोहरा बेटा क राज रहीना ऊ रही तिरिया – राज । एही घड़ी तोहरा भर जिनगी क उमीद पर पानी पड़ जाई आ तोहार कुल सोच छिना जाई। इहे तोहरा जिनगी क राज बाए–बेटी।

अबे माई अतने बतवले रही कि उनकर कहनी खतम भ ऽ गइल। आगे ऊ बस अतने कहली कि 'कहनी गइल बन में, फिर सुनाइल बेटी हो अब तूँ सोच अपना मन में।' ••

आर० ए० संजीव, डी-२, १४७, काकानगर (खान मार्केट के पास) नई दिल्ली-३

www.bhojpurisahityangan.com

कब हरि मिलिहें हो राम!

कृष्णबिहारी मिश्र

गाँव के नाँव सुनते माई मन परि जाले। आ माई के मन परते मन रोआइन-पराइन हो जाला। गाँव के सपना माइए पर टिकल रहे। ओकरा मुअते नेह-नाता मउरा गइल। ई साँच बात बा, गाँव के माटी आ हवा-पानी से बनल मन में गाँवे समाइल रहेला। घर-आँगन, पड़ोस, दुआर-बथान, खेत-खरिहान, मठिया-बगइचा, परती-पराँत, फेंड-खूँट, परब-तेवहार, संगी-साथी, आपन गोला बैल, पुरनिया लोगन के संगे हरदम हँसत रहेवाली छोह के नदी जब-तब बेसुध कइ देले आ शहर से पगहा तुरा के गाँवे भागि जाए खातिर मन पगला जाला।

नदी के दाँती पर हमार माटी के घर रहे, जवन गाँव भर में सबले सुन्नर लागत रहे लइकाईं में। लमहर आँगन रहे, जवना के दखिन ओरि बड़का बाबा के परिवार रहे आ उत्तर ओरि हमनी के हिस्सा रहे। कोनसिया घर में कोठिला में से माई जब अनाज निकाले जाई त जरत ढिबरी हाथ में लेके। अनपुरना के घर में दिनो में अन्हरिया छवले रहत रहे। माई के भुअरकी बिलार के बड़ा डर लागत रहे। एक बेरि बिलार के चमकत आँखि देखते हाथ के दीआ फेंकि के माई चिचिआत अँगना में भागि आइल रहे। आगि लागे से बाँचल। बिलारि देखते हमरो मन मरुआ जाला। बाकिर माई त अतना सुकवार रहे जे तनकिए में छितरा जात रहे। माई लेखा गोर मेहरारू ढेर लउकली स, बाकिर ओइसन सुन्नर मेहरारू आज ले ना लउकल। जब-जब सुन्नर मेहरारू लउकेले माई मन परि जाले। माई के बाबा छकउड़ी पांडे रामायण के बाड़ा भारी जानकार के रूप में जवार में इज्जत कमइले रहले। उन्हुके से सुनि-सुनि के माई के 'रामचरितमानस' के दुनिया भरि के चौपाई इयाद रहे। चाउर-दालि बीनत, तरकारी छेंवकत माई चौपाई गावत रहत रहे। जाड़ा के पहाड़ नीयर राति। भोरे उठे के रपटा। रजाई में हमनी भाई-बहिन के लुकवले माई पराती आ रामायन के चौपाई अतना मीठ राग में गावे जे अँजोर हो जाइ। घाम लोर्हे हमनी के अँगना से बहरी निकलि आईं जा। बाकिर माई लयनू नियर मोलायमे ना रहे, अपना लइकन के रहनि के परहेदारी में केहू से बढ़ि के कठकरेजी रहे।

हरदम एकही राग फेटत रहति रहे, 'रहनि ठीक रहला पर अन्हरिओ में राह लउकि जाला। रहनि बिगड़ल कि कुल्ही अछइत जिनिगी के सवाद माटी में मिलि जाला। 'मदरसा जाए के नाम से हमरा बोखार लागि जात रहे। बाकिर मरछहा बेटा के आदमी बनावे के चिन्ता से माई मोह-छोह के लात मारि के स्कूले भेजे। गणित हमरा बुझइबे ना करे, पढ़े में मन कइसे लागो। रोई-गाइ के चउथा दर्जा पास भइनी त माई चाचा किहाँ गोरखपुर पढ़े खातिर भेजे के फेर में परि गइल। उहँवा पढ़ाई करे गइल रहनी, बाकिर माईं आ गाँव के सुधि में सींझत समय काटीं। छुट्टी में गाँवे आवत खा भाखरि के रेलपुल से सिरी छपरा के सोझा अपना सरेह में खाड़ पाकड़ि के फेंड़ जब लउके, बुझाइ जे गाँवे पहुँचि गइनी आ रोंआ खड़ा हो जाए।

हमार गाँव बलिहार गंगा के नियरे बा। बाढ़ि के जनमते चीन्हि लेले रहनी। बरसात आवते मन बाढ़ि के जोहे लागे। बाढ़ि अइला के दूगो बड़हन सुख भेंटाइ। स्कूल बन्द हो जाए आ दुआरिए पर पँवरे-नहाए के सुख मिलि जाए। जब पँवरे के लूरि ना रहे, एक बेरि घर के सोझे चह से गिरि के डूबि गइल रहनी। चाचा नदी में कूदि के बँचवले। बाढ़ि आवते हरिना, सियार, नेऊर, साँप से गाँव के ओह घरी के देखल गरीबी के चेहरा, जब-तब आजुओ मन परि जाला, मन मेहरा जाला। लाटा, गाटा, अनरसा, आम, जामुन, अमरूद, गूलरि, सिरिफल, बइरि हमरा गाँव के मेवा-मिठाई रहे। मेला-ओला में जिलेबी, टिकरी आ मोतीचूर के मिठाई लउके। एक बेरि हम बहुत बेमार परि गइल रहनी। माई भइया (चाचा के बड़ बेटा) के बलिया फल कीने भेजले रहे। तीसरा दिने भइया छपरा से खोजि-खाजि के तीनि गो सूखल नौरंगी लेके लवटल रहले। आजु त गाँव से सटले रामगढ़ ढाला (बस अड्डा) पर अँगूर के महुआ लेखा पथारि परल रहऽता। मजूरन के बूँट आ महुआ के घुघुनी के संगे गूर के रस पनिपिआव करे के दियात रहे।

बाबा के जमीन में बसल रामएकबाल चमार के बूढ़ महतारी घरे-घरे मानर पूजे आ नार काटे बोलावल जासु। सउरि रोग के घर रहे। मनराखन बो के लुग्गा-लत्ता बसात रहत रहे। लरकोरी के साँसति मन परेला त आजुओ रोंवा गनगना जाला। सोहर राग उठे बाकिर मुँहदेखी के पहिलहीं ढेर लइका मुँ जास। ककिया के आखिरवाली एकई लइकी बँचली, जवना के जनम गोरखपुर में ईसाई नर्स करवले रहे। हमरा सबसे छोटकी बहिनी के समउरिया ककिया के बेटा के जब टिटनस हो गइल त रोग दूर करे खारित खोज-खाजि के दूगो बतक ले आइल गइल रहे, मन परऽता। अउरियो गँवई टोटरम भइल रहे। बाकिर टिटनस सबसे बरियार परल। ककिया के बेटा के केहू बचा ना सकल। जब भूत आ चुरइल धरे त सुबहान मियाँ ढारे खारित बोलावल जासु। साँप-बिच्छी झारेवाला खास लोग

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। डाइन-भूत के डरे पच्छिम के बारी में जाए के मनाही रहे। रामपुर के मठिआ के सोझा नदी के दाँती पर बाबाघर आ राजाघर के बड़हन बगइचा रहे। उहे पच्छिम के बारी कहाए। पच्छिम के बारी में कबुरगाह रहे। दसमी में एही बारी में गाँव के डाइनि आपन मंतर जगावऽ स, अइसन बिसवास रहे। एह से ओने जाए के हमनी के मनाही रहे।

रामएकबाल चमार के घर के लरिका-मेहरारू खरिहान से दँवरी कइल बैलन के गोबर बटोरिके ले जासु। ओह गोबर पर ओही लोग के हक रहे। गोबर के अनाज ओह लोगन के बड़का सहारा रहे। खरिहान में अनाज तैयार होते बद्रीनारायन के पंडा आपन झोरा-झंडा ले ले गाँव में ढुकसु। खरिहाने-खरिहाने घूमि के गंगोतरी-जमनोतरी के जल के छोटी-छोटी सीसी बाँटि के दछिना के अनाज से आपन बोरा भरि लेसु। गाँव भरि के दछिना बटोराइ जाए त गाँव के बनिया से महाजनी बुद्धि से भाव-ताव कइके कुल्ही अनाज बेंचि देसु आ रोपया गठिया के पहाड़ के राह धरसु। अइसने चतुर -चल्हाक लोगन के पूजा धरम के एगो गँवई रूप रहे। सभे भगवान आ धरमे के नाम पर किरिया खाए, बाकिर जइसे आजु के नेता-प्रेता लोग संविधान के नाम पर शपथ लेके कुकरम करे खातिर आजाद हो जाला ओइसहीं धरम आ किरिया के माने कुछुए लोग के बुझाए आ ओकरे रहनि, बात-बेहवार में धरम लउके। बाकिर हल्ला बड़ा रहे ओह घरी धरम के। कुछुए अइसन दुआर रहे जहाँ नाठा गाइ आ बूढ़ बैल के नाद पर दाना-भूसा मिले। खाल गोठार देबेवाला माल-गोरू के धरम के ढोल पीटेवाला लोग पगहा खोलि के परती-पराँत आ खेत-बधारि में चरि-चबार के जिए खातिर खोलि देत रहे। ओह अनेरिआ माल के गाँव के लोग उलरिन्हि मारि के सउँसे देहि घाही कइ देउ। आजु बाप-महतारी के हाल अनेरिआ माल-गोरू लेखा हो गइल बा, शहरे में ना, गाँवों में ई बेमारी गँवे-गँवे ढुके लागल बिआ। समय के चाल बड़ा तेज हो गइल बा। बूढ़-पुरनिया सकाइल रहऽता जे ई बड़ेरा कुल्हि दाना-भूसा उड़ाइ मति ले जाऊ।

बहुत ऊँचे रहे मठिआ के भरीति। बदरीदास आ उन्हकर सेवल जंगलीदास के लइकन से कोका नियर डर लागे। मठिया के गाँछ के छुअत देखि लेहला पर बदरीदास टाँगी लेके दउरावसु। सेयान भइला पर मालूम भइल जे बदरीदास में दुर्वासा के क्रोध ना रहे, लंगोटो के काँच रहले। उन्हकर चेला जंगलीदास पोखता चरित्र के साधू रहले, बाकिर उन्हुकर भारी सरीर आ भकसावन मुँह, भूत-प्रेत के बाप-आजा लागे। उन्हका के देखते प्रान सूखि जाइ। कबो-कबो हमरा दुआरी पर सीधा खातिर जब उन्हकर ऊँच बोली सुनाई परे, प्रान धक्-धक् करे लागे। माई केहू के हाथे सीधा दालि भेजवाइ देइ। उन्हुका गइला के बाद जान में जान आवे। मठिया के तुलाराम परमंस के सिद्धि के कथा पुरनिया लोग के मुँहे सुनले रहनी। मठिया के अलावे गाँव में कइगो अउरी देव-स्थान रहे, जहाँ दिअरी के दिने बड़का बाबा के संगे हमनी के दीआ जरावे जाईं जा। घरभरन चौबे के घर के दखिन परती में दिआ जरावत खा बड़का बाबा बतवले रहले जे ई अनजान बाबा हवे। घरभरन चौबे के घर के उत्तर-पूरब के कोना पर बड़ा भारी बर के फेंड़ रहे। ओकरा नीचे लगला सत्ती के चउरा रहे। बाबा पट्टी के दखिन गड़हा के दाँती पर नरियारे बाबा के चउरा रहे। कनिया के असवारी जब पहिली बेरि गाँव में ढुके त छनभरि खातिर नरियारे बाबा किहाँ असवारी राखे के रेवाज रहे।

बतकही के प्रसंग में मन्नन भइया (स्व. कथाकार केशव प्रसाद मिश्र) हमारा के सेयान भइला पर नरियारे बाबा के इतिहास बतवले रहले। नरियारे जाति के दुसाध रहले। हरवाह रहले। खेत बोअत खा बिया कम पड़ि गइल। मलिकार के हुकुम से धउरल बिया ले आवे घरे गइले। बिआ के दउरा मलिकाइन उन्हुका कपार पर उठा देहली। उनुका माँग के सेनुर नरियारे के कान्ह किहाँ लागि गइल। बिआ के भरल दउरा लके दुलुकी पर बधारी पहुँचले त उन्हुका मालिक के सेनुर के दगिए सब से पहिले लउकल। देखते बउरा गइले। हरवाह नरियारे डकरत-चिचिआत जान बचावे खातिर एने-ओने भागत-छटकत हारि गइल। मनसा पाप से बउराइल लउरी से मारि-मारि के डँकरत-कराहत हरवाह के मुआ दिहले। हतिया के पाप बरम्ह बनिके जब तरह-तरह से डाहे लागल त नरियारे बाबा के चउरा बनल आ सेनुर चढ़ाइ के उन्हकर उपद्रो शांत करे के परम्परा शुरू भइल। कनिया के पहिला परनाम उन्हके बखरा परल। सेयान भइला पर ई कथा मन्नन भइया से सुनि के रोआं गनगना गइल रहे। अइसन अन्हरिया में डूबल हमार गाँव रहे, जहाँ के मठिया पर तुलाराम परमंस लेखा साधु रहले, आ सटले गाँव रामगढ़ में भीमाराव ओझा लेखा महापण्डित रहले जेकरा के निर्णय-सिन्धु मानि के गया तक से लोग धर्मशास्त्र के अझुरहटि सझुरावे आवत रहे। पड़ोसी गाँव सुघर छपरा में हरेराम ब्रह्मचारी लेखा महात्मा के जनम भइल रहे, जिन्हिका मुठिए में तीनो काल रहत रहे, लइकाईं में सुनले रहनी आ सेयान भइला पर पं. बलदेव उपाधिया के लेख 'कल्याण' में पढ़ि के जननीं। हमरा गाँव के देवता अवदान बाबा हवे, जिन्हिकर चउरा गाँव के उत्तर चउरासी के माथ पर सिरीछपरा में बा। अवदान बाबा के इतिहास अँजोरिया के इतिहास ह। गवना के पिअरी पहिनले गाँव के अनपुरना के कोखि, उपजाऊ चौरासी

www.bhojpurisahityangan.com

के लमहर रकबा के रच्छा करत अपना बहुरिया के त माँग ध ोइ देहले, बाकिर रक्त के होली खेलि के गाँव के देवता बनि गइले। अपना बलिदान से बँचावल धरती के माथ पर बइठल अवदान बाबा आजुओ सरेह के रखवारी में दिन-रात जागत रहेले। बिपत्ति के बादरि अवदान बाबा के सुमिरते फाटि जाले, अइसन बिसवास हमरा गाँव के लोगन में आजुओ बा। अवदान बाबा के अँगना में लइकाई में हम जाउरि (तसमई) के परसादी खइले बानी। सायद ओकरे प्रभाव ह जे सहजे भेंटाइल कुराह पर चले के कबो मन ना चलल।

कातिक में खेती के समहुत के दिने बुझाइ जे आँगन में देवता उतरि आइल बाड़े। बड़का बाबा हाथ में भरल लोटा आ माथ पर गमछी राखि के देवता-पितर के सुमिरत अँगना से निकलसु। संगे-संगे कान्ह पर हर लेले हरवाह मनु अहीर आ दुआर के रखवार, माल-गोरू के सेवक भुनेसर सिंह। घरो के कुछु लोग समहुत देखे खेत ले जाए खातिर संगे लागि जाउ। समहुत के अनुष्ठान पूरा कइके बड़का बाबा खेत के माथ पर खाड़ होके ऊँच राग में अनपुरना के स्वामी के गोहरावसु, 'हरिअर-हरिअर महादेव हरिअर, चारु कोने चारि मन बिगहा पचास मन।' समहुत के दिने कढ़ी-बरी, फुलौरा-भात बने। बैल आ गाइ के देवता लेखा पूजिके कढ़ी-भात बड़का बाबा अपना हाथे खियावसु। समहुते लेखा कातिक के सात्विक परब रहे अछनमी, अँवरा के फेंड़ के नीचे गाइ के गोबर से लिपि-पोति के नया चूल्हा पर रकम-रकम के गँवई रसोई बने। देवता के भोग लागे तब बाभन के भोजन कराइ के घर भरि के लोग अँवरा के छाँह में बइठि के भोजन करे। हमरा दुआर के सोझावाला फेड़ घर से दूर परत रहे। बाबा के दुअरुआ नूनू घर के बलेसर मिसिर, जिन्हिका के हमनी का बड़का बाबूजी कहीं जा, के घर हमरा घर से सटले रहे। उन्हुका दुआर पर अँवरा के एगो रोअनिया फेंड़ रहे। ओहिजे हमनी के अछनमी के परब मनाईं जा। खरिहान में जब नाज तेयार हो जाय, सीसंकर तेली रासि जोखे बोलावल जासु। उहो दिन तेवहारे के दिन लागे। बड़का बाबा अपना हाथे देवता-पितर के अंगऊ एक-एक अलगा-अलगा राखसु। मठिया आ दोसर-दोसर देव-स्थान के अंगऊ निकालिके बाबा राखि लेसु तब सीसंकर तरजुई बटखरा लेके रासि के हाथ लगावसु। रामजी के नाँव उचारत रासि जोखसु। ओहू दिने घरे खास रसोई बने। का जाने खेती के नाम पर रोजगार करेवाला किसान के रहनि में अब धरम भाव कतना बा। सुने में आवऽता जे एने सभे एकही बावल बोलऽता जे आजु पुरनका रेवाज कामें ना लागी। राम जानसु नवकी आन्ही गाँव के कवना अन्हरिया में झोंकी!

लछमिनिया अहिरिन हमरा लइकाईं में माता खेले। देवी के कराह आ बकरा चढ़ावल देखले बानी। हमरा लइकाईं में नूनू घर के जीअछा के करनी के बड़ा हल्ला रहे। बाप-महतारी के अकेल बेटी, बाप के जगह-जमीन लेबे खातिर पटिदारन से ममिला लड़ल रहली। गाँव के बेटी के ढिठई पहिली बेरि देखे में आइल रहे। जिअछा केकयी नियर बदनाम हो गइल रहली। गाँव-घर के कुछ चरित्र हमरा देवता ले बढ़ि के लागे। हमार बड़की ईआ कुकुर-बिलारी के बच्चा भइला पर लरकोरी पतोहि-बेटी निअर सेवा करसु। नूनू घर के बिसवामितर मिसिर के जब बड़की माता निकलल रहली त सँउसे देहिए सरि गइल रहे। उन्हुकर सेवा करत ईआ बहुत कम उमिरि में माता के प्रकोप से मरि गइली। पारस चउबे आ माठा चउबे भागवंत भाव के रूप रहे लोग। हमार नतुहा बाभन। घोर अभावो में परम हरखित। दोसरा के मंगल आ बढ़न्ती देखि के अगरा जाए वाला। केहू के समस्या के कान्ह लगावे खातिर बराबर तेयार। एही लोग के पट्टीदार पुरनिया रहले बुधन बाबा। बड़ा तेज पानी के आदमी रहले। अतना तेज पानी के अदमी जे उन्हुका सामने गाँव के मालिक, हमार बबो के ताप झुकि जाए। बुधन बाबा के तेज जब उतान होखे त बड़े-बड़े लोग के चुनौती के भाखा में संबोधित करसु, 'बुधन के चेट में दमड़ी रहेला त बुधन हाथी मोलावेले।' ई उन्हुकर बोल रहे। माठा, सातू आ तोंत के चटनी बुधन बाबा के मुँहे लागल रहे। गरमी में दिन के भोजन इहे रहे। लमहर उज्जर दाढ़ी आ तामा नियर चमकत देहि। ऋषि के तेज उन्हुका देहि से फूटत रहत रहे। अइसने दमकम देहि रामजनम बाबा के रहे। बुधन बाबा ले लमहर रहले। हमरा बाबा के पितिया लागत रहले। सबसे नियरा के देयाद। एक्के बेटा रहे। असमय में मउवत खींचि ले गइल। गवनो ना भइल रहे। पुत्र-शोक के घाव से पगला के रामजनम बाबा अपने रोपल बगइचा काटि-काटि के उजारि दिहले। भोर में नहाइ के घंटन्हि पूजा पर बइठल रहसु। उन्हुकर भतीजा लोकनाथ मिसिर सोगहग धन के वारिस रहले। गाँव के लोग उन्हुकर नाव कप्तान साहेब धइले रहे। रहले बड़ा तेज पानी के, बाकिर तनी बउड़म रहले। देहल छोड़ि के कुछु जानसु ना। बेले-बटोरे वालन के झोरी आगे फइलते रहत रहे। उन्हुका बेलुरि के चलते सब धन स्वाहा हो गइल। बड़हन कास्तकार रहले-चालीस बीघा से ऊपर जोत के जमीन, भोगेवाला अकेले। परिवार के संकट में झोंकि देहले।

किसिम-किसिम के लोग रहे हमरा गाँव में। धूरि से रस्सी बरेवाला, मारेवाला अधिया पर ढेला ढोवे वाला आ आन के फिकिरी जान देवे वाला लोगन के ओह घरी कमी ना रहे। कुछ अइसनो लोग रहे जेकरा से सँउसे गाँव छनकत रहत रहे आ कुछ अइसन लोग रहे जेकरा के लोग जोहत रहत रहे। ओह

www.bhojpurisahityangan.com

लोग के अन्ते गइला पर गाँव सून हो जाइ। बतास के हिलते भूंके वाला आन्हर कुकुरो के कमी ना रहे गाँव में। लहरा लगावे वाला मरद-मेहरारू से त गाँव भरल रहे। हमरा घर के पिछुआरी राजधिर के पगला ठाकुर के बियाह ना भइल रहे। दुनिया जगत से एकदम अलग माल-गोरू तक उनकर जिन्दगी सिमटल रहे। लमछर, भारी, पकठाइल, बरिआर काठी, सउँसे देहि में दिनाई। विलास के नाम पर खाली खइनी से उनकर परिचय रहे। ओह घरी गाँव-जवार में कुँआर रहि जाए वाला ढेर लोग रहे, बाकिर पगला ठाकुर लंगोटा के पोख्ता साधु आदमी रहले। डिठार घटिहा एकाधे गो रहले, बाकिर तोपल-लुकाइल कुकर्म के कमी तबो गाँव-जवार में ना रहे। गंगाजी के बाढ़ि से पाप धोआए के मान के ना रहे। आजु त गंगाजल से हमार धरती माई भिंजते नइखीं!

हमरा गाँव के पानी बड़ा तेज ह। बाभन के गाँव राजपूत आ भूमिहार के गाँव से तीनि ओर से घेराइल बा। कठोर से कठोर चुनौती के अपना पौरुष से मुकाबला कइले गाँव के स्वाभिमान के ऊँच रखले रहे वाला लोग बराबर मिसिर वंश से जामत रहले। चरभइया पट्टी के परतापी पुरुष रहले बड़का भाई। अपना समय में गाँव के मालिक रहले। उन्हुका तेज से गाँवे ना, जवार काँपे। ओही पट्टी के कमेसर मिसिर बाद में गाँव के मुखिया भइले। बड़ी तेज के आदमी रहले। पढ़ाई-लिखाई हमरा बाबा के भी कुछ ना रहे, बाकिर बुद्धि में केहु ले बढ़ि के। गाँव के मालिक रहले अपना समय में। गाँव के प्रतिष्ठा के लड़ाई खातिर गाँव भरि के बीस बिगहा के एगो खेत रहे, छेड़ी गाँव में कोड़ार बाबा नम्बरदार रहले। कुँआ पिपर, कुचनपूर जमींदारी के गाँव रहे। बाबा के मुअते कोड़ार धूरे - धूर बिका गइल। मिसिर बाभन के गाँव में एक पट्टी गौतम मिसिर के आ एक पट्टी चौबे लोग के रहे। हमरे पुरूखा एह नतुहा लोगन के अपने बगल मे जगह - जमीन देके बसवले रहे। हमनी के पाँवपुजबा बाभन ह लोग। गौतम पट्टी के दुखी मिसिर हमरा बाबा के दुलरूआ भगत रहले। बाबा उन्हुका के बेटा लेखा छोह में बोरले रहसु। हमरा जिए - जागे के मंगल भाव से दुखी काका हमरा के एक पइसा में किनले रहले। गाँव के उत्तरी दुआरि पर राधाकिसुन चौबे के बहुत बड़ पक्का मकान रहे। सउँसे गाँव में दुइगो ईटा के मकान रहे ओह घरी, हमरा लइकाई में। एगो राधाकिसुन चौबे के आ दोसर घर मइया पट्टी के रामतपेसा मिसिर के। १९४२ के आन्दोलन के बाद दुआठा के गाँवन पर सरकारी जुलुम शुरू भइल रहे। घर - घर के औकात आँकि के जुर्माना, भरि गाँव के। नम्बरदार आ मालिक रहले हमार बाबा। सबले भारी जुर्माना उन्हुके ऊपर लागल रहे। खेत रेहनि राखि के बाबा आपन इज्जत बचवले रहले। बाद में माई बतवले रहे। दुखी मिसिर लेखा बाबा के भरोसामन्द नूनू घर के बलेसर मिसिर रहले। बाबा के संसार छोड़ला के बादो नेह के नाता जस के तस बनल रहे। हमनी के उन्हुका के बड़का बाबूजी कहीं जा। बाबूजी भाईजी कहसु।

अहीर, कमकर, कोहार, कुर्मी, मियाँ, तेली, बनिया, चमार, दुसाध, गोंड़, भर से हमार गाँव भरल-पूरल लागे। गाँव के खास लोगन के असली नाँव के संगे कुछु दोसरो पुकार के नाँव रहे। गाँधीजी, राजाजी, कप्तान साहेब, कम्पोटर जइसन नाँवे से कुछ लोग जानल जात रहे। बाबा घर के छतरधारी मिसिर आ मुंसी मिसिर गाँव में सूदि पर रूपिया चलावे लोग। गाँव के मालिक रईसी में जिए वाला हमरा बाबा के जब हाथ खाली होखे, ओही लोग किहाँ जाए के परे। बाबा के सुभाव में दीनता ना रहे। करजा देबेवाला भी उन्हुका से दबि के इज्जत संगे बतिआवे। बाबा घर में छतरधारी बाबा सबसे मेहीन आ सौखीन रहले। बंगाल में जगह - जमीन आ गोला रहे। ओही पट्टी के हरिहर मिसिर बाबूजी के संघतिया रहले। साधू आदमी, सत्संगी आर्य समाजी। उन्हकर अधिका समय हमरे बगइचा आ दुआर पर कटे। बाबा के राग में रामायण सुनावसु। दुआरे - दुआरे रामयन बाँचे के संस्कार रहे। बाकिर नाच देखे लोग दूर आन गाँव तक भागि जाए। भिखारी ठाकुर आ बनारस के मुकुन्दी भाँड़ के ओह घरी बड़ा नाँव रहे। भिखारी ठाकुर के नाच में भी लोगन के हाथे कुसंस्कारे लागे। गोड़ऊ नाच के हुड़का, बोल आ मुद्रा भदेसपन के ओरि पर पहुँचि जाए। मेहरारून के दबल भूखि डोमकच (औरतन के प्रहसन - आयोजन, बेटा के बियाह करे विदा कइला के राति में आयोजित) में आ मरदन के गोड़ऊ नाच आ कबीर - जोगीरा के बोल में खुलि के प्रकट होखे। अइसन बेलगाम के बोल जे फेड़ों - खूँटा काम - वासना से बउरा उठे। हमरा गाँव के गवनई के मेठ सीतानाथ चाचा बड़ा रसगर आदमी रहले। हमरा पट्टीदारी में एगो बालविधवा रहली - पतसी मिसिर बो। गोर धूप - धूप रूप के आगार। नीम पागल रहली। नाता में बाबा के चाची लागत रहली। गाँव भरि घूमत रहल रहली। घूमत - घामत जब हमरा अँगना में ढुकस, माई अगराइ के खिलि जाए। हमनी के बुढ़िया बाजी कहीं जा, बाकिर उन्हुका से लइकाई में बड़ा डर लागे। माई छीपा मे पानी भरि के बुढ़िया आजी के बेवाइवाला रूखर धूरि - पाँक के डूबल पाँव पखारे, जइसे बड़ा भागि से भगवती अँगना आइल होखसु। खात खा बुढ़िया आजी बुदबुदात रहसु आ माई बेना डोलावत रहत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा घर के पिछुआरी राजा घर के जमीन में राजरस कमकर के घर रहे। राजरस हमरा अँखफोर होखे के पहिलहीं मरि गइल रहले। राजरस कमकर के महरारू बड़ा बरियार रहली। शेरनी नियर गरजि के बोलसु। उन्हुका आगे दरसन तिवारी के घर रहे। दरसन तिवारी में माई के हमनी के सब भाई - बहिनि कनिया मइया कहीं जा। हमरा अँगना से उन्हुकर परान जुड़ल रहे। खासु - पिअसु अपने घर, बाकिर राति में माई के संगे सुतसु। माता के परकोप से बोली बिगड़ि गइल रहे। हमनी के बड़ा छोह से गाइ के गीति आ कथा सुनावसु। पदुम काका के महतारी दूधनाथ चौबे बो बरियार - सन्नर मेहरारू रहली। बड़की ईआ से खूब पटरी बइठे। ईआ उन्हुका के चौबाइन कहसु आ नतुहा - बाभन क घर के मेहरारू के आदर - छोह में बोरले रहसु।

पानी भरेवाली बिरिछा बो के हमनी के भाई - बहिन काकी कहीं जा। माई देवराइन कहे। उन्हुका सासु भदई बो के रउताइन। माई के बाद सबले आपन बुझासु पिछुआरी वाली ईआ - जिला में नामी पहलवान जलेसर मिसिर के महतारी। हमरा छींको आवे त धउरल हमरा अँगना में पहुँचि जासु आ आपन टोटरम चालू क देसु। देखे में साधारन गँवई मेहरारू, बाकिर भीतर छोह के सागर बराबर जागल रहत रहे। राजा घर के हरदयाल काका बो के हमनी का भउजी कहीं जा। उन्हुका बड़हन आँगन मनसायन लागे। टोल - पड़ोस के लइका - लडकी के अइला से कबो - कबो अँगना तनी बोले। हरदयाल काका, सुन्दर सुभेख, आँगन से बहरी पूजा - पाठ में लीन रहसु। लइका - फइका ना रहे। साँचो के भउजी रहली, रामासीस भइया बो। करिया पनिगर चेहरा। सौखीन अइसन कि दाँत में सोना मढ़वले रहली आ मिस्सी लगावसु। रामाधार बाबा बाबूजी के लंगोटिया इयार रहले, एहसे उन्हुका आँगन मे गइला पर बड़ दुर्दसा होखे। भउजी के बेटा के उमिरि के हमनी का रहनी जा। बाकिर फागु में देवर भेंटाइ जाइ त भउजी किहाँ माफी ना रहे। धइ के नाद में बोरि देसु। फगुआ कि दिने पिअरी से सजि के हमनी के बाट जोहत रहसु। दखिन टोला में बाबा के परजन के कई गो घर रहे। कुछ गोड़िन के चरित्र के लेके गाँव में तरह - तरह के बात होखे। भदई बो हमरा घर के पनिभरिन रहली। पतोह संगे बर्तनो उहे माँजसु, बाकिर मालिक के एकलौती पतोह हमरा माइयों के जब - तब डपटि के बोलसु। हमनी के उन्हका के आजी कहीं जा माई रउताइन कहे आ बड़ा नरम होके बोले।

दहारी कुर्मी आ रामलाल अहीर हमरे पट्टी के जमीन के बसल रहे लोग। बाबा के दरबार में जब आवे लोग, निपट गँवार होखलो पर, आह लोग के बतकही राज दरबार में पोसाइल आदमी के बतकही बुझाय। नाट कद के दहारी बुद्धिमान रहले। ओह जमाना में अपना बेटा लक्खी के अंगरेजी पढ़वले। बाद में रउती के आगे दीअर में जाके दहारी बसि गइले। लक्खी के रेल विभाग में नौकरी मिलि गइल।

बहुत बाद में मठिया के दक्खिन बारी में एक घर नेटुआ कहीं अन्ते से आके बसल दू - तीनि भाई पहलवानी में रहे लोग। गाँव में मधु बेचे आ गोदना ओह घर के पतोह आवे। बड़ा चलबीधर रहे। ओहू घरी गाँव में काँच लंगोटवाला (लम्पट) लोग रहें। डिठार नाँव दुइए -चारि गो रहे। लुकाइन पाप बाभनो घर में कम ना रहे। कटिया के समय चइत- बइसाख में उत्तर ओरि से दुनिया भरि के मजूर आ जाए, परिवार लेले-देले। लम्पट लोग ओह मौसम के बेयाकुल होके बाट जोहे। ओही बनिहारन में से धीरे - धीरे कुछ भर हमरा गाँवे बसि गइले।

विकार के ढूह आ गरीबी के पहाड़ से लड़त-लड़त गाँव के हँसल - बोलल - गावल मरूआइल ना रहे। एके राग में सँउसे गाँव गावत - जिअत रहे। कातिक में गंगा - नहान करे जात मेहरारून के झुंड गावत जाए - अपना जीव अस उनकर जनिहऽ तब हरि मिलिहें हो राम। सुनते के झुंड गावत जाय।

एने गाँव आपन रहनि छोड़ि के शहर के नकलची बनि बइल बा। अपने गाँव चिन्हात नइखे। कबो - कबो बुझाला जे आन गाँव में गइल बानी। कबो बुझाला जे हमार गाँव मरि - बिलाइ गइल आ अन्ते के लोग हमरा भूगोल के हड़पि लेले बा, ओह भूगोल में जहाँ अँखफोर भइनी, जहाँ कंठ फूटल, जहाँ के छोह मन के जमीन के उपजाऊ बनवलसि। हँसल - बोलल भुलाइ के लोग पसेरी भरि के मुँह लटकवले अहंकार के आगि में जरत राख होत जाता। पड़ोसी भूमि के कैफी आजमी के उदासी मन परि जाले, ये हमारा गाँव है और ये हमारे गाँव क चूल्हे, जहाँ आग तो आग धुँआ भी नही मिलता। घर-घर से आगि माँगि के चूल्हा जरावेवाला आत्मीय भाव कहाँ बिला गइल? गाँव अतना गंभीर कइसे हो गहल? ई बिपत्ति के पहाड़ गरीबी के पहाड़ ले भारी बा। सोचि के मन रोआइन - पराइन हो जाता, कब ई अन्हरिया छँटी हो राम! कब हरि मिलिहें हो राम!

••

[साभार : 'आपन गाँव']

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरियत के प्रतिनिधि : डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र

प्रमोद कुमार तिवारी

भोजपुरिया माटी में कुछ त अइसन बा, जवना से एह इलाका के साहित्यकारन में ललित भाव के रस छलके लागेला, कुछ तऽ अइसन बा कि जे भी आपन बचपन भोजपुरिया इलाका में बितवले बा, ऊ पूरा जिनगी भोजपुरी लोक के रस में भींजत रहेला। एह माटी में अइसन का बा, जवना से साहित्य के फुलवारी के अलगे तरह के संजीवनी भेंटाला अउर ऊ अलगे ढंग से लहलहा जाले। आखिर का कारण बा कि ज्यादातर भाषाविद् आ ललित निबंधकार एही माटी से निकललन। काहें 'अज्ञेयजी' से ले के शिवप्रसाद सिंह जब कृष्ण बिहारी मिश्र प लिखे चलले तऽ पूर्वांचल के जिक्र जरूर कइले। कुछ त कारण होखी कि जब रामदरस मिश्र उनका प लेख लिखले त शीर्षक दिहले– 'डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र कोलकाता में गांव'। शिवप्रसाद जी जब कृष्ण बिहारी मिश्र के चर्चा करेले त एह माटी के चर्चा करत हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि के सूची गिनावे के साथे एह इलाका के विशेषता बतावे लागेले। हम अगर एक शब्दह में एकरा के समेट के कहीं त एह भाव के भोजपुरियत कहल चाहब।

आपन माई, आपन बोली सबका के मीठ लागेले बाकिर ई बात माने में संदेह ना होखे के चाही भोजपुरिया माटी में कुछ खास बा, इहां के विरहा, चइता, फाग से ले के तमाम प्रकार के लोक गीत, कथा इहां बचपन गुजारेवाला लोग के चेतन अवचेतन में भीतर तक ले पइसल रहेला आ जब ऊ लोग कुछ लिखे चलेले कवनो ना कवनो रूप में ऊ आपन असर देखावे लागेला। भाव आ संबंध के जीए वाला भोजपुरिया समाज गंभीर से गंभीर बौद्धिक गतिविधि में भी रस तत्व खोज लेबेला। आखिर का कारण बा कि निबंध जइसन ठेठ बौद्धिक विधा चुनेवाला कृष्ण बिहारी मिश्र ललित तत्व से दूरी ना बना पवलन। कलकत्ता जइसन बौद्धिक शहर में केहू सबसे जादा उहां के रुचल त ऊ भाव के सबसे जादे महत्व देबेवाला रामकृष्ण परमहंस रहले। भोजपुरी के बारे में अपना एगो लेख 'भोजपुरी धरती और लोक राग' में मिश्र जी लिखले बानीं, 'भोजपुरी धरती, हवा, पानी ने मुझे चलना–बोलना सिखाया है, 'अँखफोर' बनाया है लोक चक्षु से चक्षु मिलाने की संवेदना और शक्ति दी है। इसलिए इसे जब कोई अन्यथा दृष्टि से निहारता है तो अनायास मेरा स्वारभिमान उत्तेजित हो जाता है।'

कहे के जरूरत नइखे कि संवेदनशीलता आ स्वाभिमान भोजपुरिया माटी के पहिचान ह आ एह दूनो के दुर्लभ संगम मिश्र जी में लउकेला। एक ओरी तरल भावबोध से भरल 'कल्प तरु की उत्सव लीला' जइसन पुस्तक लिखेवाला आ अपना आप के उलीच देबेवाला सरल ह्दयी मन के प्रमाण मिलेला त दुसरका ओर भारतीय भाषा परिषद के मजदूरन के लड़ाई खातिर एकदम अड़ जाएवाला लाठीवाला जोर लउकेला।

कृष्ण बिहारी मिश्र के विपुल साहित्य एह बात के गवाही दे रहल बा कि बहुत लगन आ समर्पण से उहां के आपन निर्माण खुद कइले बानीं आ लगातार अपना आप के निखारत गइल बानीं। बात चाहे गांव के स्कूल से ले के काशी हिन्दू विश्व विद्यालय आ कलकत्ता विश्वविद्यालय जइसन संस्थान तक के यात्रा होखे चाहे आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी जइसन प्रकांड पंडित लोग के नेह के पात्र बने के योग्यता के होखे। कृष्ण बिहारी मिश्र जी आपन एगो अलग लकीर खिंचनी। ई सही बा कि मिसिर जी के लेखन के भाषा हिन्दी रहल बिया बाकिर भाषा के भीतर प्राणतत्व के रूप में भोजपुरिया भावबोध के भरपूर प्रवाह के बहुत आसानी से देखल जा सकत बा।

उहां के विपुल आ बहुरुपी साहित्यह भोजपुरिया लोग खातिर गर्व के बात बा। विद्वत समाज मिश्र जी के लगन के भरपूर सम्माभन देत रहल बा। ज्ञानपीठ के 'मूर्तिदेवी पुरस्कासर', उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के' साहित्य भूषण' सम्मान से लिहले डीलिट् आदि के मानद उपाधि तक उहां के विद्वता के रेखांकित करत रहल बाड़ी स। संस्था आदि के सम्मान अपना जगह प बा बाकिर जवना घरी उहां के मूर्तिदेवी सम्मा‍ान दीहल जात रहे तब भारी संख्या में उमड़ के कोलकाता के जनता, मिश्र जी के जवन सम्मान दिहलस ऊ बहुत कम साहित्यहकारन के नसीब हो पावेला। ••

गुजरात केंद्रीय विश्विविद्यालय, गांधीनगर

www.bhojpurisahityangan.com

(भोजपुरी भूइं रतनगर्भा हवे। सन्त, महात्मा, विचारक, भाषाविज्ञानी, गणितज्ञ, संगीतज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, वीर सैनिकन आ राजनेतन के जनम-करम के भूमि भोजपुरी क्षेत्र का गौरव आ गरिमा के देस-विदेस जनले-पहिचनले बा। छपरा, आरा, सीवान, बक्सर, गाजीपुर, मऊ, देवरिया, गोरखपुर के दिल का रुप में धुकधुकाए वाला जिला बलिया त, महर्षि भृगु बाबा, गर्ग, गौतम आ दर्दर जइसन मुनियन के तपोपूत धरती हवे। मंगल पांड़े का जरिये आजादी के बिगुल बजावे आ चित्तू पांडेय आदि का जरिये, आजादी के - घोषणा आ पहिल झंडा फहरावे के सौभाग वाला ई जनपद कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, कृषि आ राजनीतिक अगुवाई का दिसाईं अपना सतत् कर्म आ निष्ठा से कीर्त्ति-अरजन कइले बा।

राष्ट्र का निर्माण में अपना प्रतिभा, ज्ञान, कौशल आ निष्ठा से योगदान देबे वाला भोजपुरी जनपदन के, प्रतिभाशाली, विद्वान, संस्कृतिकर्मी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, प्रशासनिक अधिकारी आ अकादमिक लोगन का बारे में, भोजपुरियन के जाने के चाहीं- खास कर ओह लोगन का बारे में, जेकरा अपना भूमि, भाषा आ समाज से जुड़ाव आ आत्मीयता बनल बा। हम अपना एह विचार के ध्यान में राखत, एह नया स्तम्भ में एही माटी के महक का रूप में भोजपुरिया गाँव-जवार से अपना प्रतिभा आ मेहनत से आगा बढ़ल कुछ खास लोगन के परिचय वाली चउथी कड़ी दे रहल बानी - संपादक)

व्यक्ति विशेष : डा0 कृष्ण बिहारी मिश्र

•• जन्म : 01 जुलाई 1936, बलिया जिला के बलिहार गाँव में। श्रीमती बबुना देवी आ श्री घनश्याम मिश्र का एकलौता पुत्र ।

•• शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा गाँव में, माध्यमिक गोरखपुर में आ उच्च्य शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में ''नवजागरण के सन्दर्भ में हिन्दी पत्रकारिता का अनुशीलन'' विषय पर शोध आ डाक्टरेट के उपाधि। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता आ संचार विश्वविद्यालय, भोपाल से डी०लिट्० के मानद उपाधि।

•• सेवा : अध्यापन वृत्ति से 30 जून 1996 के सेवानिवृत्ति।

देश के कई विश्वविद्यालययन आ सरकारी, गैरसरकारी विद्या संस्थानन में सक्रिय भूमिका अउरी राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय बिचार गोष्ठियन में भागीदारी।

•• प्रकाशित पुस्तक : 'हिन्दी पत्रकारिता : खड़ी बोली साहित्य की निर्माण भूमि'', 'पत्रकारिता: इतिहास और प्रश्न', गणेश शंकर विद्यार्थी, 'हिन्दी पत्रकारिता : राजस्थानी आयोजन की कृती भूमिका' ललित निबन्ध अउर संस्मरण -'बेहया के जंगल', मकान उठ रहे है, आंगन की तलाश, 'अराजक उल्लास', गौरैया ससुराल गई, नेह के नाते अनेक', 'कल्पतरु की उत्सवलीला' आदि

•• संपादन: हिन्दी साहित्य: बंगीय भूमिका, श्रेष्ठ ललित निबंध (बारह भाषाओ के प्रतिनिधि, ललित निबंधो का दो खंडो में संकलन), कलकत्ता-87, समिधा(त्रैमासिक पत्रिका)

•• अनुवाद: भगवान बुद्ध (यूनू के अंग्रजी पुस्तक के अनुवाद)

•• सम्मान/पुरस्कार: 'आचार्य विद्यानिवास मिश्र सम्मान, डा० हेडगेवार पुरस्कार, उ० प्र० हिन्दी संस्थान से 'साहित्य भूषण' आ 'महात्मा गाँधी पुरस्कार अलंकरण', भारतीय ज्ञानपीठ के सर्वोच्च ''मूर्ति देवी'' पुरस्कार सम्मान।।

www.bhojpurisahityangan.com

डा० कृष्ण बिहारी मिश्र गाँव आ गँवई के नैसर्गिक संस्कार आ शिक्षा - अनुशासन में पलल बढ़ल, भोजपुरिहा मन - मिजाज के सृजनशील साधक हईं । सौभाग से उहाँ के आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आ आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी आ आचार्य चन्द्रबली जइसन विदग्ध आचार्यन के आत्मीय सान्निध्य से साहित्यिक संस्कार आ अनुशीलन के दृष्टि मिलल। हिन्दी साहित्य के अगुवा ललित निबन्धकार का रूप में ख्यात कृष्णबिहारी जी के आपन भाव-सुभाव आ लेखकीय बल-बेंवत के वैशिष्ट्य, उहाँ के अलग पहिचान देले बा।

कृष्णबिहारी मिश्र जी के भाषा में जवन भोजपुरी शब्द संस्कार बा, ऊ उनका लेखन के भाषिक विलक्षणता बन गइल बा जवना से हिन्दी भाषा साहित्य समृद्ध भइल बा। मिश्र जी का लेखन आ भाषा पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, श्री अज्ञेय, आचार्य विद्यानिवास मिश्र, डा० प्रभाकर माचवे, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डा० धर्मबीर भारती, प्रो० विष्णुकांत शास्त्री, प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, प्रो० राध ाबल्लभ त्रिपाठी आदि समय समय पर आपन विशेष टिप्पनी कइले बा लोग।

सम्पर्क : 7 - बी, हरिमोहन राय लेन, कोलकाता -700015

"पाती" संपादक का रूप में, जिला-जवारी भइला का नाते श्री मिश्र जी के नेह छोह आ असीस हमके बराबर मिलत रहल। अइसना कीर्तिपुरुष के आपन परिवारी आ स्नेहभाजन भइल हमरा खातिर गरब गुमान के बात बा। उहाँ का भोजपुरी के, हिन्दी का जरिये नया विस्तार दिहनी, भोजपुरी में बहुत कम लिखनी बाकि जीवन शैली आ बात ब्योहार में हमेशा भोजपुरी के प्राथमिकता देत अइलीं । •• (संपादक)

फोटो डा० कृष्णबिहारी मिश्र (डा० प्रमोद कुमार तिवारी के सौजन्य से)

www.bhojpurisahityangan.com

•• भोजपुरी रचनात्मक आन्दोलन के समर्पित संयोजक आ बहुमुखी कला चेतना के धनी पाण्डेय कपिल के जनम २४ सितम्बर १९३० के सारण जिला (बिहार) का शीतलपुर गाँव में भइल। उहाँ के पिता श्री पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह जी साहित्य आ कला के अनुरागी रहनी। उहाँ के एगो भोजपुरी उपन्यास "घर, टोला, गाँव" चर्चित भइल रहे । साहित्यिक संस्कार पाण्डेय कपिल जी की घरवे से मिलल रहे । प्राथमिक शिक्षा गाँव में भइल बाकि आगा के पढ़ाई शहर में । उहाँ का बी० ए० काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पास कइनी आ आगा चलके, बिहार विश्वविद्यालय से एम० ए० पास कइनी। सेवा कार्य : बिहार सरकार का राजभाषा विभाग में काम करत, उपनिदेशक पद से सेवानिवृत भइलीं।

•• सम्पादन/प्रकाशन : भोजपुरी के तिमाही पत्रिका "उरेह" आ "भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका" का साथे साथ "भोजपुरी संस्थान" इन्द्रपुरी, पटना से भोजपुरी रचनाकारन के अनेक पुस्तकन के प्रकाशन वितरण जइसन महत्व के काम से प्रसिद्धि मिलल।

•• प्रकाशित किताब : "भोर हो गइल" (गीत संग्रह), "कह ना सकलीं" (गजल संग्रह), "फुलसुँघी" (उपन्यास), "परिन्दा उड़ान पर" (गजल संग्रह), "भोजपुरी सतसई", "जीभ बेचारी का कही" (दोहा संग्रह), "दुनियाँ के शतरंज बिछल बा" (चयनित कविता संकलन)

•• सम्मान/पुरस्कार : "भिखारी ठाकुर सम्मान" १९९८, बिहार भोजपुरी अकादमी एवार्ड, भोजपुरी शिरोमणि आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा भोजपुरी के सर्वोच्च "सेतु सम्मान" ।।

पाण्डेय कपिल जी हमरा पर आपन विशेष आत्मीय भाव आ नेह छोह रखला का साथ साथ, "पाती" पत्रिका के बराबर रचनात्मक सहजोग आ सम्मान दिहलन। भोजपुरी साहित्य का बढ़न्ती खातिर निष्ठा से काम करे वाला लोगन के उनकर प्रेरक सहयोगी भाव उनके विशिष्ट बनवलस। आजु ८७ बरिस का उमिर में, उनकर भाव - सुभाव आ प्रेम जस के तस बा, लेखन् अजुओ जारी बा, जवन उहाँ के संलग्नता आ रचनात्मकता के सिद्ध करत बा। (संपादक)

www.bhojpurisahityangan.com

("पाती" 41– 42, सितम्बर 2002 में पाण्डेय कपिल 'अंक' के दू गो कवियन में शामिल रहले। ओह अंक से कुछ सामग्री इहाँ पाठक लोगन का सुलभ सन्दर्भ आ आस्वाद खातिर फेरु से दिहल जा रहल बा।)

सम्पादकीय टिप्पणी

भोजपुरी के अगिला पाँत के साहित्यकार पाण्डेय कपिल के साहित्यिक संस्कार विरासत में मिलल रहल। संवेदनशील मन–मिजाज आ रचनात्मक प्रतिभा के धनी पाण्डेय कपिल कविता होखे भा गद्य, दूनों में साधिकार आपन लेखनी चलवले बाड़न। 'फुलसुँघी' जइसन स्तरीय उपन्यास के कथा शिल्पी, 'उरेह' आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के सम्पादन में, उनका भीतर के संपादक आ कवि बार–बार अपना अपना उपस्थिति के एहसास करावत रहल बा।

पाण्डेय कपिल के प्रिय काव्य – विधा गीत आ गजल हऽ, जवना में उनका उत्कृष्ट रचना – कौशल के दर्शन होला। आत्मसाक्षात्कार आ आत्मसंघर्ष के उनका गीतन में दर्शन बा। रहस्यानुभूति आ प्रकृति के ताजा बिम्ब आ संकेतिक प्रतीकन के उपयोग से उनका गीतन के अरथगौरव मिलल बा। सबसे खास बात ई, कि उनका लगे एगो सधल काव्य–भाषा बा, जवन आधुनिक भाव बोध आ जटिल अनुभूतियन के, बिना कवनो ताम झाम भा बनावट के, सार्थक ढंग से अभिव्यक्ति करे में समर्थ बा। इन्सानी जिन्दगी के एहसास, सोच आ जज्बात के सादगी आ साफगोई से, 'गजल' विधा में अभिव्यक्त करे में उनका महारत हासिल बा। उनका 'गजल' में परम्परा के संस्कार, अनुभव के अनुशासन आ नया लोक संवेदन त बटले बा, एगो बेलौस, बेतकल्लुफ अन्दाजो बा, जवन पढ़वइया आ सुनवइया के अपील करी।)

फोटो, पाण्डेय कपिल आ परिवार, भगवती प्रसाद द्विवेदी आ जितेन्द्र कुमार का सौजन्य से

www.bhojpurisahityangan.com

पांडेय कपिल के गीत आ गजल

(एक)

काहे फूँकेले बँसुरिया, हम त आवते रहनी हँ !

तोहरा बँसुरी के बोल पर/भुलाइ जाला मान
तोहरा लय के लहरिया पर/लोटाइ जाला प्रान
बाकिर काहें खातिर अइसन/बिरहा के बान
हम त रूसल रगिनिया के मनावते रहनी हँ !

तोहरा ओठ के बँसुरिया/जब बाजे लागेले
तोहर सूतल सुरतिया/तब जागे लागेले
मन में बिरहा के अगिया/तब लागे लागेले
हम त सूतल नगिनिया के जगावते रहनी हँ!

हमरा पूरा रे इयाद बाटे/ओह दिन के बात
ऊ जे जमुना किनरवा/ऊ अँजोरिया के रात
बाकिर काहे खातिर करेले/ई मरम के घात
हम त मनवाँ के चानवाँ तनावते रहनी हँ !

(दू)

राउर मरजी, रउवाँ मानी ना मानी !

केकरा से ना गलती होला
फुन्सी के जनि करीं फफोला
मत बातन के आउर सानी ! राउर मरजी रउवा मानी ना मानी!

मनसा ना कुछ दोसर रहुए
बस, असहीं कुछ बात कहउए
टूटे के हद तक मत तानी। राउर मरजी, रउवा मानी ना मानी!

नइखे लागल कवनो झगड़ा
छोड़ीं अब रगड़ा पर रगड़ा
एतना मति बनि जाईं गुमानी। राउर मरजी रउवा मानीं ना मानीं!

सोचीं, जे का सोची दुनियाँ
बात धुने में लोगवा धुनिया
झुठहूँ के अउर ठेठाईं जनि पानी। राउर मरजी,
रउवा मानीं न मानीं!

का फैदा कइला के नंगा
अब रउआ बनि जाईं गंगा
कुछुओ भइल नाहीं, अस मन जानीं। राउर मरजी,
रउवा मानीं न मानीं ! ••

(तीन)

जिन्दगी बाँध के बइठल रहीं तोहरे खातिर।
अपनहीं आप में पइठल रहीं तोहरे खातिर।

मन के रसरी त जरल आग से दुनिया के मगर।
खाक होके भी हम अइँठल रहीं तोहरे खातिर।

जिन्दगी लाख धुँआइल त धुँआइल बाकिर।
आग जइसन तबो सइँठल रहीं तोहरे खातिर।

नील आकाश में सुरता के जब घिरल बदरी।
मोर बन के तबे थिरकल रहीं तोहरे खातिर।

प्रान-वंशी के लहर साँस के संगीत भइल।
बन के जमुना तबे थिरकल रहीं तोहरे खातिर।

(चार)

जिनगी सिराइल अइसहीं, कुछ जीत में, कुछ हार में,
एह हार-जीत का खेल में, मन के चढ़ाव-उतार में।

ओह जीत से का मिल गइल, का ना मिल सकल एह हार से
सोचलीं त लागल, व्यर्थ ई जिनिगी गइल तकरार में।

कवनो पता ना रहे ओ पतइन का, कि हम कहवाँ गिरब
पेड़न से जे झरकत रहल उधियात एह पतझार में।

मन जाने कहवाँ अटक गइल, मंजिल के राह भटक गइल
ई भुला गइल कि दिया के हम निकलल रहीं अंधियार में।

घर त जरवलीं हम, मगर आपन ना, दोसरा लोग के
अब कइसे सामने जाईं हम, कबिरा खड़ा बा बजार में।

एही आस में बइठल हईं मन मार के चुपचाप हम
भले देर होय अन्हेर ना, भगवान का दरबार में।

••

www.bhojpurisahityangan.com

पाण्डेय कपिल : जिनिगी के हिसाब

भगवती प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी आन्दोलन के संगठनात्मक अगुवाई आ सिरिजना के अभूतपूर्व ऊँचाई देबेवाला शख्सियत के नाँव ह– आचार्य पाण्डेय कपिल। एक ओर 'फुलसुंघी' जइसन जियतार – यादगार उपन्यास के कामयाबी, उहँवें गीत, ग़ज़ल, दोहा के दुनिया में मील के पाथर गढ़ेवाला व्यक्तित्व। सन् 1970 से ग़ज़ल – लेखन में सक्रिय आचार्य पाण्डेय कपिल के गीत – संग्रह **'भोर हो गइल'** 1971 के गीत त शोहरत के बुलन्दी के छुअबे कइलन स, ओह में शामिल दूगो ग़ज़लो चरचा का केन्द्र में रहली स, जवना के नतीजा ई भइल कि उहाँ के ग़ज़ल - संग्रह **'कह ना सकलीं'** 1995 के एकावन गो ग़ज़लन के मार्फत ग़ज़लगो अइसन बहुत किछु कहि गइल रहे जवन ओकरा पहिले केहू ना कहि सकल रहे। आगा चलिके **'परिन्दा उड़ान पर'** के परिन्दा अइसन उड़ान भरले रहे कि ग़ज़ल कहे आ जाँचे – परखे वाला लोग सुखद अचम्भा में परि गइल रहे। ग़ज़ल का सँगहीं **'जीभ बेचारी का कही'** के दोहन के मारक आ बेधक – क्षमता देखते बनत रहे। एह सब उत्कृष्ट सिरिजनशीलता का बाद आचार्य जी के काव्यात्मक पहल रहल बा **दुनिया के शतरंज बिछल बा'** का रूप में, जवना में बिनल – बिछल कुल्हि एकावन गो रचना संग्रहीत बाड़ी स। इन्हनीं में अधिकतर ग़ज़ल बाड़ी स आ सँगे–सँगे चन्द गीत, मुक्तक आउर मुक्त छन्द के अइसनो रचना शामिल कइल गइल बाड़ी स, जवन पहिलहीं से चर्चित बाड़ी स।

वैश्वीकरण के एह बाज़ारवादी दौर में शतरंजे नियर जिनिगी में शह – मात कि खेला बदस्तूर जारी बा, तबे नू ग़जलगो के शीर्षक ग़ज़ल में ई कहे खातिर अलचार होखे के परत बा, पढ़निहारन के आगाह करत कि :

'दुनिया के शतरंज बिछल बा, खेलीं सम्हर – सम्हर के
जनीला नू जे होला घोड़ा के चाल अढ़ाई !'

नेह – नाता, भाई – चारा आ सोच त बिकाते बा, मनई अब संसाधनो बनि चुकल बा आ इंसानियत के मोल – तोल, बैपार जारी बा :

'अब बाजारु माल भइल बा आदमी
आदमियत के होखत अब व्यापार बा। '

बाकिर दुनिया के रंग बदलत गिरगिटी सुभाव में समाज के सकारात्मक तव्दीली के मन – मिजाज कतहीं नजर नइखे आवत। ई रंग – ढंग रचनाकार के सालत बा :

'युग त बदलल, समाज ना बदलल
लोग के मन – मिजाज ना बदलल। '

तबे नू जिनिगी एगो 'खामोश हलचल' आ 'जल बिना मछरी' बनिके रहि गइल बिया :

'जिन्दगी खामोश हलचल हो गइल
जिन्दगी मछली बिना जल हो गइल।'

बुढ़ाइल (वार्धक्य) जिनिगी पर रचाइल पति – पत्नी के सुखमय संसार में 'जब एगो ना रही त दोसरका के का होई' के सवाल मरम के बेधला बेगर नइखे रहत :

'नइखी जानत जे दोसर के का होई
जब एगो मउअत के चद्दर तानी जी ।'

रचनिहार के भरपूर भरोसा बा कि सुख ना, बलुक दुखे जिनिगी में आस – बिसवास लेके आवेला :

'मत पिलाई जाम सुख के दुख सम्हारे वासते
सच कहीं त दुख बनल एह जिन्दगी के बल हवे।'

ताज के गरदन काट समय के देखियो के ग़ज़लगो कतहीं से निरास – हतास नइखे। आस्था – बिसवास के एगो सुर देखी :

'सउँसे सेना लेके लड़िहें भलहीं दुर्योधन
जेने होइहें किसुन कन्हैया उनके जय होई।'

संग्रहीत ग़ज़लन में जिनिगी के बेबसी, लौकिक – अलौकिक प्रेम, अनुभव के पोढ़ता, अनुभूति के सघनता आ जिजीविषा के गूँज ढेर देरी ले आँतर के भीतर पइसि के उदबेगत रहत बा। ई ग़ज़ल सही माने में भोजपुरिया मुहावरा बा रंग में रंगाइल बाड़ी स। ओइसे त इन्हनी में छोट–बड़–दूनों बहर के ग़ज़ल बाड़ी स, बाकिर छोट बहर के ज्यादातर ग़ज़लन के कसाव आ लयात्मकता देखते बनत बा। भाषा के पनिगर प्रवाह आ अत्यन्त सहजता से गहिर चोट करेके रचनात्मक कौशल इन्हनीं में बखूबी देखल जा सकेला। मूल्यबोध के एहसास करावे वाली, जीवन – दर्शन से लबरेज ई ग़ज़ल 'सोच के उठान' के सबूत पेश करत बाड़ी स। मिथकन के आज के संदर्भ में सटीक प्रयोग इन्हनीं के एगो आउर खासियत बा। ''मोती जइसन बा ओस सजल / पोखर के पुरइन पात भइल'' के कुदरती छटा भला केकर मन ना मोही!

संग्रह के आधा दर्जन मुक्तक, 'राउर मरजी' गीत आ समकालीन कविता 'कुत्ता के मउअत' से कृति के अभिनव आयाम मिलत बा। एगो गीत में 'मन के बात' बतावत गीतकार कठिन –से–कठिन दौरो में हिम्मत

www.bhojpurisahityangan.com

ना हारे आ अनवरत आगा बढ़त जुझारूपन बरकरार राखे खातिर अभिप्रेरित करत कहत बा :

'जिनिगी के जीयल ह
बड़की लड़ाई
डेगे–डेग होखेला
पहाड़ के चढ़ाई
मिले जब घात पर घात
केहू जूझत नइखे।'

आज जब राष्ट्र–प्रेम आ देस खातिर जिए–मरे के भावना के लगातार छरन होत जा रहल बा, कवि राष्ट्रीयता के जोत जरावल जरूरी जिम्मेवारी बूझत बा आ 'भारत – गीत' का जरिए अपना देस के विलक्षण खूबियन के जियतार ढंग से चित्र उकेरत पढ़निहार के विकल कऽ देत बा।

पचपन गो रचनन के एह संग्रह में समाज के बदलत सरूप, आम अदिमी के जिए–मरे के बेबसी, कठकरेजी सुभाव आ विषम हालातो में जिनिगी के सार्थक बनावे बदे चट्टान नियर अडिग होके संघर्षशीलता के मिसाल पेश करेके उत्प्रेरणा खास तौर से रेघरियावे जोग शाश्वत अभिव्यक्ति बा। कवि हर रचना में मनुजता के पच्छ में ठाढ़ लउकत बा। एह से एह निठुर समकाल में एह कृति के उपादेयता अउर बढ़ि जात बा।

ई अनुपम संग्रह भोजपुरी के नामी – गिरामी ग़ज़लगो –गीतकार आदरणीय जगन्नाथ जी के समर्पित कइल गइल बा। उहाँ के संबोधित एगो ग़ज़ल में पाण्डेय कपिल जी के कहनाम बा :

'अब ना कविता लिखाता जगन्नाथ जी
मन ना लागल बुझाता जगन्नाथ जी!'

उहँवें एगो शेर में उहाँ के मौन के ताकत के इजहार करत कहले बानीं :

'बात जे मौन रहके कह दिहलीं।
लाख चहलो प ऊ कहा ना सकल।'

उमिर का 87वाँ बरिस में भोजपुरी के निष्ठावान पाण्डेय कपिल जी एहू परी रचना कर्म से जुड़ल – बन्हाइल, भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन क गतिशीलता के जीवन्त साखी बानी। ••

पो० बा० - 115, पटना 800001 (बिहार)

कुछ छन्द/सावन के

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

उमड़त-घुमड़त, आइ बदरवा, जल बरिसावे, सावन में।
पनिया पी-पी, ताज-तलइया, जिय जुड़वावे, सावन में।
दादुर टर्र-टर्र, झिंगुर झन-झन, बीन बजावे, सावन में।
कोइलिया कजरी गा-गा के, प्रीति बढ़ावे, सावन में।।

बदरा गरजे, बिजुली तड़पे, जिया डरावे, सावन में।
परदेसिया के, सुधि सतावे, नींन उड़ावे, सावन में।
बदरी बीच चनरमा छुपि-छुपि, लगल बिरावे, सावन में।
धरती पहिरि, सबुज रंग सारी, हिया लुभावे, सावन में।।

होइ निबावग, खुश किसान अब, हरख मनावे, सावन में।
बियहलि बिटिया, के ससुरारी, तीजि पठावे, सावन में।
भाई-बहिना से, हथवा में, राखी बन्हवावे, सावन में।
'रसराज' इ सावन, क महिमा, का हऽ, बतलावे, सावन में।।

••

ग्रा०पो०-मैरीटार, बलिया (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी लोक आ लोक संस्कृति (अर्थ, आधार आ विशेषता)

डॉ जयकान्त सिंह 'जय'

भोजपुरी लोक जेतने पुरान बा ओतने विस्तारो लेले बा। एकर विशेषता जाने खातिर भोजपुरी भाषा, संस्कृति आ साहित्य का संदर्भ में प्रयुक्त लोक शब्द के अर्थ जाने के होई। एह से सबसे पहिले 'लोक' शब्द के अर्थ आ ओकरा अन्तर्गत आवेवाला व्यक्ति, परिवार, समाज, रीति–रिवाज, भेस–भूसा, खान–पान, आदत–स्वभाव वगैरह का बारे में जाने के होई।

'लोक' बहुते पुरान आ बहुअर्थी शब्द ह। बाकिर, कवनो भाषा, संस्कृति चाहे साहित्य के संदर्भ में एकर बेवहार आम आदमी, जनता, जन–समुदाय अथवा सामान्य जन वगैरह के अर्थ में पावल जाला। विद्वान लोग के अनुसार सामान्य तौर पर प्रकृतिक परिवेश में आधुनिकता के बाहरी ढकोसला मतलब आडम्बर आ बनावटीपन से निसोख अबूझ–अछूता गाँव भा नगर में सहज–सरल आ स्वाभाविक जिनिगी जीयेवाला ऊ आम आदमी, सामान्य जन अथवा जन–समुदाय, जेकरा ज्ञान के आधार पोथी ना होके उनका रोज–रोज के जीयल–भोगल जीवन के अनुभूति होले आ जिनकर दिनचर्या, निजी, पारिवारिक आ सामाजिक संबंध, रीति–रिवाज, भेस–भूषा, खान–पान, आचार–विचार, आदर–स्वभाव वगैरह, सउँसे जीवन व्यापार प्रायः परम्परागत नियमन से नियंत्रित होले, 'लोक' कहल जालें। भोजपुरी में एह 'लोक' शब्द के घोषीकरण उच्चारण प्रवृति के कारण 'लोग' के रूपो में उच्चारण पावल जाला। भोजपुरी लोक अथवा लोग सब का विशेषतन से परिचित होखे खातिर उनका निजी, पारिवारिक आ सामाजिक संबंधन, रीति–रिवाजन, भेस–भूषा, खान–पान, आदत–स्वभाव वगैरह के विषय में जाने के होई।

भोजपुरी लोक में व्यक्ति आ ओकर पारिवारिक-सामाजिक संबंध।

भोजपुरी लोक में व्यक्ति:

भोजपुरी लोक के आदमी सहज, सरल, निहायत सीधा, आधुनिक आडम्बर आ बनावटीपन से अंजान जमीन से जुड़ल 'सादा जीवन उच्च विचार' का आदर्श के जीयेवाला व्यक्ति होलन। उनका कर्मठता, ईमानदारी, विश्वसनीयता, जुझारूपन, धीरता–वीरता, दयालुपन, दानशीलता क्षमाशीलता आ परोपकारी प्रकृति के उल्लेख भारतीय सहित अनेक यूरोपीय विद्वान लोग कइले बा। डॉ0 ग्रियर्सन भोजपुरी के बलशाली जाति के भाषा कहले बाड़न 'भोजपुरी भाषी बहुते निर्भीक आ निडर होलन।' भारतीय सभ्यता आ संस्कृति के विकास में बंगाली आ भोजपुरी भाषी जनता का महत्वपूर्ण भूमिका के सराहना करत ग्रियर्सन कहले बाड़न, कि 'एह देश का सभ्यता–संस्कृति के विकास में बंगाली लोग के कलम आ भोजपुरी लोग के शौर्य–पराक्रम के सबसे लमहर योगदान बा।' भोजपुरी लोक के व्यक्ति का एही चारित्रिक विशेषतन के कारण भोजपुरी क्षेत्र के वीरप्रसूता आ रत्नगर्भा कहल गइल बा। एह लोग के वीरता, विश्वसनीयता आ स्वामि–भक्ति के कारण हर काल के भारतीय शासक अपना सेना में अधिक से अधिक भोजपुरी जवानन के राखत आइल बाड़न। भोजपुरी लोक का व्यक्तियन में सबसे लमहर विशेषता ई पावल जाला कि ऊ अपना परिवार, समाज आ देश का हित खातिर कवनो तरह के बलिदान देवे खातिर हर छन तइयार रहेलन। वर्तमान आधुनिकता के आँधी में ऊ अपना पारिवारिक आ सामाजिक संबंधन आ दायित्वन के हर हालत में निर्वाह करत नजर आ रहल बाड़न।

परिवारिक संबंध:

स्माजशास्त्री लोग परिवार के मुख्य रूप से दू कोटि में बँटले बा– पितृसत्तात्मक परिवार मतलब पिता (पुरूष) के प्रधानता वाला परिवार आ मातृसत्तात्मक परिवार मतलब माता (महिला) के प्रधानता वाला परिवार। भोजपुरी लोक में शुरू से पितृसत्तात्मक परिवार के परम्परा चलल आवत बा। परिवार के सबसे पुरान पुरूष सदस्य घर के मुखिया चाहे मालिक होलन आ उनका ना रहला पर उनकर जेठ बेटा (पुत्र) के घर के मलिकांव दिआला। पितृसत्तात्मक भोजपुरी परिवार के सबसे बड़ विशेषता ओकर संयुक्त परिवार–प्रणाली रहल बा आ आजुओ एक्का–दुक्का अपवादन के छोड़ के गाँवन में संयुक्ते परिवार के प्रचलन पावल जाला। एह संयुक्त परिवार में एके संगे माई, बाप, भाई बहिन, बेटा–पतोह, पोता, पोती, चाचा–चाची, आजा–आजी (दादा–दादी), ननद–भउजाइ, जेठानी–देवरानी, भतीजा–भतीजी, भावे–भंसूर, देवर–भउजाई वगैरह सब सदस्य खूब प्रेम आ सुख–शांति का साथे एक दोसरा का सुख–दुख

www.bhojpurisahityangan.com

के खेयाल करत जीवन–बसर करे के आदी होलन। भोजपुरी लोक का एह संयुक्त परिवार का सदस्यन का संबंधन के दूगो कोटि होला–परिवार के ऊ सदस्य जे एके संगे एके घर में अपना–अपना निर्धारित संबंध मर्यादा के पालन करत परिवार का दुख–सुख के सहयोगी होलन आ दोसरा कोटि में ऊ सम्बन्धी अथवा नातेदार–रिश्तेदार होलन, जेकर संबंध कवनो–ना–कवनो रूप में ओह परिवार से भइला के बावजूद ऊ लोग आन परिवार के सदस्य हो जालन आ मोका–कुमोका अथवा मांगलिक–अमांगलिक अवसरन में पर एकट्ठा होके अपना वृहद पारिवारिक संबंधन के सुन्दर स्वरूप प्रदान करेलन। पहिलका कोटि में सदस्य लोग त उहे होला जेकर चर्चा अबहीं हमनी माई, बाबूजी, चाचा–चाची, बेटा–बेटी, भाई–भतीजा वगैरह के रूप में कइली ह बाकिर नातेदार–रिश्तेदार वाला कोटि में आवेवाला सदस्यन में प्रमुख होलें–फूफा, फूआ, मउसा, मउसी, साला–बहनोई, दामाद, साली, सरहज, समधी, समधिन, नाना–नानी, मामा–मामी, भगिना–भगिनी, नाती–नातिनी, ममेरा भाई, ममेरा बहिन, साढ़ू, ससुर, सास, ननदोई वगैरह। एह तरह से भोजपुरी परिवार के स्वरूप बहुते विस्तृत, सुसंगठित आ सुन्दर–सुखद होला।

बाकिर, आधुनिक दुनिया के प्रभाव आ पश्चिमी प्रगतिशील सोच के परिणाम स्वरूप अब भोजपुरियो क्षेत्र में संयुक्त परिवार के ताना–बाना टूट रहल बा। एकर कइगो आउर कारण बाड़े स। एक त अब क्षेत्र का जीविका के मुख्य पेशा खेती ना रहल आ नोकरी–चाकरी के फेर में परिवार का सदस्यन के अलग–अलग औद्योगिक नगरन–महानगरन में जाये आ रहे–बसे के पड़ता आ दोसरे संयुक्त परिवार का संबंधन में गुण रहे त दोषो कम ना रहे। एक ओर संयुक्त परिवार में पढ़ल, बेपढ़ल, कमासुत, निकम्मा, मजबूत–कमजोर, हर सदस्य के जीवन बसर हो जात रहे। सभका संगठित शक्ति के दबदबा समाज पर रहे, केहू चाहियों के ओह परिवार के अहित ना सोंच सकत रहे। एक–दोसरा के सुख–दुख में सभे सहायक होत रहे, खेती–गिरहस्थी के मजबूत बेवस्था रहे, उहँवे परिवार के कुछ अइसन खामियो रहे जवना से ई परिवार प्रणाली टूटे खातिर मजबूर हो गइल। एह परिवार में कुछ सदस्य त कर्त्तव्य बोध के कारण खटत–खटत बेहाल रहस आ कुछ निपरवाह आलसी आ देहचोर बनल रहस कि कुछुओ होखे, घर से खाये के भोजन आ पेन्हे के बस्तर मिलिये जाता त देह ठेठवला के का गरज बा। दोसरे अइसने काहिल–कामचोरन के खाली दिमाग परिवार के गाँव–समाज के कवनो–ना–कवनो झंझट में जरूर डाल देत रहे। कहलो जाला–खाली मन शैतान के डेरा।' अलग–अलग गाँव–परिवार से आइल जनानी वर्ग (मेहरारू लोग) में कमे पटे। खास कर के भोजन बनावे, परोसे, अपना सवांग (पति) आ बेटा–बेटी के अधिका खेयाल आ अनका के प्रति उपेक्षा के भाव एह परिवार का टूट के मुख्य कारण बनत गइल। एह परिवार का सदस्यन, जइसे–माई–बेटा, माई–बेटी, बाप–बेटा, भाई–बहिन, मरद्–मेहरारू में जेतना मधुर सम्बन्ध पावल जात रहे ओतना सास–पतोह, ननद–भउजाई, देवर–भउजाई, भसुर–भावे (भवहि), वगैरह में ना पावल जात रहे। एह अनेक कारनन से संयुक्त परिवार के संबंध बिखड़त चल गइल आ धीरे–धीरे अपना–अपना मियाँ–बीबी–बच्चा तक सिमटत चल गइल, जवना के सबसे लमहर खामियाजा परिवार के बुर्जुग सदस्य लोग का भोगे के पड़ रहल बा। अइसे आज जब कवनो एकल परिवार पर कवनो तरह के दुख–तकलीफ आवता त ओकर सदस्य संयुक्त परिवार का ओह सुमधुर संबंधन का स्वरूप के जरूरत जरूर महसूस करत मन मसोस के रह जात बाड़न। जवना के फरिआवत डॉ0 प्रकाश उदय एगो लोकोक्ति के सहारा लेत व्यंग्य कइले बाड़न "सास ना ननद घर अपने आनन्द, पुआ गटकीं त गटकीं। बाकिर के ठोकी माथ आ के दीही पानी जब अँटकी।"

समाजिक संबंध:

व्यक्ति आ समाज के संबंध अटूट होला। व्यक्ति के समूह से समाज बनेला आ समाज का सहयोग से व्यक्ति के विकास होला। भोजपुरी समाज भोजपुरी भाषी क्षेत्र के कुल निवासी लोग, (जवना में सब जाति, वर्ग, वर्ण आ धर्म–पंथ के नर–नारी शामिल होलें) के संगठित समूहन, संस्थन, रीति–रिवाजन आ समान संस्कृति के मेल से बनल एगो व्यापक आ विशिष्ट सामूहिक इकाई ह। जवन शुरू से लेके आज तक अपना स्वाभाविक जीवन–शैली, रहन–सहन, रीति–रिवाज, आस्था–मान्यता, आपसी भाईचारा, देशप्रेम, त्याग–बलिदान, क्षमा–दया, निडर–निर्भीक आ बिना कवनो लाग–लपेट के सही समय पर सही–सही बात बोले खातिर सउँसे दुनिया में जानल जाला। ई समाज भारतीय सभ्यता आ संस्कृति के एगो छोट नमूना के रूप में अपने–आप के प्रस्तुत करेला। विविध जातीय पेशा, वर्ग, वर्ण, धर्म आ मत के माने आ आस्था राखेवाला लोग बिना कवनो ऊँच–नीच आ छुआछूत का भाव के मन में लेअबले जिनगी का हर मांगलिक–अमांगलिक अवसर सहित पारस्परिक सहयोग के सहारे जीवन

www.bhojpurisahityangan.com

जीयेवाला होलन। भोजपुरी समाज से संबंध राखेवाला हर एक आदमी अपना खातिर 'मैं' ना 'हम' शब्द के बेवहार करेला। ई 'हम' शब्द सउँसे समूह अथवा समाज का मेल–मिलाप के बोध आ समष्टि–चेतना के ज्ञान करावेला। जवना के सही चित्रण लोक साहित्यन आ खास कर के संस्कार गीतन में पावल जाला। बाकिर फिरंगियन का शासन काल में आ देश आजाद भइला के बाद वोट के राजनीति करे वाला ओछ भाव का राजनेतन के फूट डाल के राज करे के नीति के कारण आज भोजपुरियो समाज के बीच पहिले वाला मधुर संबंध आ सहयोग का भावना में कमी देखे के मिल रहल बा। एकरा बावजूद भोजपुरी लोक के व्यक्ति, परिवार आ समाज का बीच के आपसी सहयोग–संबंध के भाव एतना ना पुरान आ मजबूत बा कि लोग गवें–गवें फूट डाल के राज करे के साजिश के बोध होखते समाज के एकजुट करे में लाग गइल बाड़न। जवन समाज आ देश खातिर शुभ सूचक बा।

भोजपुरी लोक में रीति रिवाज:

हर समाज के आपन कुछ खास रीति–रिवाज होला। जवना से ओकर पहचान बनेला आ ओह जाति अथवा समाज में जीयेवाला हर व्यक्ति का ओकर पालन करे के पड़ेला। भोजपुरियो क्षेत्र के आपन कुछ खास रीति–रिवाज बा, जवन एकरा लोक संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग आ आधार ह। इहँवा भोजपुरी लोक का कुछ खास रीति–रिवाजन के परिचित होखीं।

भोजपुरी क्षेत्र के ई रिवाज बहुत पुरान बा कि ओह व्यक्ति, परिवार चाहे समाज का सदस्य के विशेष मान आ महत्व दीहल जाला जे परिवार, समाज अथवा देश का हित खातिर हर छन तत्पर रहेला, अपना ज्ञान आ योग्यता के बढ़ावे का संगही अड़ोस–पड़ोस का विकास खातिर प्रयत्नशील होला। परिवार के मुखिया चाहे, अपना से अधिक उमिर का व्यक्ति के आदर दीहल लोग आपन कर्तव्य समुझेला। जीवनयात्रा का हर संस्कार विधानन में समाज का हर जाति, वर्ग, वर्ण आ समुदाय के लोग के सहज–सहयोग मिलल करेला। हर मांगलिक अथवा अमांगलिक अवसरन पर भोजपुरी समाज, परिवार आ रिश्तेदार का हर सदस्यन के उपयोगिता खातिर विधि–विधान बनावल गइल बा। परिवार में पतोह आ भावे (छोट भाई के जनाना) अपना ससुर आ भसुर के सोझा ना होली। बड़–बुर्जुग का सोझा मरद–मेहरारू आपुस में कवनो बतकही करे से परहेज करेलन। कवनो आयोजन अथवा समस्या के समय घर–परिवार का हर सदस्य के राय जान के अंतिम निर्णय लेवे के अधिकार परिवार का मुखिया के होला। समाज खातिर अशोभनीय काम करेवालन के अछूत मानल जाला। भोजपुरी समाज में विधवा–विवाह के रिवाज आजुओ नइखे। परम्परा के चलल आवत बाल–विवाह आ वृद्ध–विवाह के रिवाज लगभग खतम हो गइल बा। तिलक–दहेज के बढ़त माँग के वजह से योग्य लइकी के घर–वर मिले में परेशानी होला आ अनमेल विवाह के स्थिति पैदा हो जाले।

भोजपुरी लोक के भेस-भूषा, खान-पान आ स्वभाव:

भेस–भूषा, खान–पान आ आदत–स्वभाव कवनो भाषा भाषी समाज का सभ्यता आ संस्कृति के अंग आ आधार ह। भेस (वेश) भूषा के अन्तर्गत ओह समाज का नर–नारी के अंग–वस्त्र, रूप–सिंगार आ गहना–गुरिया (आभूषण) वगैरह आवेला। खान–पान के संबंध त ओकरा जीवन आ जीवनशैली से जुड़ल होला, जवन ओकरा आचार–विचार आ रीति–रिवाज के भी परिचय दे देवेला आ आदत–स्वभाव त ओकरा सउँसे जीवन चरित्र के आइना होला, जवना के माध्यम से व्यक्ति अथवा ओकरा समाज का हर अच्छाई–बुराई के जानल जा सकेला। भोजपुरी लोक में प्रचलित भेस–भूषा, खान–पान आ उनका आदत–स्वभाव के स्वरूप आ विशेषता के स्वरूप आ विशेषता बा।

भोजपुरी क्षेत्र के लोग तरह–तरह के अंग–वस्त्र धारण करेलन, जवना के अध्ययन खातिर चार भाग में बाँटल जा सकेला–

1. लइकन के कपड़ा (वस्त्र)
2. लइकिन के कपड़ा (वस्त्र)
3. मरद के कपड़ा (वस्त्र) आ
4. मेहरारू के कपड़ा (वस्त्र)

1. लइकन के कपड़ा (वस्त्र) : अइसे त 'जनमतुआ' (हाल के जनमल लइका चाहे लइकी) के त साफ–सुथरा कपड़ा का टुकड़ा में लपेटल–तोपल जाला। ओकरा बाद लोक परम्परा के मोताबिक नया कपड़ा ना देके कवनो छोट लइका के छोड़न–छाड़न पेन्हावल जाला ओकरा बाद भगई (लंगोटी), गंजी, पैंट, बुसट, सरदी का मौसम में सुइटर, टोपी, गांती, वगैरह पेन्हावल जाला। बाकिर तनिका सेयान होते लइका आ लइकी का वस्त्र के पेन्हावा–ओढ़ावा में अन्तर आ जाला। लइका के जहाँ गंजी, बुसट, पैंट, लंगोटी, कछिआ वगैरह पेन्हावल जाला उहँवे लइकी के बुसट आ पैंट के जगह फ्रॉक,

www.bhojpurisahityangan.com

कछिआ वगैरह पेन्हावल जाला।

2. मरद (पुरूष) के कपड़ा (वस्त्र): भोजपुरी लोक में पुरूष वर्ग वस्त्र के रूप में शरीर का अंग का हिसाब से वस्त्र धारण करेलन। सिर (माथ) पर मुख्य रूप से पाग (पगड़ी), सरदी में टोपी, ऊनी कनटोप, गुलबन्द (मोफलर), गला आ कान्ह पर गमछा (अँगौछा), सरदी में चादर, देह पर कुर्ता (चूड़ीदार, पंजाबी, छवकलिया, पूरा बाँह के,) आधा बाँह के, कालर वाला, बिना कालर वाला, बगलबन्दी, मिरजई, शेरवानी, रूई गर्दा गंजी, अधोवस्त्र के रूप में बंडी धोती, लंगोटी, लुंगी, पैजामा पहिरेलन। गरमी आ बरसात में छाता हमेशा साथे रहेला। नवका जमाना के भोजपुरिया लोग पैंट, शर्ट, कोट, टाई सब पहिर रहल बाड़न। गोड़ (पाँव) में खड़ाऊँ, खड़पा (चटाकी), जूता, चप्पल धारण करेलन। बिआह करे जात दुल्हा का वस्त्र के चाहे ऊ कुर्त्ता, धोती, शेरवानी, टोपी चाहे शर्ट, पैंट आ कोट टाई पहिरस, उनका लिबास के जामा–जोड़ा कहल जाला। एह अवसर पर ऊ माथ पर सेहरा, मउरि, टोपी आ पाँव में जूता–मोजा पहिरेलन। भोजपुरी लोक का लइकन, लइकिन चाहे पुरुष वर्ग का अंग वस्त्र के उल्लेख लोकगीतन सहित अनेक कवि लोगका कवितन में भइले बा; जइसे–

माथे पगड़ी, हाथे लठ
हई देखीं भोजपुरिया ठठ।

XX XX XX

धोती आ कमीज टोपी आस कोट सिलाई देहब
इतर के बास तेल भूतनाथ माखिये।

XX XX XX

गोड़वा में जूता नइखे, सिरवा पर छातावा ए सजनी
कइसे चलिहन रहतवा, ए सजनी
(विदेसिया– 'भिखारी ठाकुर)

3. मेहरारू (महिला) लोग के वस्त्र : भोजपुरी क्षेत्र के स्त्री लोग अंगवस्त्र के रूप में मुख्य रूप से लुग्गा, लुगरी (लुग्गा के पुरान रूप), झूल्ला, कुरती, चोली, ओढ़नी, साया का रूप में बिना सिलवावल कपड़ा के टुकड़ा चाहे सियावल अधोवस्त्र साया वगैरह धारण करेला। लुग्गा के अब साड़ी कहल जाता। आज के नारी लोग त समीज, सलवार, नाइटी, वगैरह सब पहिरे लागल बा। पाँव में जूती, चप्पल, खपरा (चटाकी) पहिरेला लोग। भोजपुरी क्षेत्र में पहिले लइका–सेयान, मरद–मेहरारू केहू खातिर नया वस्त्र कवनो तीज–त्योहार, मंगल–उत्सव के अवसर पर खरीदात रहल ह अब ऊ बात नइखे रह गइल। सजे–सँवरे का मामला में मेहरारू लोग ज्यादे जागरूक होला। लइका अथवा पुरुष वर्ग नाऊ (हजाम जाति) जाति के भाई लोग से दाढ़ी मोंछ बनवा लेवेलन, बाल–हजामत 'करा लेवेलन। साबुन शेम्पू से नहा धोआ के साफ–सुथरा हो जालन। ओहीजा महिला वर्ग में सजे सँवरे के सवख ज्यादे होला। साबुन–शैम्पू से नहा–धोआ के तरह–तरह का सिंगार के साधन–जइसे–काजर, लिपिस्टिक, पाउडर, आलता, नोह पालीस, इतर–फूलेल, हेयर बैंड, गजरा वगैरह का संगे–संगे अंग–अंग के हिसाब से आभूषण (गहना) धारण करेली, जइसे–सिर पर मंगटीका, सैफ्टीपिन, मोती, लटकन, झबिया, नाक में झुलनी, नथिया, नथुनी, छूँछी, बुलाकी, कान में कुंडल, बाली, टप्स, कनफूल, झुमका, तरिवन, कंठ में कंठा, कंठेसर, हँसुली, गरदन आ छाती पर हार, चन्द्रहार, तिलरी, सिकड़ी मोहर माला, बाँह में बाजुबन्द, जोरान, विजाथठ, पहुँचा में कँगना, पहुँची, चूड़ी, हथउरा, हाथ में अंगुरी में अँगुठी, हथसंकर, कमर में करधनी, डँड़कस, पाँव में पायल, पायजेब, छड़ा, झाँझ, गोड़ाव, नुपूर, पाँव के अंगुरी में बिछिया वगैरह पहिरेला। मेहरारू आ लइका–लइकी सन के वस्त्र आ गहना से जुड़ल अनेक लोकगीत भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित बा; जइसे–

छठ में के लुगा लुगरी हो गइलें
ओकरा में पाँचगो पेवन सटइलें

XX XX XX

खोल धनि लुगरी, पहिर धनि चुनरी
जेहि से पियवा रहेला लोभाई

XX XX XX

बाबू का डाँड़े करधनिया, देखत नीक लागेला।
अवरू पाँव के बाजे पैजनिया, अजब छवि छाजेला।

खान-पान:

भोजपुरी में एगो लोकोक्ति प्रचलित बा– 'जइसन खइबऽ अन्न, ओइसन होई मन आ जइसन पियब पानी ओइसन होई बानी।' मतलब अन्न (भोजन) आ पानी के मनुष्य के जीवन पर बहुते प्रभाव होला बल्कि भोजन आ पानी के बिना मनुष्य का जीवन के कल्पनो नइखे कइल जा सकत। काहेंकि जवना अन्न आ पानी के प्रभाव से मनुष्य के मन आ बानी प्रभावित होला, इहे दुनो त मनुष्य के संसार का आउर जीवन से ऊपर उठवले बा। एकरे बदौलत त मनुष्य दुनिया के अपना काबू में रखले बा। एही से प्राचीन भोजपुरी लोक के ऋषि–मुनि आ उनका आचरण से प्रभावित सामान्यो जन अन्न–पानी मतलब खान–पान का शुद्धता पर बहुत जोर देत रहलें। उपनिषदों में कहल गइल बा कि 'अन्नमयं हि सौम्य मनः।"

www.bhojpurisahityangan.com

मतलब भोजन के अनुसारे मन बनेला। आयुर्वेद में साफ–साफ समझावल गइल बा कि जवन अन्न हमनी खाइले, ओकर सबसे पहिले रस बनेला। ई रस शरीर में रह जाला आ अन्न के जवन भाग रस ना बन पावे ऊ शरीर से 'मल' रूप में बाहर निकल जाला। मतलब रस अन्न (भोजन) के सार ह, फेर क्रम से रस के सार खून, खून के सार मांस, मांस के सार चर्बी, चर्बी के सार हड्डी के सार मज्जा (ऊ रस जवन मांस आ हड्डी का बीच रहेला) आ मज्जा के सार शुक्र अथवा वीर्य ह। जवना से मनुष्य संतान पैदा करेके क्षमता पावेला। मतलब कि शरीर का निर्माण से लेके संतान के उत्पत्ति तक में एही खान–पान के मुख्य भूमिका बा। खान–पान के मुख्य रूप से तीन गो प्रकार–सात्विक, राजसिक आ तामसिक होला, जवना के प्रभाव मन आ बानी (भाषा) पर पड़ेला। भोजपुरी क्षेत्र में खान–पान के पाँच भाग में बाँटल जा सकेला (क) मुख्य खाद्य पदार्थ–सतुआ, लीट्टी, रोटी, भात, दाल वगैरह (ख) साग–सब्जी, आलू, लौकी, कोंहड़ा, नेनुआ, भिंडी वगैरह (ग) चटनी–आँचर–आम, इमली, पुदीना, मूँगफली, नींबू वगैरह (घ) मिठाई–टिकरी, बतासा, जिलेबी, लड्डू, पंचमेल, लकठा, खुर्मा रसगुल्ला वगैरह आ (ङ) पेय पदार्थ– शरबत, लस्सी, अमझोरा, वगैरह। एकरा अलावे भोजपुरी क्षेत्र में खान–पान के अनेक प्रकार आ बनावे के अनेक विधि बा। जवन अवसर विशेष पर तइयार कइल जाला, जवना के जानकारी मेहरारूये लोग का ढेर होला।

भोजपुरी समाज में भोजन के दूगो भेद बा–कच्चा आ पक्का जवना के कवनो अवसर विशेष पर समाज के खिआवे खातिर कच्ची अथवा पक्की भोज कह के नेवतल जाला। घीव, तेल में पकावल पुआ, पूड़ी वगैरह पक्की भोज मानल जाला आ पानी में सिझावल चावल–भात वगैरह के कच्ची भोजन में गिनती होला। भोजपुरी क्षेत्र में अन्न के विविध प्रकार बा। एगो चावल के अनेक जाति पावल जाला, जवना के 'अरवा' आ 'उसिना' दू रूप में प्रयोग होला। एह 'अरवा' आ 'उसिना' चाउर (चावल) के बनावहूँ के कई गो प्रकार बा। चाउर आ गेहूँ से बनेवाला खाद्य पदार्थ (भोजन) के अलावे एह क्षेत्र में विश्वामित्री अनाज जवना के मोट अनाज कहल जाला, ओकर बेवहार खान–पान के रूप में खूब होला; जइसे– जौ, जनेरा, मकई, सावाँ, कोदो, टँगुनी, जोन्हरी, मसुरिआ वगैरह। दाल, रोटी, भात के अलावा पूड़ी, कचौड़ी, पूआ, पराठा (फारावठा), मकुनी, भाटी, भभरी, लीट्टी, ठेकुआ, खजुरिया, चोंथा, दहिबारा, महुँअर, पिठौरी, गोझा, हलुआ, लपसी, चाकरा, बजका, चप, बड़ी, करही, दूध, दही, लस्सी, सतुआ, सतुई, पापड़, तिलौड़ी, पकौड़ी, भूंजा, होरहा, तिलवा, बुकवा, कसार, घुघुनी, छोला, लावा, चिउड़ा, चिउड़ी, खाजा, वगैरह विविध अन्न से विभिन्न तौर–तरीका से तइयार कइल जाला।

साग–सब्जी का रूप में आलू, लउकी, कोंहड़ा, कटहल, करइला, तरोई, नेनुआ, बैगन, अरूई, ओल, सूरन, गोभी, सेम, साग, बोरा, कुँदरू, चठइल, कवाछ, चिचिंडा, सहिजन, मूरई, परवल, टमाटर, केरा, वगैरह के प्रयोग होला त अँचार–आम, कटहर, बड़हर, मिर्चा, आँवरा, नींबू, आलू, करइला, इमली, कदम्ब, चना, अदरख, मुरई वगैरह, चटनी–आम, इमली, कोइंत, टमाटर, अमरस, करौंधा, मुरई, धनिया, पुदीना, वगैरह, रायता,–लउकी, खीरा, बथुआ, प्याज, केरा वगैरह, खटमिट्ठी– आम, इमली, टमाटर वगैरह, मिठाई–टिकरी, जिलेबी, पटउरा, बतासा, लकठा, बुनिया, खुरमा, अनरसा, गाटा, लड्डू, पेड़ा, खजुरिया, खजवा, गुलाबजामुन, रसगुल्ला वगैरह, फल–आम, जामुन कटहर, बड़हर, नींबू नारंगी, अनार, केरा, इमली, बइर, कदम्ब, पपीता, लीची, शहतुत, बेल, शरीफा, ककड़ी, खीरा, फूट, तरबूजा, खरबूजा, अलुआ (कोन), सुथनी, गाजर, सिंघाड़ा, भटकोआ, खजूर, खाजा (ताड़ के), कोंइत, गूलर, अमरूद, सेब, आँवला, वगैरह आ पेय पदार्थ के रूप में शरबत, दूध, दही, ठंढई, भांग के शरबत वगैरह के बेवहार भोजपुरी भाषी लोग परम्परा से करत आ रहल बा। बाकिर अब त भोजपुरी क्षेत्र के लोग सात्विक, राजसिक आ तामसिक हर प्रकार का खान–पान के सामग्री; जइसे– मांस, मछरी, ताड़ी, शराब, गाँजो वगैरह के आदी हो गइल बाड़न।

स्वभाव:

जइसे भोजपुरी भाषा सहज, सरल, स्पष्ट, बोले आ लिखे में एक, स्वर प्रधान, रागात्मक आ लयात्मक होले, ओइसहीं भोजपुरी भाषी जनता के स्वभावो सहज, सरल, सीधा, स्पष्ट, बिना लाग–लपेट के बोलेवाला, कहनी–कथनी में एक, धीर–वीर–गंभीर आ साहसी होला। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय अपना महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'भोजपुरी लोक संस्कृति' में भोजपुरी जन का स्वभाव के मुख्य रूप में पाँच गो विशेषता बतवले बाड़न–स्पष्टवादिता, वीरता, वीरता के सम्मान करेवाला, साहसिकता आ कर्मठता।

कहल जाला कि 'स्पष्टवादी व्यक्ति धोखेबाज ना होखस। एकरे के संस्कृत में कहल गइल बा– 'स्पष्टवक्ता न वन्चकः'। साँच बात तीत लागे चाहे मीठ'

www.bhojpurisahityangan.com

एकर बिना विचार कइले भोजपुरी जनता दू टूकी भी बोले के जानेले। वीरता त एह जाति के मिलल दैवी उपहार ह। तबे नू वेदकाल से लेके मध्यकाल त भोज गण, जाति, भोज उपाधिधारी जारा आ उनका वंश में पैदा होखेवाला जवानन का वीरताई के गाथा दुनिया गावेले। स्पष्ट वादिता आ वीरता के नमूना के रूप में भृगुऋषि, विश्वामित्र, भोजगण, राजा भोज, मुगलन का सेना में भर्ती भोजपुरिया जवान, शेरशाह सूरी आ उनकर भोजपुरिया सिपाही, फतेहबहादुर शाही, मंगल पाण्डेय, वीर कुँवर सिंह, अमर सिंह, राजकुमार शुकुल, चितु पाण्डेय, जयप्रकाश नारायण त कवि लोग में कबीरदास, प्रसिद्ध नारायण सिंह, गणेशदत्त किरण वगैरह के नाँव आदर से लीहल जा सकेला। ई लोग वीर पुरुष का वीरता के पूजा आ सम्मान करेवाला होला। ई लोग 'राइट इज माइट' का नीति में विश्वास ना रखके माइट इज राइट (शक्तिये उचित ह) का सिद्धांत के मानेवाला होला। संभवतः एही लोग का स्वभाव के देख के शास्त्रकार लोग कहल कि 'वीर भोग्या वसुन्धरा' भोजपुरी में एगो कहाउत प्रसिद्ध बा– 'बरियार के पनही कपार पर'।

साहसिकता आ कर्मठता त भोजपुरी जनता के विशेष गुण मानल जाला। एह लोग का साहस, उत्साह, धैर्य, ईमानदारी आ कर्मठता के त हजारो उदाहरण दीहल जा सकेला। एह लोग का कर्मठता के उदाहरण एह लोग का खून–पसीना से बसावल मारीशस, फीजी, सूरीनाम, केनिया, ब्रिटिश गायना आ दक्षिण अफ्रिका के कइ एक देश बाड़न स। आजुओ भोजपुरी जनता देश का कई प्रान्तन के अपना मेहनत आ कर्मठता से सजा–सँवार रहल बा। एह लोग का स्वभाव आ चरित्र के स्पष्ट चित्रण भुवनेश्वर श्रीवास्तव 'भानु' का 'कुँवर बावनी' का एक एगो रचना में भइल बा–

भोजपुरी लोक संस्कृति:

भोजपुरी संस्कृति ओतने पुरान बा जेतना वैदिक संस्कृति। वेदकालीन काहेंकि भोजपुरी आ भोजपुर के संबंध वेदकालीन क्रांतिदर्शी ऋषि विश्वामित्र के यजमान भोजगण अथवा भोज जाति से मानल जाला। एह से भोजपुरी संस्कृति' शब्द पर विचार कर लेवे के चाहीं कि आखिर में ई 'संस्कृति' ह कवन चीज ह?

विद्वान लोग सूत्रशैली में संस्कृति में अर्थ बतावेला– परम्परागत अनुस्यूत संस्कार। मनुष्य के शुद्ध, शुभ आ सुसम्बद्ध करे के क्रिया ह संस्कार, जवना के विधान भोजपुरिये समाज में ना बल्कि सउँसे भारतीय समाज में जनम का पूर्व से लेके मरन का बाद तक पावल जाला। एही समाजगत संस्कारिकता के व्यापक रूप ह संस्कृति। बाकिर खाली संस्कारे संस्कृति ना ह। संस्कृति के आयाम बहुत व्यापक होला। संस्कार त ओकर एगो अंग भर ह। असल में कवनो देश भा क्षेत्र के संस्कृति, उहँवा का जनता अथवा जन–समुदाय के जीये के अपना ढंग के कहल जाला। एह तरह से भोजपुरी समाज के रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान, आस्था–विश्वास, धारणा–मान्यता, पर्व–त्योहार–उत्सव, धार्मिक–सामाजिक अनुष्ठान, वर्णाश्रम व्यवस्था के स्थिति, जाति–पेशा, हास–परिहास, मनोरंजन, सिंगार, रिश्ता–नाता, खेल–कूद, जीवन–मूल्य वगैरह का समन्वित रूप के भोजपुरी संस्कृति कहल जाला। डॉ. बी.एस.सान्याल 'कल्चर ऐन इंट्रोडक्शन' ग्रंथ का पन्ना–44 में कहल बाड़न कि जीवन में मूल्यन का सिद्धान्त आ बेहवहार रूप के प्रत्यन्तीकरण ह संस्कृति। एह से भोजपुरी जन–जीवन का सामान्य बात से लेके सबसे महिन उत्तिम ज्ञान आ दर्शन वगैरह सबकुछ एकरा संस्कृति के अन्तर्गत आ जालें। भोजपुरी संस्कृति के अन्तर्गत आवेवाला व्यक्ति आ ओकर पारिवारिक आ सामाजिक संबंधन के विशेषता, रीति–रिवाज, भेस–भूषा, खान–पान आ स्वभाव चरित्र के उल्लेख पहिले हो चुकल बा। अब इहाँ मुख्य रूप से भोजपुरी संस्कृति के मूल आधार भा मुख्य अंग संस्कार विधान पर्व–त्योहार आ उत्सव, आस्था–विश्वास, मुख्य पेशा आ जीवन–मूल्य वगैरह के उल्लेख कइल आवश्यक बा।

भोजपुरी लोक संस्कृति के मूल आधार अंग संस्कार विधान:

भारतीय जीवन में धर्म–कर्म के प्रमुख स्थान बा। बल्कि धर्म–सत्कर्म भारतीय संस्कृति के प्राण ह। भारतीय जन का धार्मिक जीवन में अनेक संस्कारण के महत्त्वपूर्ण विधान बा। एह संस्कार शब्द के अर्थ होला सुधार, मनोवृत्तियन के शोधन, इन्द्रियन पर बाहरी विषयन के पड़ल प्रभाव, मूल भारतीय जन में धार्मिक दृष्टि से शुभ, शुद्ध आ परिमार्जित करे खातिर होखेवाला सोलह विशेष कर्म, मन–रूचि–विचार वगैरह के उन्नत करे के कार्य, मृतक के अंत्येष्ठि क्रिया वगैरह। अइसे त शास्त्रन सहित अनेक सूत्र ग्रंथन में बहुते संस्कार विधानन के उल्लेख कइल गइल बा। बाकिर भोजपुरी जन–जीवन में मुख्य रूप से आठ संस्कारन के विधान पावल जाला–जन्मोत्सव संस्कार अथवा जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, अन्न प्राशन्न संस्कार, चूड़ाकरण अथवा मूंडन संस्कार, कर्णभेदन संस्कार, उपनयन अथवा जनेऊ (यज्ञोपवीत)

www.bhojpurisahityangan.com

संस्कार विवाह संस्कार आ अंत्येष्ठि संस्कार। एह संस्कारन में कई तरह के विधि–विधान प्रचलित बा।

जन्मोत्सव संस्कार भोजपुरी संस्कृति के पहिल आ प्रमुख संस्कार ह। जवना में कवनो नारी के संतानोपत्ति के अवसर पर एकर विधान होला। एकरा में प्रसूतिका गृह (सोइरी) के वेवस्था, डगरिन द्वारा शिशु के नारकटाई, साफ–सुथरा कइल, जच्चा के स्वास्थ सुरक्षा आ स्वच्छता के बेवस्था, सोइरी घर के दुआरी पर पसंगी जरावल, सीज के कँाट डँगल, अड़ोस–पड़ोस के महिला वर्ग द्वारा मंगल–उत्सव मनावल, सोहर, मंगल गावल जाला। नहवावन, छठी, बरही का विधियन के बाद कुल के पूरोहित बोला के बच्चा (लइका अथवा लइकी) के जनम के समय, स्थान आ तिथि के अनुसार पतरा देख के शुभकारक नामकरण संस्कार के विधान कइल जाला। धीरे–धीरे जब बच्चा बड़ होला त ओही हिसाब से ओकरा पेट के आकार बढ़ेला आ तब खाली मतारी का दूध से ओकर पेट ना भरे। जब–तब ओकरा पोसन खातिर अन्न के जरूरत होला पुरोहित से शुभ दिन पूछ के खुशी मंगल के गीत गावत पहिले–पहिल ओकरा के पुरोहित चाहे मामा के हाथ से अन्न खियावत जाला। एही संस्कार के अन्नप्राशन संस्कार कहल जाला। एकरा बाद जब बच्चा साल–दू साल चाहे पँाच साल के हो जाला त गर्भकाल से उगल ओकरा माथ का बाल के हजाम (नाऊ) जाति द्वारा कवनो मांगलिक पर्व–त्योहार के अवसर पर पवित्र नदी गंगा, गंडक चाहे सरजुग के किनारे चाहे कवनो देवस्थान पर कटवावे के विधान होला, एकरा खातिर फुआ चाहे बहिन बोलावल जाली आ उनके खोईंछा में नेग के साथे बाल काट के दिआला। एह अवसर पर नाऊ भाई का भी बच्चा के माई–बाप, चाचा–चाची आ आउर रिश्तेदार लोग से मोट नेग प्राप्त होला। एह संस्कार विधान के मुंडन अथवा चूड़ाकरण संस्कार कहल जाला।

भोजपुरी समाज में मुंडन अथवा चूड़ाकरण के बाद बच्चा के कुछ अउर सेयान भइला पर जनेऊ (यज्ञोपवीत) अथवा उपनयन संस्कार के विधान बा। ई संस्कार विवाह संस्कार के समान ही महत्त्वपूर्ण मानल जाला। एह दूनो संस्कारन के बहुते विधि एके जइसन होला। बिआहे जइसन एहू में सगुन, मटिकोड़ी, हल्दी, सँझा–पराती, मुंडन, नहछु–नहवावन, मातृ–पितृपूजन, वेदोच्चार, कंकना, छुड़ावन वगैरह विधि के प्रथा बा। एकरा में बच्चा के बटु चाहे बरूआ कहल जाला, जे जनेऊ धारण करके भिक्षा मँागे के विधि सम्पन्न करत विद्या पावे खातिर भोजपुरी क्षेत्र के शिक्षा आ संस्कृति के मान्य केन्द्र काशी जाए के तइयारी करेलन। अब तक के जनमोत्सव, नामकरण, मुंडन आ जनेऊ संस्कारन से जुड़ल अनेक मांगलिक गीत महिला लोग द्वारा विधिये–विधि गावे के प्रचलन बा। उपनयन चाहे जनेऊ संस्कार से जुड़ल एगो गीत के कुछ अंश बा।

ऊँच पोखरवा जी बाबा, नीच एक घाट
जाही चढ़ि कवन बरूआ, करे असनान
नहाइए, सोन्हाइए जी, हँसोतले कान्ह
बिना रे जनउआ हो बाबूजी, ना सोभेला कान
देबऊ जनेऊ आरे बरूआ, बजना बजाय
नेवतब आरे बरूआ, कुल परिवार
तबे तूँहूँ बइठिहे रे बरूआ, कवने भइया के पँात।

भोजपुरी संस्कृति में लइकी के कर्णभेदन मतलब कान–नाक छेदाई के एगो महत्त्वपूर्ण संस्कार बा। जवन मुंडन के बाद सोनार जाति के कलाकार कारीगर जाड़ा का दिन में लइकी के कान नाक छेद के विधि के पूरा करेलन। जवना खातिर उनका के नेग दीहल जाला।

भोजपुरी लोकजीवन में एह सब संस्कारन के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण संस्कार होला– विवाह अथवा बिआह संस्कार। काहेंकि एही संस्कार के बाद लइका आ लइकी वर आ बधु मतलब मरद–मेहरारू का रूप में गृहस्थ का जीवन यात्रा के सिरी गनेस करेलन। विवाह के एगो धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आ दैवी संस्कार मानल जाला। भोजपुरी समाज में मान्यता बा कि बिना कन्यादान कइले केहू पुरुष अथवा नारी पाप अथवा दोष मुक्त ना हो सके। भोजपुरी क्षेत्र में एह विवाह संस्सकार से जुड़ल वर पक्ष आ बहु पक्ष से संबंधित अनेक विधि–विधान आ बहुते पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आ जातीय मत–मान्यता प्रचलित बाड़े स। एह संस्कार में सगुन फलदान छेंका, तिलक आ बारात विवाह से लेके लइकी (कन्या) के विदाई तक के अनेक विधि–विधान आ ओकरा से जुड़ल संस्कार गीत गावे के प्रचलन बा। एह विधि–विधानन आ ओकरा से जुड़ल गीतन में प्रमुख बा–सगुन, फलदान के गीत, मइया गीत, तिलक, चउका, चुमावन, संझा–पराती, पितर नेवतल, देवता के गीत, माड़ो छवाई, मटकोर, बँसरोपन, मानर पुजाई, हरदी चढ़ाई, इमली घोंटाई, आम–महुआ बिआह के विधि, शिव बिआह, राम बिआह के गीत, बन्ना गीत, टोना सहाना, नहछू, सेहरा, बेटी बिआह, जोग, दुआर पूजा, परिछावन, कन्या निरीक्षण (गुरहेथी), लावा मेराइ, कन्यादान, सोहाग, कोहवर, उबटन, जेबनार, झूमर, मनझक्का, बिदाई समदावन, समुझवनी, पतोह–परीछन, चउथारी, गवना, वगैरह के विधि आ ओकरा से जुड़ल गीत।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी संस्कृति में व्यक्ति के मरला के बाद अंत्येष्ठि संस्कार के भी महत्वपूर्ण विधान बा, जवना के विधि–विधान पूरा कइला के बादे ओह परिवार के व्यक्ति के गाँव–समाज शुद्ध मान के ओकरा साथ पाँत में बइठ के भात खाला। एकरा में पूरा समाज मरवाला (मृतक) के काँच बाँस के पचाठी (रंथी) पर चढ़ाके घड़ीघंट बजावत, गंगा महरानी के जैकारा लगावत, 'रामे के नाम संसार में सत्य बा' एह तथ्य के घोषणा करत श्मशान घाट ले जाके आग के हवाले करेलन। एकरा के मृतक के जेठ बेटा चाहे दामाद चाहे जेठ भाई वगैरह मुखाग्नि देलन। तेकरा बाद कई दिनन का षट्कर्मन के बाद अंत में श्राद्ध संस्कार करे आ भाई के भात देवे के विधान बा।

पर्व–त्योहार आ उत्सवः

भोजपुरी संस्कृति के मुख्य रूप से छवगो मूल आधार भा अंग मानल जाला–प्राकृतिक जीवन, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन, राजनीतिक जीवन, धार्मिक जीवन आ सौन्दर्यानुभूति। ई छवो अंग परस्पर जुड़ल आ एक दोसरा के सहायक बाड़े स। एह संस्कृति में परम्परा से चलत आवत पर्व–त्योहार आ उत्सव भोजपुरी परिवार, समाज सहित देश–दुनिया के मंगल–कामना खातिर कइल जाला। एह व्रत आ पर्व–त्योहार के संबंध एह क्षेत्र का जनता के प्राकृतिक पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ विशेषकर धार्मिक जीवन से होला। धर्म त भोजपुरी लोकमानस में अइसे समाइल बा कि ओकरा हर सत्कर्म के उत्प्रेरक धार्मिक आस्था, मान्यता आ विश्वासे बाड़े स। अइसे त भारतवर्ष के पर्व–त्योहारन के देशे कहल जाला बाकिर भोजपुरी जनजीवन एह दिसाई आउर चर्चित रहल बा।

धर्म आ व्रत–त्योहार के बहुत गँहीर संबंध बा। व्रत के सामान्य अर्थ 'कर्म' होला जवन के फल कर्त्ता के प्राप्त होला। कुछ विद्वान व्रत के दोसर अर्थ उपवास आदि नियम विशेष बतावेलन। व्रत में मुख्य उद्येश्य होला आत्म–शुद्धि आ परमात्म–चिन्तन। जवना में शारीरिक, मानसिक आ आत्मिक शुद्धता के संगे–संगे उपवास सहित कुछ पूजा–पद्धति के विधान होला। एह व्रत सब के संबंध ऋतुअन से भी विशेष रूप से जुड़ल होला। ऋतु अथवा महीना के अनुसार व्रत–त्योहार के मनावे के परम्परा चलल आवता। बाकिर व्रत आ त्योहार में कुछ मूलभूत अन्तर बा। व्रत में जहाँ उपवास आ परमात्म–चिन्तन के महत्व होला त त्योहारन में आनन्द, उल्लास, उछाह आ उत्सव के माहौल होला, जइसे एकादशी एगो व्रत ह जवना में उपवास आ शुद्धता के प्रधानता बा उहँवे होली आ दिवाली के त्योहार मानल जाला। एकरा में आनन्द, उल्लास–उछाह आ उत्सव के वातावरण रहेला। भोजपुरी क्षेत्र में कुछ अइसनो पर्व मनावल जाला जवना में व्रत आ त्योहार दूनों मिलल–जुलल रूप पावल जाला; जइसे–रामनवमी आ कृष्ण जन्माष्टी। एह दूनो पर्व पर लोग व्रतो राखेला आ त्योहार उत्सव भी मनावेले।

व्रत–त्योहारन के डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय चार कोटि में बँटले बाड़न–

1. शुद्ध आध्यात्मिक व्रत– एकादशी, महाशिवरात्रि वगैरह।
2. देवी–देवता संबंधी व्रत–हनुमान जयन्ती, गणेश चतुर्थी, शीतलाष्टमी आदि।
3. महापुरुष जयंती संबंधी व्रत– रामनवमी, कृष्णजन्माष्टी, परशुराम जयन्ती वगैरह।
4. ऋतु संबंधी व्रत– होली, दिवाली, दशहरा वगैरह। डॉ. उपाध्याय ऋतुअन से जुड़ल व्रतन के त्योहार के संज्ञा देले बाड़न।

पुरुष, महिला अथवा दूनों द्वारा मनावे जाले वाला व्रत–त्योहारन के डॉ. उपाध्याय तीन भाग में बाँटे के सुझाव देले बाड़न–

1. पुरुष लोग के व्रत– रक्षाबन्धन, महालया, श्रावणी, अनन्त वगैरह।
2. स्त्री लोग के व्रत– वट–सावित्री, तीज (हरितालिकाव्रत), जीउतिया (जीवित्पुत्रिका), भइया दूज, वगैरह।
3. दूनो वर्ग के व्रत– अक्षय नवमी, महाशिवरात्रि, छठ (सूर्य पूजा), एतवार, विजयादशमी (दशहरा), वगैरह।

भोजपुरी संस्कृति में मनावे जायेवाला व्रत–त्योहारन में प्रमुख बा– दशहरा, होली, दिवाली, अक्षय नवमी, एकादशी, सत्यनारायण व्रत, त्रिलोकीनाथ व्रत, प्रदोष व्रत, नागपंचमी, रथ–यात्रा, मकरसंक्रांति, महाशिवरात्रि, मौनी अमावस, बसंत पंचमी, कार्तिक पूर्णिमा (गंगा स्नान), गुरूपूर्णिमा, रक्षाबंधन, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, अनन्त चतुर्दशी, ऋषि पंचमी, महालया, वट सावित्री व्रत, जिउतिया, तीज, करवा चौथ, मातृनवमी, भइयादूज, छठ व्रत, पिंड़िया वगैरह।

एह व्रत–त्योहारन के अवसर त उल्लास, उछाह आ उत्सव वाला होइबे करेला। अइसे भोजपुरी क्षेत्र का हर मांगलिक अनुष्ठान अथवा आयोजन में भी उत्सव के ही वातावरण होला। ••

www.bhojpurisahityangan.com

मुँहनोचवा

✍ उमेशजी ओझा

रवि अपना घर के ड्राइंग रूम में बइठऽल चाय के चुस्की लेत रहले। बहरी इनऽर भगवान धरती मइया के अमृत जल से सराबोर करऽत रहऽले। ऐही बीच घर के कॉलवेल बाजल, रवि के धेयान घर के दरवाजा के ओरि गइल। केवाड़ी में लागल शीशा से देखले कि उनका साथे काम करे वाली मीनू खाड़ बाड़ी। रवि मने मन खुश होत दउरऽल गइले आ केवाड़ी खोल के कहले, —

का, मीनू, अतना बारिस में, का बात बा ?

"अरे कुछों ना, घर में अकेल रहीं, मन ना लागत रहे।"

कवनो बात ना आवऽ बइठऽ हमहूं असहीं बइठल रहीं। ओकरा बाद मीनू रवि के घर में सोफा प धड़ड़ाम से बइठ गइली। रवि थोड़े देर में चाय के दू कप लेके मीनू के लगे आ गइले। दुनों के बीच चुप्पी पहाड़ बनऽल रहे। बाकी रवि के चाय के चुस्की के आवाज दूर तकले सुनाई देत रहे। मीनू चुप—चाप हाथ में चाय के कप लेले कप में चम्मच के हिलावत रहली। रवि सोचत रहले कि मीनू आपन मरद से तलाक ले लिहली आ उनका साथे काम करे वाला एगो अफसर उनसे विवाह करेके लालच देके बलात्कार क दिहले, अब त ई अकेलही बाड़ी। इहे सब सोचत रवि, मीनू के आपन बनावे फिराक में उनकर बड़ाई करत तुरंते, कहले कि मिनु, "हम सोचत बानी कि, तहार मुँह प कतना पावनता झलक रहल बा। अइसन सफेदी सती सावित्री लोग के मुंहों प ना चमके ला।"

मीनू, कुटिल हंसी छोड़त, चाय के घूंट लेत बोलऽली, "जानत बाड़ऽ, हम कुन्ती, द्रौपदी आ मत्स्यगंधा के औलाद हईं। हम ययाति के बेटी माधवी के बहीन हईं। तु जानत बाड़ऽ, महादानी, महायोद्घा, महाकामी ययाति अपने आपके श्रीहीन आ असमर्थ बताके आपन विदुषी आ पितृभक्त आज्ञाकारिणी बेटी माधवी के गालब ऋषि के आठ सौ श्याम कर्ण अश्वों (घोड़ों) के पावे खातिर दे देले रहले।' आ माधवी आपन पितृ आज्ञा के सर्वोपरि मानके कई गो मरदऽन से चार पुत्र के पैदा कइली आ वोकरा बादो ऊ वरदान के कारण पवित्र रहली।"

"ई पवित्रता आ अपवित्रता के लड़ाई कब से शुरू भइल रहे।" रवि पुछले।

"जबसे पितृसत्तात्मकता बल पकड़ले रहे।" कुछ देर चुप रहला के बाद आपन कन्धा के उचकवात मीनू कहली, "हम आपन पति के खूबे प्यार कइले रहीं। हम अपना से छल परपंच ना कर सकनी। एगो विशुद्ध औरत निहन आपन मरऽद के खुशी, उत्साह आ समर्पण भाव से प्रेम कइले रहीं।"

"विवाह त हम ई सोच क कइले रही कि सुरक्षात्मक जीवन शैली रही। बाकि अब ई समझ में आवत बा कि हमरा साथे बलात्कार होखे प जतना पीड़ा भइल रहे वोतने पीड़ा सामाजिक आ धार्मिक परंपरा से बनल वैधानिक पति से भइल।"

"अरे का पागल निहन बतिआवत बाड़ू, तूँ अतीत में मत उलझ ऽ। बीतल काल्हू के सिलेट प लिखल पिनसिन के अक्षर निहन मिटा द। अब तु नोकरी करऽत बाडू मीनू।"

एगो लम्बहर साँस लेत कहली मीनू, "हमार अनुभव बा कि कवनो औरत जब तकऽले प्रेमिका रहेले, मरद ओकर दिवाना रहेला। बाकी जइसही उ मेहरारू बनेले वोसहीं मरद के सबसे सड़ियल भाव उभर के सामने आ जाला। उ वोकरा के कुछुये दिन में नौकरानी समझे लागेला। एक बात बा मेहरारू के प्रेमिका निहन हरदम आपन मरद के नजर से घायल करत रहे के चाही, बीच बीच में रिझावे के भी चाही आपन नाज नखरा से सतावे के भी चाही। " तुरन्ते मीनु एकदम से शांत हो गइली। उदासी उनका चेहरा प एहसास दिलावे लागल।

रवि, "मिनु तु ठीक त बाडु अतना एकेहाली शांत कइसे हो गइलु।"

"तेज आई कहाँ से ? मरद कवनो समान निहन व्यवहार कईले आ मुहनोचवा खुबे नोचलस, । तवना घरी साहस ना रहे कि दुनों के औरत के प्रति बहशी नजर के लँगटे कर सकी।"

"अच्छा ई बतावऽ गाँव जवार देले कबो मुहनोचवा देखले बाड़ऽ। उ एकदम आदमी निहन होला, फरऽक बस अतने रहेला कि वोकर आँख हरदम लाल बती निहन जरऽत रहेला। आ वोकर शिकार कवनो औरत आ लइकिये होली स।"

"ई आदमिये हत्या आ आत्महत्या काहें करले ? कवनो जानवर त ना करे ?" मीनू कुछु सोचत पुछली।

"तहार कहे का मतलब बा मीनू ?"

"ईहे कि जे ढेर सोचले उहे हत्या आ आत्महत्या करेले।" वोकरा बाद मीनू चुपी साध लिहली। बाकि उनका मन में तरह तरह के लहर उठत रहल आ शांत हो जात रहे। उ फेरू से सोचे लगली, "आखिर जे सोचे ला उ आत्महत्या आ हत्या काहे करेला।"

www.bhojpurisahityangan.com

सोफा से उठ के रवि रूम के भीतरी गइले। आ ओने से दुगो छीपा में दूनो के खाना आ बगल में बाँही के बीच दबवलें शराब के बोतल लेते अइले।

सब कुछ शांति भइला प दुनो जन जाम टकरवले। मीनू दु–चार घूँट लेली। आ रवि जाम खाली क दिहले आ दोसर गिलास लिहले। मीनू फेर पुछली "आखिर आदमी हत्या काहे करेला ?"

रवि, जाम के घूँट लेत, "अरे मीनू अइसन बारिस के मौसम आ नशीला घड़ी में आत्महत्या आ हत्या के बात छोड़ऽ डार्लिंग।" रवि आपन जगह से उठके मीनू के लगे जाके बइठ गइले।

मीनू तनिआस कठोर बोली में बोलऽली, "अतना रोमांटिक मत बनऽ। देखऽ हमार मूड अभी खराब बा। खराब का, अइसन समझ लऽ कि वोकरा प केहु तेजाब छिड़क देले होखे। ऐहसे लक्षुमण रेखा में रहऽ। हम पीके कपड़ा से बाहर ना होखेनी।"

रवि, "अरे ईयार का कहत बाड़ू पीये के बाद त सारा मूड पलट जाला आ ओकरा बाद................।"

रवि, मीनू के आलिंगन कइल चहले त, मीनु, रवि के ढकेलऽत सोफा से उठ गइली। डाँटत, "खबरदार, अपना प काबू राखऽ रवि। हम पीये वाले के प्रवृति से अलग बानी। हम पीके अउरू होस में हो जानी। कुतिया निहन सजग आ सचेत। सुनऽ घात– प्रत्याघात ढेर झेल चुकऽल बानी, अब कवनो तरह के इच्छारहित सुगबुगाहट पसन्द नइखी करत। रवि के झटका लागल। मीनू फेरू से आपन बात के दोहरावत पुछऽली आखिर आदमी हत्या काहे करेलें ?" ऊ मृत्यु के खेल काहे खेलेले ?"

रवि प नशा कऽ शुरूर छवले रहे। उ अपने आप के संभारत बुदबुदइले, "हम नइखी जानत प्यारी, हमार मन अबहीं खाली तहरे के देखऽत बा, हमनी के उत्तेजना के सागर में गोता लगावे के चाहीं। रवि के झकझोरत मीनू हिलवली "तु हमार प्रश्न के उत्तर द रवि।" रवि अपने आप के सम्भारत लडखड़ात बोली में कहले, "आदमी दुश्मनी, घृणा, बदला, आपन स्वार्थ, दुःख, हताशा, आवेश, अनायास आ कभी कभार व्यर्थ आ निरूद्देश्य के हत्या कर लेला।"

"निरूद्देश्य आ व्यर्थ में हत्या करेला ?"

"हँ, अपने आपसे उबिया के, अपने आपसे घृणा करत। कये बार ऊ अतना विक्षिप्त आ असंतुलित हो जाला कि ऊ अनायास दुसरो के हत्या कर देला।"

"हँ, रवि तूँ सही कहत बाड़ऽ। कभी कभी आदमी अपने आपसे घृणा आ ग्लानी करे लागेले, ऊ अपने से अनजान हो जाले आ ओकरा खातिर मृत्यू एगो तमासा हो जाला आ ऊ तमासा करे लागेला। कऽय हाली त आदमी मृत्यु के चुनाव एह खातिर कर लेला कि ऊ आपन लगातार गलती के सुधार ना पावे। तंग आ जाला। ओकरा बाद अपने आपके आ दोसरा के खतम करे के सोच लिहेला। आ हत्या भा आत्महत्या क लेला।" रवि, मीनू के देखके चिहुँकत पुछले " का तूँ हमार हत्या करऽबू ?"

मीनू अब अइसन गंभीर बातन के छोड़ऽ ओकरा के थूकऽ। आवऽ हमनी के आनंद लिहींजा। तू भावुक होके बिना मतलब के फँसल बाड़ू, हर बात के एगो समय होला। अभी के समय...............।

रवि वासना के चरम बिन्दु प रूक गइल रहले। बाकि मीनू, रवि के अइसन व्यवहार से आश्चर्यचकित रहली।

"रवि ई का पागलपन बा, हमरा के तूँ बौद्दिक रूप से प्रभावित कइले रहलऽ। तहार विचार में एगो नया द्वंद आ बोध होत रहल आ सचाई भी। जवन जीवन में फैलऽल कर्मकांड आ पाखंड के ओरि आदमी के जागृत करत रहल, बाकि तहार अइसन व्यवहार से हम प्रभावित नइखीं। तहार शरीर, आँखी, हाथ, टाँग मतलब पूरा ढांचा हमरा मन में वितृष्णा भरत बा। चलऽ, हटऽ मुँहनोचवा वाला काम मत करऽ।" मीनू रवि के धक्का दे दिहली।

रवि खिझिआत शांत भाव से बोललऽन, "हम आपन बॉडी लैंग्वेज के बहुत बढिया से समझत बानी। ईहो बहुंत जरूरी बा।"

रवि के तिरस्कार भरल नजर से देखत, मीनू कहली–"हम मानत बानीं तूँ मरद बाड़ऽ, मित्र हवऽ, अबहीं वासना में आन्हर हो गइल बाड़ऽ, बाकि तूँ हमार समर्पण लायक मरद नइखऽ लागत। तहरा के समर्पण करे में सोचते घृणा आवत बा। "

देखऽ अतृप्ति आ तनाव हमरा के जब्बरजस्ती करेके मजबूर कर दे तब ?" रवि कहले।

'तूँ का समझत बाड़ऽ हम अतना कमजोर बानी कि तहार गिदर भभकी से डेरा जाइब। पागल बाड़ऽ.. ......चलऽ एगो शरीफ बुद्विजीवी लेखा तूँ चुपचाप हमरा लगे से चली जा।" रवि अंतिम चाल चलऽत कहले, "हम तहरा से विवाह करेके वादा करीं तब ?" अरे वाह क्षणिक तृप्ति खातिर तूँ वादो करे लगलऽ। वासना आदमी के कतना कमजोर बना देला। आ सुनऽ जवना आदमी के व्यक्तित्व से हम तनियो सा प्रभावित नइखी वोकरा से विवाह के सोचिओ नइखीं सकत ? रवि।

www.bhojpurisahityangan.com

जइसे कइगो तेलचट्टा देख के आदमी अजीब घृणा से भर जाला, वोसही तहरा के देखीके हमरा घिन आवत बा। हम शरीर के पवित्रता प विश्वास नइखी करत, बाकि मन के विरूद्व भी कुछ कइल बलात्कार हऽ।" मीनू अपना असल रूप में आ गइली।

रवि, मीनू के पकड़ल चहले त उ भाग क बाथरूम में चल गइली आ वोहिजा राखल तेजाब उठा लिहली। आ धमकी भरल बोली में बोलली, "रवि ई तेजाब हऽ, देह के कवनो हिस्सा प पड़ जाई त ऊ जगह जर के विकृत हो जाई। तब लोग हँस्सिहे कि महाशय, पहिले से खूबसूरत रहले आ ऊपर से खाक मल लिहले। सामने दरवाजा बा अब दोसर रूम में चल जा, ना त पूरा तेजाब उलट देब।"

रवि देखले कि मीनू पर कवनो चारा चले वाला नइखे त ऊ दोसरा रूम में चल गइले। मीनू बुदबुदइली आदमी के मुँहनोंचवा बनत तनिकों देरिये नइखे लागत।

••

हो० नं०-39, डिमना बस्ती, डिमना रोड मानगों
पो०-एम०जी०एम० कॉलेज मानगों,
पूर्वी सिंहभूम जमशेदपुर-831018

लघुकथा

बेटी आ पतोहि

हीरालाल 'हीरा'

एके माँड़े भात बेटा आ बेटी के जोड़ा बियाह निपटवला के बाद मनोरमा के मये बोझ हलुका गइल। एक दिन देवता – देबी के मनउती उतारे के खियाल आइल। ऊ गंगा जी के लुग्गा चढ़ावे खातिर नइहर चहुँपली। माई – बाबू से मिलला – जुलला का बाद जानकारी भइल कि उनकर बचपन के सखी सीतो आइल बाड़ी। बिना देरी कइले ऊ उनसे भेंट कइली आ बिहाने गंगा जी जाये के पयान बनि गइल।

अकसरहा ई लउकेला कि धरम – करम आ तिरथो बरत में मेहरारू लोग ढेर अपना घरकचे आ बतकूचन में लागल रहेला। राह चलत सीता पुछली "सखी, तू बाड़ा भगिगर बाड़ू। जोड़ा बियाह निपटा के हलुक हो गइलू। हम त कई साले से हलकान बानी, बकिर अबहीं ले कतहों सेट ना भइल बियाह, का जाने कइसन जमाना आइल बा।

"हँऽ सखी! सही कहलू सभ गंगामाई के किरिपा आ देवता लोगन के आसिरवाद बा।" मनोरमा जबाब दिहली।

"आछा अब तनी असली बात पर आवऽ, बबुनिया के घर–वर कइसन मिलल बा ?" सीता उटकरली

"बहुते नीमन ए सखी, कवनो चीज के कमी नइखे। सासु – ससुर सोझिया बाड़े। दामाद त एके गोड़ पर खाड़ रहेलन। हरदम बबुनिया के आगे – पीछे लागल रहेलन। मुँह से निकालते कवनो फरमाइश पूरा हो जाला। हम ओह लोग से बाड़ा खुशबानी।

मनोरमा जबाब दिहली। सीता फेरू पुछली" अब तनी पतोहियों के हालि बतावऽ।

मनोरमा जबाब दिहली "का कहीं ए सखी! रंग – ढंग ओकर नीमन नइखे लउकत। जब से आइल बिया, लइकवा हर घरी ओकरा आगा पाछा लागल रहत बा। जेतना ऊँ कहत बे, ओतने चलत बा। एक दम मेहर – मउग हो गइल बा। बुझाता कि हाथ से निकलि जाई।" मनोरमा के जबाब सुनि के सीता भकुआ गइली आ उनकर मुँह खुलले रहि गइल।

बेटी दामाद करे तऽ ठीक आ पतोह – बेटा करे तऽ बेजायँ! मने – मन कहली "वाह रे जमाना" !! ••

www.bhojpurisahityangan.com

सुरा-पुराण-(1)

अशोक कुमार तिवारी

बड़ा झटकले लोग केहू के कह देला– "मारऽ फलनवा त पियक्क्ड़ हऽ।" बाकी जान जाईं कि हमरा देखे में पियक्कड़ होखल कवनो ठठ बात ना हऽ। ई अपना–आप में एगों घनघोर उपलब्धि हऽ । बिदेशन में त शराब ना पियल असभ्यता के चिन्हासी मानल जाला। जवना हिसाब से अपनों देश में एकर प्रचलन बढ़ल बा आहे हिसाबे कुछुए दिल में इहवों ऊहे हो जाई, हो का जाई फिल्मी दुनिया के तथा कथित सभ्य समाज में त होइये गइल बा। तबे नू अक्षय कुमार लेखा कुछ ना पीये वालन के अइसे चर्चा होला जइसे ऊ दुनिया के आठवा अजूबा होखस ।

'शराब–शराबी आ समाज' पर एकर असर', एह विषय पर हम निजी तौर पर कुछ शोध कइले बानी जवना के समाज के सोझा राखल हम जायज समझत बानी।

कुछ थेथर शराबियन के छोड़ दिहल जाव त परसेन्टेज शराबिन में उच्च कोटि के संस्कार पावल जाला। ई लोग धुनुकी में अइला के बाद अपना ले बड़–जेठ के हद में जादा रिस्पेक्ट देला। हम– रउवा फरके से सलाम क के काम चला लेब, बाकिर ई लोग एक बेर के बजाय दस बेरि अभिवादन करेला। सामने वाला का खाई का पीहीं, एकर खियाल राखल, घर के लोगन के मुँह से शराब के दुर्गन्ध ना पहुँचो एकर विशेष धियान राखल पियक्कड़न के खास गुन ह ऽ। दुर्गन्ध विलीनीकरण प्रकिया के तहत शराब में 'ईनो' मिला के पियला। पियल के बाद खड़ा धनिया चबाइल, भा अमरूद के पत्ता, भा पान–इलाइची चबाइल। अइसन–अइसन छिहत्तर गो गूढ ज्ञान लगभग हरेक नाया पियवइया के पुरनकन से अनासे मिल जाइल करेला। पियक्कडन के दृढ़ इच्छाशक्ति के नमूना त ऽ अकसरे लउक जाइल करेला, जब कवनो शराबी नाली में गिर परल होखे आ बार–बार नाली से निकले के प्रयास करत होखे। ई लोग काफी सुरीलों होले, आवाज भले पाड़ा के आवाज के मात देत होखि तब्बों ई सातो सुर के पछाड़े के प्रयास से बाज ना अइहें। जइसे मदिरा देवी के शुभ आर्शिवाद होखे कि "द्वारा दया का तू जो खोले फाटल सुर में बोकवो बोले। " इहवाँ ई उल्लेखनीय बा कि " फाटल सुर " सात गो सुर से बाहर के चीज ह जवन कि 'असुर' के श्रेणी में आवेला । खैर आगे बदल जाउ।

कवनो शादी बियाह भा कवनो फंक्सन के नाच–आर्केस्टा में एह लोगन के अद्भूत नृत्य क्षमता देखे में आवेला। हम त ई कहब कि एही लोग के वजह से 'सँपहवा डान्स' लेखा प्राचीन आ मनमोहन कला जिन्दा बा। इहे ना जान जाइब कि वकील आ नेता के बाद कवनो विषय पर बहस के मामला में शराबिये भाई लोग के नम्बर आवेला। कुल्हि मिला के ई कि शराब पियला के बाद प्रतिभा अपना पूरा क्षमता के संगे उभर आवेले, ई शराब के खास गुन हऽ। पियला के बाद जदि ओकरा से रउवा प्रति कवनो गलती हो गइल तऽ ऊ अतना दीन भाव में चिरउरी कइके दाँत चियार दी, कि रउवा कतनो कठकरेजी होखब पसिजिये जायेकेबा।

सबसे अद्भूत दृश्य त ऊ होला जब मर्द पी के मेहरारू किहाँ पहुँचेला। राह में भले केहू से झगड़े कइके काहे ना आइल होखे, बाकिर मेहरारू किहाँ पहुँचते सुर बदल जाला, आ जवना मुँह से पांचे मिनट पहिले चाइनीज ड्रेगन लेखा आग निकलत रहल हा ओही मुँह से देवी याचना के अस्तुति निकले लागेला, आ दुइये घण्टा पहिले जवना मेहरारू के नइहर समेत तार के गइल रहेला, चुरइल–मुरइल बनवले रहेला, उन्हे मेहरारू 'इन्नर के परी' लउके लागेले। मेहरारूए कहाँ कम होली सँ ऽ। जबले सर्व प्रकार के अस्तुति ना सुनिलँऽ सऽ आ कुल्हि करम ना कइ लऽ सँ, तले उहे कहाँ माने वाली वाड़ी सँ ? उहे ले ना, ओही झोंक में काम भर बगली से मालो टानल शामिल रहेला। फेर सबेरे जवन होई तवन देखल जाई। ई होला पियक्कड़न के उदारता।

गँजेड़ी लोगन के बारे में कहल जाला कि " गजेड़ी यार किसके ? दम लगाये खिसके " बाकिर, अगर एगो पियक्कड़ राउर यार बा, त चिन्ता के कवनो बात नइखे। काहें कि कवनो काम में ऊ राउर साथ ना छोड़ी। चाहे ऊ काम सही होखे भा चोरी–चमारी, अडरे–मडर काहें ना होखे ऊ पाछा हटेवाला नइखे । पाछा हटे खातिर हार–पाछ के रउवे कल्टी मारे के परी।

कुछ पुरान पियक्कड़ त खाली कोटा पूरा करे खातिर पीये पर भा पियला के देखावा करे पर मजबूर बाड़े। खाली एह पेंचे कि समाज में जवन ऊ उगो दबंग पियक्कड़ के इमेज सालन से बनवले बाड़े ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

कहीं डिस्टर्ब ना हो जाउ ओकरा खातिर ऊ हमेशा कुछ नियम फालो करेले । जइसे सबसे पहिले त मार्केट में पहुँच के पूरा धैर्य का संगे कवनो अइसना उदारमना पियवइया के बाट खोजिहें जे आज काल्ह दिल खोलके कुछ लोग के पियावे के अभियान चलवले बा। ऊ उदारमन केहूँ अइसन आदमी हो सकेला हो सकेला जेकर धनिक बाप भारी– भरकम सम्पति छोड़के मर–बिला गइल बा आ ऊ सम्पत्ति के निकास के दोसर दुआरि ना देखिसके नाया–नाया सुरा देवी के शरण में भहराल बाड़े, आ एकर पूरा–पूरा फीलिंग लेत बाड़े कि पियला–पियवला के मजा का होला। भा केहूँ अइसन, जे ढेर दिन से संकल्प लेले बा कि खेत बेचब......खाइब–खियाइब, पियब–पियाइब, माने कि "बेंच धुरा–धुर, काट खुरा–खुर।" रउवा अचरज होई कि कुछ भिखारी, कुछ रेक्सो–टांगा वाला अइसन बाड़े कि आपना काम शुरू कइला के बाद सबसे पहिले सॉझ के "दारू" के दाम अँगऊ अस काढ़ि देले, तब घर–परिवार के बारे में सोचेले। शराब के ठेका पर उनुको भाव–भंगिमा कवनो नबाब ले कम ना होला। एक आदमी के भार य सवख से उठा लेबे में सक्षम होले। अइसने एगों उदारमना के आ गइला पर ओह पुरान पियवइया के इन्तजार खतम हो जाला, आ उनुका देह में तमाम उर्जा के संचार हो जाला। उनुका पर कवनो असर नइखे कि ऊ एगो भिखारी खातिर, कि एगो रेक्शा–टांगा चलावे वाला खातिर दारू में मिलावे के पानी लेयावत बाड़े, चिखना कीन के लेयावत बाड़े। बस गॉव वाली दबंग पियक्कड वाली इमेज ना डाउन होखे वे चांही, इंहवाँ के देखता। उनुका इहो फेर–फिकिर नइखे कि ऊ जहँवा काण्ड(पियक्डई) करे जा रहल बाड़े ऊ जगह कइसन बा ? एकर कवनो असर नइखे पड़े वाला लि कि ऊ सॅड़ाध भारत नाला पर खड़ा होके काण्ड गिरावतारे कि बास मारत कचरा के ढेर पर खांटी पियक्कड़ एह सब चीजन पर कबो ध्यान ना देला। खैर 'जइसे–तइसे एकाध –दू–यार पैक लगावला के बाद ऊ गाँव के ओह रास्ता के चुनाव करिहें जवना से उनुकर घर सबसे जादा दूर पड़त होई। ओह रास्ता में–एगो त गॉव में घुसते। दुसरका बीच में आ तिसरका अपना घर के जरी। तीन गो अइसन मूवल–मराइल लोगन के चुनके रखले रहिहें जेकरा के नीमन–बाउर बोलत, गारी–फजीहत करत, झण्डा फहरावत अपना घर ले जइहें, आ ऊ मूवल–मराइल तीनो लोग चूँ ले ना कसी। एह तरे उनुकर सालन से बनल पियक्कड़ के 'इमेज' बरकरार बा।

कुछ प्रतापी पियक्कड़ त अइसन होले कि दम भर दवाई (दारू) मारला के बाद फुटपाथ पर भा कवनो नाला–नाली के तिरवाहीं दुनिया के सब फेर–फिकिर छोडके 'अजगर' अस 'भँजगर' देखिके 'मजगर' लाम–चाकर पड़ल रहिहें, जइसे कवनो राजा–महराजा मसलन्द लगाके अपना राजभवन में आराम फुरूमावत होखस। लोग उनुका के देख के का कमेण्ट कर ऽ ता भा का सोचऽता एकरा से उनुकर कुछऊ टेढ़ होखेवाला नइखे।

एह–एह तरे पियक्कड़न के बहुत–बहुत गुण अवगुन आ बहुत–बहुत भेराइटी बा। पियक्कड़ अनन्त–पियक्कड़ कथा अनन्ता।

अभी चर्चा नइखीं कइल चाहत कि पीयल नीमन हऽ कि बाउर। इहवाँ बस हम अतने कहल चाहऽ तानी कि आदमी के हमेशा अपाना पद, कद आ हद के खियाल राखेके चाहीं। कबीर दास जी कहले बानी "अति का भला न बरसना अति की भली न धूप, आतिका भला न बोलना अति की भली न चूप" । बाजार में कीटनाशक फसल पर छिड़काव करके फसल बचावे खातिर मिलेला। सल्फास के गोली गेहूँ आ अन्य अनाज के बोरी में रख के अनाज के सुरक्षा खातिर मिलेला। चूहा मार, खटमल मार चूहा–खटमल मारे खातिर मिलेला। अब एह सब चीजन के केहू अपने पर प्रयोग करे लागी त जान त जइबे नू करी। जल..... जेकरा बिना जीवन के कल्पना संभव नइखे ओही जल में कतने लोग डूब के मर जाइल करेला। असली बात कवनो चीज के विवेकानुसार सदुपयोग–दुरूपयोग के होला।

अमिताभ बच्चन जी के फिलिम 'शराबी'के गाना "लोग कहते है मैं शराबी हूँ....." के एगो लाइन "नशा शराब में होती तो नाचती बोतल" । से हम पूरा–पूरा इत्तेफाक राखेनी। हम इहे कहल चाहब कि हमेशा समय–परिस्थिति .... आ संतुलन के खियाल राखल जाउ। पानी के इस्तेमाल पीये खातिर होखे, डूबे खातिर ना। अभी बस अतने। बाकिर त रउवा सब खुदे समझदार बानी। ••

–क्रमश :

ग्राम व पोस्ट–सूर्यभानपुर,
जिला–बलिया (उ० प्र०) पिन नं०–277216,

www.bhojpurisahityangan.com

पाँच गो कथा-संस्मरण

प्रो0 सदानन्द शाही

1-अम्मर बाबू आ बनारस के पण्डा

अम्मर बाबू के बाबा के इन्तकाल भइल त सब किरिया करम के जिम्मेदारी उनही प आइल। कहां पहाड अइसन दुख आ कहां किरिया करम के टंट घंट। बाकी जवन जवन पंडिज्जी बतवले तवन तवन करहीं के परल। अब जवन जवन बाबा के ओह लोक में चाहीं तवन तवन ईहा दान में देबेका। दियाइल। ओढना बिछौना चौकी, गद्दा, चादर, तकिया से लेके धोती कुर्ता ले। छडी घडी तेल फुलेल शीशा कंधी से जूत्ता चप्पल सब। घीव देत बाभन नरियाय ई मुहाबरा त सुनले रहलें बाकिर ओके साछात देखलें अबकी। ओमे पंडिज्जी होगइल आ आके दिआइल घीव पिये के। ऊ लगलें नरिआये। जबले खेत न मिली, एगो फलदार पेड न मिली तबले घीव पीये खातिर बाभन तइयार ना भइलें। अब मरता का न करता। अम्मर बाबू के सब सकारे केपरल। तवना के बाद पुरोहित बाबा गाई खातिर तन्ना गइलें। 'बाबा के कुलि धन के मालिक रउरे बानी, सोचेके चाहीं। एगो गाई देईं आ खिस्सा खतम करीं' इ कहि के पंडिज्जी बहुत समझा ओमझा के मामिला हलकइलें। अम्मर बाबू संतोष के साँस लीहलें। मनवा में ईहो बाति आइल कि चलऽ सब बाबे के कइल धइलहवे! उनके नाव प दान पुन्नि कइल जरूरी रहल हऽ।

पंडिज्जी के लिस्ट शुरू त होखे बाकिर खतम होखे के नाँव ना ले । एसे अम्मर बाबू अकुता गइल रहलन। बाकिर पंडिज्जी के एगो बाति उनका नीक लागल रहे। एहि बिच्चे अम्मर बाबू जायेके रहल बनारस। बाबा के फुल्ला दहवावे। पंडिज्जी पहिलहीं चेता देलऽ कि देखब पंडा कुलि बडा परेशान करिहें स। ओकनी के फेरामें जनि परब। दान पुन्नि ईहवां सब होई रहल बा। बस कवनो तरे गंगा जी में फुल्ला डारि देब आ गंगा नहाके चलि आइब। बाकी ईहा हम सब देखि लेब। अम्मर बाबू पंडिज्जी के बाति गंठिया के चलि देहलें बनारस। बनारस स्टेशन प उतरते पंडा कुलि घेरि लेहलें। अम्मर बाबू कहलें कि हमके कवनो जउरत नइखे, तहनि केआपन गहकी खोजि ल जा हम आपन काम अपने क लेब। लेकिन एतने से मानि जां त पंडा कइसन। बहुतबक झक के बादो जब अम्मर बाबू पुट्ठा प हाथ ना धरे देहलें त सब पंडा धीरे धीरे सरकले सो। बाकिर एगो जबर पंडा इनके पिछिअवले चलल चलि गइल। अम्मर बाबू जवने ओर जां पीछे पीछे ऊहो लागल रहे। आकुछ मन्तर ओन्तर पढत रहे। जब सब निपटा उपटा के अम्मर बाबू घाट सें बहरिआये लगलन त पंडहजार पांच सौ के बिल पेश कइलस। अम्मर बाबू कहलें कि भाई तू सब अपने मन से कइलऽ ह। हम त कुछु कहलींना। पहिले त पंडवा कुछु ऊंचनीच समझावलसि। बाकि अम्मर बाबू प कुछु असर ना परल त कुलि पंडन केबोला लेलस। लगल पंचाइत होखे ।लेकिन अम्मर बाबू टस्स से मस्स ना भइलें। अब पंडा कुलि धमकावे लगलन स कि पइसा कायदे से दे दऽ नाहिं त बेईज्जत होइब आ तब पइसा देबऽ। अम्मर बाबू कहलन कि देखऽ जा! जब इज्जत बेइज्जत के बाति क दीहलऽ जा त हमहूं सोचि लेले बानी कि बिना बेइज्जत भइले एको पइसा देबि नाहीं। बनारस के पंडन के अइसन जजमान से भेंट पहिलका रहे। पंडन के साम दाम दंड सब फेल हो गइल। अम्मर बाबू के पंडंन से छुटकारा मिलल।

अम्मर बाबू के जेतना संतोस किरिया करम कके मिलल ओसे ढेर संतोस बनारस के पंडन के पटकनिया देहले से मिलल। ••

2-चानी के रुपया से सिनेमा के टिकट

हम छोट रहलीं तबे पढे खातिर बगल के कस्बा में आ गइल रहलीं। कस्बा हमरे ममहर से बीचोबीच के दूरी प रहे। बजार आ सउदा सुलुफ खातिर ममहर के लोग ओहि कस्बा में आवे। हमार छोटके मामा अक्सर चलि आवें। एक बेर हम दुपहरिया में बइठल सोचत रहलीं कि कहीं से जोगाड बनित त सिनेमा देखतीं। कवनो जोगाड बनत नाई रहे। तवले हमार छोटका मामा आ गइलें। मामा के अइले से हमरा कवनो विशेष खुशी ना भइल काहें से कि उनहूं के लगे रुपया पइसा रहे ना। लेकिन देखलीं कि मामा के चेहरा खिलल बा। अबहिन

www.bhojpurisahityangan.com

हम कुछ पूछतीं कि ऊ खुदे बतवलें कि उनके एगो चानी के रुपया मिलल हवे। हम पूछलीं कि मामाजी कइसे मिलल ह। मामा कहलें कि समनवां बिजली के पोलवा धऽ के खडा रहलीं हं आ दहिना गोड के अंगूठा से जमीनिया खोदत रहलीं तवले चानी के रुपयवा लउकल। हम उठा के सीधे चलि अइलीं ह। देखऽ नऽ। आ ऊ थइली में से निकालि के जार्ज पंचम वाला सिक्का देखावे लगलें। हमहूं सिक्कवा हाथे में लेके देखलीं आ खूब खुश भइलीं। मामा कहलें का बइठल बाऽड चल तनि बजारे चलल जां। हम कहनी कि बजारे जाके काऽ करब हमरा पल्ले चवन्नियो नइखे। मामा कहलें कि चलऽ हई चानी वाला रुपयवा बेंचल जाई त रुपया मिली। गइलीं जा त ओ घरी चानी के रुपया एगारे कि दो बारे रुपया में बिकाइल। मामाजी समोसा आ टिकिया खिअवलें आ हमरा के एकाध रुपया देहलें हमार सिनेमा के जोगाड़ हो गइल। एक्के दू दिन बाद मामा जी फेर अइलें फेर उहे कहानी बतवलें कि उनका के फेनू सिक्का मिलल ह। हमन फेर से बजारे गइलीं आ जार्ज पंचम के बेंचि के दस रुपया के कडक नोट आ दू रुपया के चवन्नी अठन्नी ले के खात पिअत घरे आ गइलीं। हमार चिन्ता अब ई रहे कि कब मामा जी जां आ हम बिजली के पोले के लग के जमीन खोदि के चानी के रुपया निकालीं। मामा जी गइलें आ हम पंहुंचि गइलीं पोले के लगे। पहिले त लोग के आंखि बचा के दून्नों अंगूठा से जमीन खुदकियावे लगलीं बाकिर रुपया ना मिलल। हम अगोरे लगलीं कि राति होखो त खुरपी से खोदि के देखि लीं। ओइदिन दिनवे महज्जर हो गइल। बीतबे न करे। कवनों तरे बीतल। हम पोल के लगे पीछे सब खुरपिया डरलीं बाकिर एक्को सिक्का ना मिलल। एह तरे हमार मामा छ सात बेर अइलें। हर बेर उनके सिक्कवा मिलि जा आ उनके गइला के बाद हमार खोदाई चालू होखे। बाकिर हमके एक्को बेर चानी के कवन कहे तामा आ गिलट के सिक्का ले नाहीं मिलल। हम मानि लेहलीं कि हमरे भगिए में खोट बा।

जब गर्मी के छुट्टी में ममहर गइलीं त एक दिन नानी अपने कोठरी के सफाई करत रहली। एगो पुरान कलमतोड के सफाई करते करत लगली चिल्ला के रोवे। पहिले त बुझाइल कि कवनों साँप बिच्छी काट लेलस का। काहें से कि मामा कीहां साँप बिच्छी खूब निकले। लेकिन थोडे देर में पता चलल कि ओ कलमतोड में बारह पन्द्रह गो चानी के सिक्का धइले रहली जवन गायब हो गइल बा। तब हमरा बुझाइल कि बिजली के पोल के नीच्चे सिक्का कहां से आवे। ••

3-प्रह्लाद बाबा के गाइ : खुरवे खुरवे

प्रह्लाद बाबा बहुत खिसियाह रहलें। रहलें त दुबरे पातर बाकी खीसि उनके नकहीं प रहे। खिसियां त ई ना देखें कि केकरा प खिसिआइल बाने। आपन दम भरि खीसि उतारें। कबो मारि के कबो गरिया के त कबो सरापि के। सरपले के नउबति तब आवे जब अपना से बीस आदमी प खीसि उतारे जां आ थुरा के चलि आवें। बाकी जब स्थिर रहें त बहुत बढियां मनई रहलें प्रह्लाद बाबा। खूब बतिआवें खिस्सा कहानी सुनावें। प्रह्लाद बाबा के एगो अउरी खासियत रहे। उनका गाइ से बडा प्रेम रहे। हमेशा एगो दुधारू गाइ दुवारे प रहे। एक बेर उनकर गाइ बिसुक गइल त गइलें नया गाइ ले अइलें। नवकी गइया मरखाह रहे। अब जोडा बढिया लगल। गाइ मरखाह आ बाबा खिसियाह। अब दूनों में जोर आजमाइश होखे लागल। बाबा के खीसि ढेर बा कि गाइ के! ए पर अबहिन फाइनल निर्णय ना भइल रहे। केहू कहे बाबा ढेर खिसियाह हवें आ केहू कहे कि गइया ढेर मनचहांक हवे। गाइ दूहत के लात चला दे बाबा खिसिया जास आ बांसे के कइनि से गाइ के सेवा करे लागें। त गइयो भूखाइला प आ चांहें असहूं मूडी झटकारत बाबा की ओसर धउरे। एहि तरे जोर आजमाइश चलत रहे। बाबा त नाहीं बाकी गइया एह जोर आजमाइश से परेशान हो गइल। ऊ सोचलस कि एक दिन फरिअवता हो जाएके चाहीं। बाबा सबेरे दूध दूहे चललन। जसहीं बाबा के देखलस मूडि झटकारल शुरु कइलस। बाबा तन बर्दास कइलेंआ गाइ के खोलि के दूहे वाली जगह प ले जाये लगलें। गाइ जब खुलि गइल त लगल खिंचावे। बाबा कबले सहते बस। कइनि के सटहा से देबे त कइलें एक सटहा। सटहा लगते गाइ एकदम से बउरा गइलि आ बाबा प टूटि परल। सटहा कवने ओर गइल पते ना चलल। झटकारि के बाबा के गिरा देलस आ लगल चहले। बाबा ओइ में बाप माइ चिल्लाये लगलन। लोग बाग जुटि गइल। बाछा खोलाइल। बाछा आके दूध पीए लगल। कवनो तरे गाइ से बाबा के छोडावल गइल। हरदी पिआजु

www.bhojpurisahityangan.com

छपाये लगल। बाबा चार पांच दिन बोखार खेलवलन तब जाके कवनों तरे ठाढ भइलें।

बाबा जब ठीक हो गइलें त उनका से पूछाइल कि बाबा रउरे एतना खिसियाह, कइसे ई कुलि बरदाश्त कइलीं हं। बाबा कहलें कि हम कहां बरदाश्त कइलीं। हम बर्दाश्त करे वाला जीव नाहीं हईं। गाइ राम जब हमके कचरत रहली तब हमहूं उनका के खूब बकोटलीं। खुरवे खुरवे। हमके हरदी पिआज लागल ह त उनहूं के खुर घाही हो गइल रहे। त हमहन के जब हंसे के मन करे बाबा से गइया के किस्सा पूछीं जां आ बाबा खूब मन से बतावें कि ऊ कइसे गाइ के खुरवे खुरवे बकोटि के घाही क देले रहलन। ••

4-तसीलदार के माई

दू भाई रहे लोग किसान। एक जाने खेती किसानी में मशगूल रहें। देस दुनिया के कुछु पता ना रहे। मेहनत आ ईमान का भरोसे जिनगी चलत रहल। दूसरका भाई बहरे के काम देखें। मर मुकदमा। हारी बेमारी। कीनल बेसाहल सब उनके जिम्मे रहे। एक बेर ऊ चलि गइलें नतई करे। ओहि बीच्चे लगान जमा करेके नोटिस आईल। पहिलकू जने सोचलें कि चलीं हमहीं जमा क दीं। त ऊ निकरलें लगान जमा करे। पहिले बेर तसील प जायेके रहल। खूब नहा धो के सजि सचरि के निकललन। आ शहर पंहुचलन। एने ओने ताकत चिहात चलि जात रहलन। तबले एगो मेहरारू उनका के चिहात देखलसि त बोलवलस। कहलस तनि बइठऽ, कुछु पानी वोनी पीलऽ, सुस्ता लऽ त जइह। ऊ इनका के पानी ओनी पिअवलस आ पूछलस कहां जात बाडऽ? कहलें जा तानी तसीली प, लगान जमा करे। ऊ मेहरारू कहली कि अरे त हमरिए लगे जमा क द। इ पूछलें कि तू के हऊ कि तोहरे लगे लगान जमा क दीं। ऊ कहली कि हम तसीलदार के महतारी हईं। कहलें अच्छा तब त बडा बढियां भइल कि असहीं भेंटा गइलू। ल हई कुलि पइसा आ ठीक से जमा क दीह। तसीलदार के महतारी कहली तू निहचिन्त होके जा। आ सुनऽ हई थोरे पइसा ध ल किराया भारा खातिर। ऊ बडा खुश भइलें। तसीलदार के माई के गोड़ लगलें आ मगन होके घरे आ गइलें।

आगे जवन भइल तवन बूझि गइल होखब सबे।

••

5-चट्ट लिट्टी पट्ट गोइंठा

दू फरीक गइलें तारीख प। अपनिये में कवनो मामले मेंजिला कोर्ट में मुकदमा चलत रहे। दूनों जने फरीक पहिलहीं पंहुचि गइल। पहिलवां मुकदमा लडे वाला आपन सतुआ पिसान ले के जा लोग। आपन बनावे खा, मुकदमा के तारीख सुनो आ लवटि आवे। ईहो लो आपन तैयारी से गइल रहे। खाये पीये के जोगाड बान्हत रहे लो कि दूनो जाने भेटा गइलें।

फरीक १– का जी कब अइलीं हं।

फरीक २–अबगे।

फरीक १–रउवा का ले आइल बानी?

फरीक २–हम त सतुआ ले आइल बानी।आ रउवा?

फरीक १–हम त पिसान ले आइल बानी।

(फरीक १ के दिमाग में आइल कि हम त लिट्टी चोखा लगवले में अझुरा जाइब ई इयरवा सतुआ खा के फट से हाजिर हो जाई। आ हम पछुआ जाइब। मन ही मन उपाय सोचे लगलें।आ कहलें–) धत मरदवा तू त गइल। सतुआ त फतुआ त सान, त खा। आ हमार का बा–चट्ट लिट्टी पट्ट गोइंठा, आ खा, पी के कचहरी में हाजिर।

फरीक २ –(फिकिर में परि गइलें, अरे हम कहां से कहां सतुआ ले के चलनी हं। सतुआ त फतुआ त सान त खा–हम अझुरइले रहि जाइब आ इ चट्ट लिट्टी पट्ट गोइंठा, खा पी के हाजिर। कह तानी के जाने बदलि ले) ए इयार, बदलि नाइ लेत। हमरा आजु लीटिए चोखा खाएके मन करत बा।

फरीक १–अब चलऽ पुरान इयार हव त तहरो मनवा राखहीं के परी। ल भाई बदल लऽ!

गठरी बदलि लीहल लो। फरीक १ सतुआ सनलें, खइलें आ तारीख प पंहुच गइलें आ मन माफिक तारीख ले के सरक गइलें। फरीक २ अबहिन गोहरे सुलगा रहल बाने। ••

www.bhojpurisahityangan.com

बरसात (बरवै)

हरिराम द्विवेदी

घिरि घिरि घुमरि बदरिया बरसै लागि
बुनियाँ प्राण पिरीतिया परसै लागि।
कहवाँ से उडि आइल भरल अकास
अँचरा धइले सँगवाँ लगल बतास ।

टुप टुप टुपुर टुपुर टुप चुवतइ जाय
तनिक न मानै छिन छिन छुवतइ जाय।

भीजत जात धरतिया पोरइ पोर
घिरलि अन्हरिया आगम लगइ अजोर।
कलसा छलकावै घन गगन उड़ाय
अस रस बरसै धरती जाय जुड़ाय ।
ठोप ठोप जल बहिचल बनि जलधार
उमगत उमड़त आवत जस सुख सार ।

चुवै लगलि ओरवानी भरल गुमान
कुलि अँगनइया थरिया मतिन भरान ।

खोरी बहै लगल जस कउनो नार
परगे परगे मिलतै रहत पनार ।
निरमल जल बनि बुन्नी भुइँयाँ आय
फूटि चलै बहि बहि के जाय हिंढ़ाय ।
गलियन गलियन रेंगत अस जलधार
ओहरै भागै जेहर पावै ढार ।

अस बरखा भइ लागल हँसै सिवान
गोंइड़े केरि गड़हिया भइल उतान ।

जेकर गिरिही पक्की करइ अनन्द
खिड़की खोलि दुआरी कइ कइ बन्द।
झुरै बयरिया लागै तनि बउछार
झाँकि झाँकि सुख लेतइ रहत सिँगार।
कच्ची बखरी सहि नहिं पावइ मार
झोंका लागै ओदरल जाय लेवार।

ओकर दुखवा कउनी भाँति कहाय
जेकरे बरतन चुवना रोपल जाय।

चलनी भइल मड़इया बड़ अन्धेर
ओकरे चढ़ि चढ़ि नाचै बिपति बँड़ेर।
मनइन से चउवन के दुख कम नाहिं
हपचा में रतिया भर रहि रहि जाहिं।
भुइयाँ पग पग कनई उपटइ लाग
टिकटउरे वालन कै नीमन भाग।

रहिया कनई चहँटा से भरि जाय
बहरे जाये में जिउ डरि डरि जाय।

गिहथिन देयँ ओरहना रोजइ रोज
आइ बियहलैं बाबा कहवाँ खोज।
अइसन भइल डहरिया चलल न जाय
केतनो चलै सँभारत पग बिछिलाय।
बरखा नाचै लागै ठावइँ ठाँव
सुख कै आगम जोड़ै आपन गाँव।

पनियाँ पाइ हँसैं कुलि जंगल झाड़
झरना गीत सुनावै मगन पहाड़। ••

www.bhojpurisahityangan.com

विजय शंकर पाण्डेय

(एक) हमार लड़िका

हमार लड़िका हमके बहुतै पियार करेला
का कहीं, घीव डालल दाल- भात हम्मैं देवेला
हमार लड़िका, केतना खियाल करेला !
बसिया रोटी के आगी में रोजे धिकावेला
खटिया हमार बरधवानी में बिछावेला
अब का कहीं, हमरे पर केतना उपकार करेला !

पुरनकी गुदरी, असों जाड़ा में पतोह बदल दिहलेस
'बदल बदल के बिछइहे माई !' नन्हका कहलेस
गन्धात गतरी के ऊ छान्ह पर झटक देहलेस
नन्हको ले हमार एतना दुलार करेला !

मोटर सइकिल में अझुरा के नन्हका पैन्ट फार लिहलेस
माटी में सउनाइल रहे, एसे अच्छे से झार दिहलेस
"बाबा के दे दे, तोके नया किनाई" मतारी कहलेस
लड़िको दुलहिने क बतिया पर एतबार करेला !

पुरनका कुर्त्ता चिथराय गइल, नंगे पीठ देखात बाय
बचवा कहलन 'बोरा साटा ई जाड़ा में गरमात बाय
सँझवै कउड़ा बार दिहे सब, ओनके नाहीं देखात बाय
बइठि के खइहें कउड़ा लगे, आगा बासी भात बाय'
दुआर गली सब झारि के, कउड़ा पर अँगार धरेला !
लड़िका हमार, हमके बहुतै पियार करैला !

(दू) माई बेटी संबाद

-- "माई रे, ई मंत्री लोगन का खात होइहन ?
-- "पगलो, ओन का तोरे मतिन खयका जोहत होइहन ! .....

हलुआ - पूड़ी, खीर ! या बारा - मोछी सँग महकउवा भात पर किसिम किसिम क तरकारी ! भा तन्दूरी रोटी सँग मीट भा मुरुग-मोसल्लम कुछो खा लेत होइहन!" बिटिया सुनलेस त मुँह में लार भर गइल अउर आँखि मुनाय गइल। कुछ देरी पटायल रहल फिरु पुछलेस, "माई रे, उनके इहाँ बबुआन के घरे जइसन दूनो टैम खयका बनत होई ? कि उनहूँ के घर, हमरे अस लइकी तरसत होई ?"
--- "नाहीं रे, उनके कवने चीझ क कमी, ओनकर बकसा हरदम पइसा से भरल रहैला !"
--- माई रे, ओनके घरे एतना रुपइया कहाँ से आवैला ?
--- अरे पगली, उनकर कै ठे हाथ हौ ! पुलुस दरोगा अउर बड़का अफसरन के पहुँचावल कमीशन के रकम उनके हियाँ पहुँचत रहैला !
--- "अउर अगर ऊ सब न दें तब ?"
--- "पगलो, अब कइसे तोहें समझाईं, ई परजातंत्र हौ! ऊ जब चहिहैं, ओन लोगन के नकेल कसि दीहैं! टान्सफर करिहैं, ससपेन्ड करिहैं, मन करी त जेलो भेज दीहैं । अरे ई होय भा न होय त ठीकेदार कामे अइहैं ! कमीशन पहुँचाय के नया काम के आडर पइहैं ! बस समुझ ले कि मंत्री लोग के बहुतै पावर हौ !"
--- अच्छा ! एक बात अउर बताव माई, कि ओनहूँ बाबू के तरह दारू पियत होइहैं ?
---- अरे, ऊ महँगी वाली बिदेसी पीयत होइहैं, तोहरे बाऊ मतिन ठर्रा थोरे ढकेलत होइहैं ! अउर पियतो होइहैं त छिप छिपाय के !
----"माई रे बन्तुआ कहत रहै कि नेता लोग जेलो भेजालन !"
--- "हँ रे ..कबों कबों रँगे हाथ धराय जालन या कबों अपनै जाल में बाईचानस फँस जालन त हल्ला मचावैलन, बिरोध बदे रैली निकालेलन ,फिरो नारा लगावेलन" लोकतंतर बचाओ !, अन्धेर मिटाओ, तानासाही नहीं चलेगी ओगैरह ओगैरह !"
--- ओह! माई रे, ई सभ कबले चली ? " ••

गुंजन कुटिया, नरायणी विहार, चितईपुर वाराणसी

www.bhojpurisahityangan.com

गाँधी जी लन्दन नगरी में

(गाँधी जी पर लिखाइल नया प्रबन्ध - काव्य "अग्नि सम्भव" के एगो अंश)

✍ आनन्द सन्धिदूत

सउँसे जग के ज्ञान - कला से सजवल लन्दन नगरी
युक्ति योग अन्वेषण बल से पजवल लन्दन नगरी
संघ- शक्ति, स्वातंत्र्य बोध से दमकल लन्दन नगरी
मातल गर्व जहर शराब में बोथल लन्दन नगरी ।

होत साँझ छलकत बिबेक से घुसकल लन्दन नगरी
का विद्यालय, का पूजालय सहकल लन्दन नगरी
दे शराब के दावत गुरु चेला के, चेला गुरु के
बस एतने प्रयास शिक्षा बटेर आवे कर उड़ के।

घूम -घूम गाँधी खोजसु लन्दन में, लन्दन नगरी
बल-बैभव-बिद्या बउराइल मन में लन्दन नगरी
नग्न बिलास लोटल समुद्र तट तन में लन्दन नगरी
कर में कटि गायन - बादल - थिरकन में लन्दन नगरी।

सबकुछ पवलो पर भौतिकता - भूखल लन्दन नगरी
केहर जाईं, दिशाबोध से टूटल लन्दन नगरी
घन कोहरा हिम - शीत बृहद निशि दुबकल लन्दन नगरी
पीयत भाप गरमात उष्ण सुख पोसल लन्दन नगरी।

जइसे हों हनुमान गइल लंका में अति लघु बन के
गाँधी घूमत रहलन पैदल गली - गली लन्दन के
देखत बणिक नामपट पढ़त पोस्टर चपकल दर-दर के
जोहत शाकाहारी होटल, राह चलत अवसर के ।

एह सम्पर्क साधना से
संगठन - शक्ति के सिद्धि ।
जइसे कवनो तप से होखत
तेज - प्रभा में वृद्धि ।।

केतने पुस्तक पढ़ के केतने महापुरुष से मिल के
अन्तर मन के टोह लेत आ थाह लगा के दिल के
लिख के पढ़ के बोल - लजा के मौन होइ के, हँस के
सबका सुख-दुख के प्रियभाजन बन, आँखिन में बस के।

गलती भी होखल असत्य बोललन कहलन बिन ब्याहल
झूठ सुधरलन साँच बोल के सात्विक प्रेम बढ़ावल
बार - बार गलती कइ के उझकत आ गिरत सम्हल के
नारी के माता - भगिनी ना मित्र बनावत चल के ।

घूम - घूम हर एक मोहल्ला में ले - ले के डेरा
गाँधी देखलन गली - गली घर - घर के साँझ-सबेरा
सबकर दुख - सुख दर्शन आक्रामक प्रतिरक्षा क्षमता
जोरल तोरल गाड़ल - खोदलश अउर दीनता - प्रभुता ।

गाँधी भइलन बैरिस्टर केतने प्रकार के बन के
चिमनी हैट सोना के सिकड़ी इवनिंग - सूट पहन के
शाकाहार बिलायती भोजन नर्तन गायन बादन
गली - गली में कई तरह के कइ संस्था - संचालन।

गाँधी भइलन बैरिस्टर पढ़ स्वाभिमान के भाषा
गाँधी भइलन बैरिस्टर पढ़ देश ज्ञान के भाषा
गाँधी भइलन बैरिस्टर पढ़ देवनीति के भाषा
गाँधी भइलन बैरिस्टर पढ़ प्रेम प्रीति के भाषा ।••

■ पदारथलाल के गली, वासलीगंज, मिर्जापुर (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

दू गो ग़ज़ल

शशिप्रेमदेव

(एक)

कइसे-कइसे बढ़ी कहानी : तै बाटे!
के हाकिम, के बनी किरानी : तै बाटे!

पिंजरा में आकि सरेहि में...? चिरई के-
कहाँ भेंटाई दाना-पानी : तै बाटे!

बखरा में केकरा आई कंकड़-पत्थर
ले जाई के सोना-चानी : तै बाटे!

के बाँटी रुपिया, धोती, दारू, मुर्गा
असवों के जीती परधानी : तै बाटे!

पानी, पत्थर... कुछुवो फेंके ऊ बाकिर
जुलुम कबो ना सही जवानी : तै बाटे!

आ जाई जब्बे मउवत कऽ परवाना
चली ना कवनो आनाकानी : तै बाटे!

घूम-फीरि के लवटी फेरु 'शशी' कहियो-
तहरे गोदी मन-सैलानी : तै बाटे!

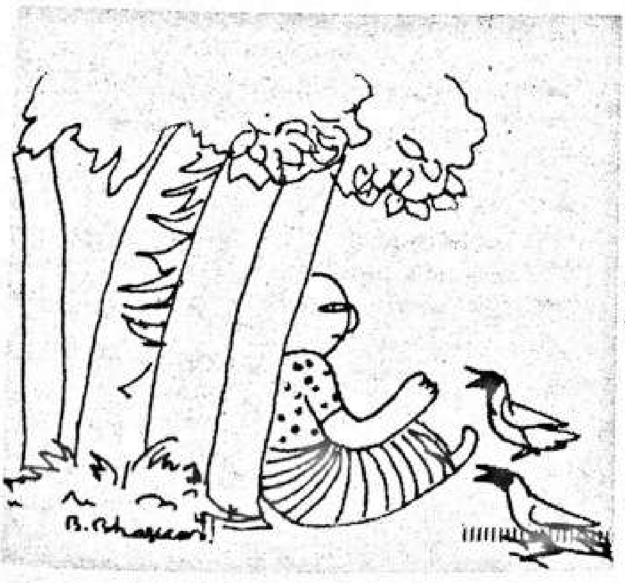

(दू)

हमहूँ चोटी तक पहुँचीं अरमान रहे!
बेंवत ले बेसी बाकिर सामान रहे!

आन्ही तऽ बुझलसि कि गाँजल बा रूई
पता चलल जे ऊ एगो चट्टान रहे!

तबले तनिको कोशिश ना कइलस चिरई
जबले नद्दी के लाँघल आसान रहे!

मजा तऽ आइल् ओकरो के बहुते बाकिर
हँसलसि ना काहें कि मुँह में पान रहे!

खूब उपदरो कइलन् मलुआ के पापा
मलुआ के माई जबले परधान रहे!

सबक सिखावे का चक्कर में हमहन के-
दुश्मन खुद्दे ता-जिनगी हलकान रहे!

चोर धराइल तऽ ना घाटी के बाकिर
पनही से लागल जे पाकिस्तान रहे!

••

प्रवक्ता अंग्रेजी, कुँ० सिंह इ० कालेज, बलिया (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

जीवन के साँच

✍ दयाशंकर तिवारी

नाहीं लउकत डहरिया के छोर बाटे
पसरति पीरा सजोर पोर - पोर बाटे !

देहियाँ भइल आपन, अपने के भारी
निरदइया अबहीं ना छोड़े बैपारी
होत ओही में अब तोर - मोर बाटे।

आँखि - कान, ठेहुन जबाब देलें तन के
काल करे अनगिन सवाल चुन - चुन के
लीखल बिधनो क लेखवा कठोर बाटे।

जिनिगी भर जाहिल गँवार हम रहलीं
मनवाँ के हर बतिया कहियो ना पवलीं
अब त बाँचल जिनिगियो इ थोर बाटे।

मटिया आ पनिया के देहियों बा छूछे
अगिया, अकसवा बतसवा से पूछे
टूटत नाजुक सनेहिया के डोर बाटे।

ना कवनो थान बचल, ना कवनो थाती
रहि - रहि के भभकेले तेलव बिन बाती
इहै दियना के अखिरी अँजोर बाटे।
पसरति पीरा सजोर पोर - पोर बाटे !!

••

गायत्री भवन, भीटी, मऊ (उ०प्र०)

गुरबिन्दर सिंह के दू गो कविता

(एक) - गाँव

भीजल लवना धइलस काई
अब त चूल्हा रोज धुँवाई।

रोजे नून तेल के लफड़ा
सुबहित भोजन कहाँ भेटाई।

बड़का घरे त सोगहग सीझी
खुद्दी छोटका घरे रिन्हाई।

रात-रात रतजग्गा होई
भूखे आई कहाँ उँघाई ?

जोर समय के अजबे यारब
कब, कहवाँ, केके ले जाई।

(दू) - शहर

टोंकल बा गोड़वे में नाल
पूछीं मत शहरिन के हाल ।

पह फाटे से पहिले जागे
डुबली किरिन रात ले भागे
घरे पहुँचते होय निढाल ।।

कउड़ी के दउरा दउरी में
हिरिस बनल तिनिकी अउरी में
परल सकेता माया -जाल ।।

नीक - जबून चिन्हाय न ओके
लउके बस धोखा पर धोखे
कउवा चले हंस के चाल।।

पूछीं मत शहरिन के हाल !! ••

आर० के० पुरम, नई दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

हवा-पानी

डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव

अब समझ में आवत बा कि शहर में आके बसल केतना जरुरी रहल ह। गाँव में बइठल बइठल माछी मारत समझे में ना आवे कि का कइल जाव। केतना लोग राय देव की अपने साल भर से बेकार बइठल बानी। एतना पढ़नी-लिखनी आज कवनो काम नइखे आवत। बेकार बइठल, हे कोठी के धान हो कोठी करत रहे के, ना मालूम उ कवन धंधा हवे। जे देखता उहे हँसऽता।

उनका के देखते लोग का मुँह से सवाल फूटे- का विदिया बाबू कहीं नोकरी ओकरी के जोगाड़ भइल? अब का सफाई दीं, आ का झूठ बोलीं। रात के सपना कबो-कबो गुरु के काम करेला। मध्य रात्रि में लागल की केहू आके कान में धीरे से कह गइल ह- 'उठ! विदिया बाबू। शहर के रास्ता पकड़, ओहीजा कौनो ना कौनो नोकरी के जोगाड़ होइये जाइ।'

सबेरे उठते मन पर धुन सवार हो गइल। माई पुछली- इ बक्सा बेग काहे के संभारत बाड़ऽ ? कहीं जाए के तइयारी बा का ?

माई के बात पर मन भिन्ना गइल। इनकरे टोकला पर त हमार कवनो प्रोग्राम ना बनेला। लगे आके कहली- आज खेत वाला मेड़ के फैसला बा। दू-दूगो अमीन आ रहल बाड़ें। तहार रहल जरुरी बा। हम माई के झड़पनी- तुहूँ कवना फेर में पड़ल बाड़ू माई। जवन झगड़ा के सात साल से फैसला ना भइल उ आज हो जाई ?

हीरा त्याग के तूं कोयला पर छापा मारे के कहत बाड़ू। आज हम ना रुकेम।

विदिया लाल नहा-धोके हनुमान जी के पूजा कइले आ मुँह में एगो बतासा डाल के नौ बजिया गाड़ी धरे चल दिहले। बाप के गोड़ छुए ना गइलें। बुढ़ऊ आशीर्वाद देबे के पहिले दस गो सवाल पुछिहें-

इ तूं दिल्ली जाये के तइयारी काहे कइले बाड़ऽ ? कौनो नोकरी भेंटाए के उम्मीद भइल बा का?

रेलगाड़ी में बइठल विदिया लाल सोचे लगलें- उमीदे पर त दुनिया टिकल बा। लाखों लोग जाके दिल्ली में खप जाता सभे के पेट भरे के जोगाड़ होइए जाता। "नगीना के नाती बँसुला-रुखानी धरे के ना जानत रहे। शहर आवते अइसन चालाक भइल कि बड़का-बड़का पलंग बनावे के ठेका खुदे लेबे लागल। रुपिया-पइसा एतना झरत बा कि रखेके झोरा में जगे नइखे।

गांवे दू कीता खेत कीन लिहलस। परिवार में लोग के देह पर सुबहित कपड़ा लत्ता ना रहे, अब जाके ना देखीं सभे झम-झम झमकावत बा। गेन्हरी के मेहरारू उनका इहाँ शादी-बियाह, परब-त्योहार में हँड़िया-पतुकी देले। नगीना के माई बोलाके जवन साड़ी से विदाई कइली उ लेहले घरे-घरे देखावत गइल। अइसन कीमती साड़ी-साया त बड़-बड़ अमीरो लोग के घर से ना भेंटाई।

बात कवनो गलत ना रहे। दिल्ली के त बतिये दीगर बा। विदिया बाबू हद से हद बीस दिन बेकार बइठल होइहें। दू किलोमिटर दूरे एगो पेंट के फैक्टरी में नोकरी लाग गइल। विदिया खुश होके सावन के मोर नियर नाचे लगलें। पाएँट-बुशर्ट नया सिलवा लिहलें। एगो दोस्त बोललें, देखऽ एकरे के किस्मत कहल जाला। भगवान जब देलें त छप्पर फार के देलें।

विदिया मने मन अगराइल रहस। जी जान से नोकरी करस। कारखाना के मालिक बड़का-बड़का जिम्मा उनकरे के सौंप देस। कुछ दिन में बुझा गइल की विदिया बाबू ना रहस त फैक्ट्री के चलल मुश्किल हो जाई।

विदियो सुबह घड़ी के सूई देख के अपना ऑफिस पहुंच जास। रात के लौटे में कबो कबो देरियो हो जाव।

सब खुशी-खुशी दिन बीतत रहे। गाँवे खबर भेज दिहलें की घरे के दु:ख दलिदर दूर होखे में अब देर नइखे। तीन हाली बीस बीस हजार रुपिया भेज चुकलें। खाए पिए के कोताही मत करिहऽ लोग। कुछ दिन बाद नहर वाला खेत लिखवा लेबे के बा।

बाप महतारी अइसन कमासुत बेटा के मनही मन आशीर्वाद देबे लागल। महतारी कालीमाई के पूड़ी, जई, मिठाई चढ़वली। गाँव टोला में प्रसादी बँटल।

विदिया के लगे खबर गइल की तहरा बड़का बेटा के बियाह खातिर अब देखनहरूओ आवे लगलें। विदिया फोन से मना कइलें, अभी जल्दी कइला के कवनो काम नइखे। बेटा के इंजीनियरिंग पढ़ावे के बा। ऊँच पढ़ाई पर खानदानी लड़की भेंटाई।

तीन साल बीत गइल। साथी लोग आपन डेरा बदल के दोसरा कालोनी में चल गइल। विदियो एगो फ्लैट किराया पर लेके रहे लगलें। सबकुछ त ठीके बीतत रहे तले उनका महसूस भइल कि पेट में पथरी

www.bhojpurisahityangan.com

के शिकायत हो रहल बा। कइगो डॉक्टर से राय लिहलें– दवा खाए लगलें। कुछलोग ऑपरेशन करावे के जोर देबे लागल।

छुट्टी लेके पाँच दिन से अपना घरे में पड़ल रहलें कि गाजियाबाद से दीनानाथ के दामाद मिले अइलें। देखते चिहा गइलें। विदिया बाबू, रउरा त तनिको चिन्हाते नइखीं। कइसन रहनी आ आज का हो गइनी। हम त सोचले रहनी हँ कि रउरा से भेंट होइ त आपस में तनी हँसल बोलल जाई। नाता में हमनी के त आखिर सारे बहनोई नू बानी सन। मगर राउर हुलिया देख के त हमार मने गिर गइल।

विदिया लाल उनकरा से अपना तंदुरुस्ती के हाल बतवलें। खाना नइखे पचत, छाती में गैस बनल रहत बा। कबो–कबो पथरी के दरद उपट जाला। सब सुनला के बाद दीनानाथ बोललें– हमार एगो बात मानेब?

–बोलीं।

–ना, पहिले रउरा हमरा के बचन दीं।

–आरे लीं, राउर नीमन बात हम काहे ना मानेब ।

दीनानाथ समझवलें– रउरा थोड़े दिन खातिर गाँवे लौट जाईं। ओहिजा दुचार महीना बिताईं। गाँव के हवा–पानी के बाते दोसर होला। हई पेट–सेट के कवनो बेमारी ना रही। भगवान चहिहें त हई पथरी के दरदो बिला जाई।

–कइसन राय देत बानी जी, अइसन नीमन नोकरी छोड़ के हम गाँव लौट जाईं। का धइल बा गाँव में ? ना डॉक्टर ठीक भेंटालें आ ना दवा–दारू। खरबिरवा दवा पर ठुकुर–ठुकुर करत रहऽ।

मगर दीनानाथ फेर कईबेर अइलें आ एह बात पर जोर डाले लगलें। दुचार गो आपन देखल उदाहरनो सुनवलें। सुरेश के सार नोकरी छोड़ के गाँवे गइलें। मरदे तीन महीना में टनमना गइलें। मडुआ के रोटी आ गुड खा के लाल टेस हो गइलें। हवा–पानी बदलला के असरे दोसर होला।

विदिया लाल फोन कके अपना बाप–महतारी के बतवलें। दिल्ली में तबियत ठीक नइखे रहत। लोग राय देत बा की गाँव जाके हवा–पानी बदल आव। गांव में आलोचना भी भइल। उलटा गाँव जवार के लोग बर–बेमारी छोड़ावे– इलाज करावे दिल्ली जाला आ इ मरदे उलटे नबीगंज आवत बाड़ें।

विदिया लाल के मन में बात बइठ गइल कि लोग झूठ नइखे कहत। जगह बदलला से देह के सगरी रोग बलाय–भाग जाला। उनकर मेहरारू मना कइली। जगह बदल देला से पेट के रोग ना जाई। शहरे में एक जगे गड़ के दवा कराइं। रउरा ठीक हो जाएब। विदिया लाल बोलले तहरा मालूम नइखे हवा–पानी के असरे दोसर होला। आ अपना गाँव के बाते दोसर होला। मन में उत्साह भरले विदिया लाल अपना घरे पहुंचलें। एतना लंबा समय पर नबीगंज के देखते मन खुश हो उठल। बुझाइल जे एहीजा उनकर तबियत ठीक हो जाई। लोगो कहल, ठीके कइल ह विदिया बाबू अपना गाँव के बाते दोसर होला। साल छव महीना रह के देख ल। एहीजा के दूध–पानी अनाज सब्जी सब ठीक से पची आ देह के टनमनात देरी ना लागी।

आपना गाँव में विदिया लाल के दिन बीते लागल। दिन दिन भर केहू ना केहू लगे बइठ के बतियावे। जवार भर के नया नया हाल मिले। नरेश भाई खबर लेके अइलें– आज त भइया जुलुमे हो गइल।

–का भइल हो ? विदिया पूछलें।

–अब का बताईं। थरिया में चोखा कम देख के जगदीश काका अपना जनाना के चहल–चहल के पीटलें हं। कहत रहले हं कि अपना घर के चोखा दोसरा के खिया के बइठल बिया। हम खाईं चाहे ना। अइसन हरामजादी के त गर में रसरी बांध के इनार में लटका देबे के चाहीं।

–विदिया लाल हँसलें। बड़ा बुरबक बाड़ें जगदीश काका। चोखा खातिर मेहरारू के मारल जाला।

–अब के उनका के समझावे। कुछ कहऽ त दोसरे बात उड़ा दिहें।

–एही बीच सियावरदास आके बइठ गइलें। परिवार के पुरनिया रहलें। लोग उनका से ढेर ना बतियावे।

–तब सियावर जी। अउर हाल सुनाईं। विदिया लाल कहलें।

–का सुनाईं, गाँव देहात में अब चोर चाई के बढंती हो गइल बा। लोग के काटल गेंहूँ के बोझा, चोर उठा ले जात बाड़ें सन। रसुलावा के बकरी मार के कवनो खा गइल। ओकरा टोला में दू दिन से हल्ला मचल बा। गनेसी के पॉकेट भरल बाजार में धीरे के कवनो काट लिहलस। दू सौ चालीस रुपिया निकल गइल। आपन हाल सुनाईं, दवा–बीरो के असर होत बा नू ?

–विदिया लाल गिरला मन से बोललें– का बताईं चाचा, पहिले त दू–दू खोराक में बुझाइल की हप्ता भर में हम तंदुरुस्त हो जाएम। बाकिर डाक्टर साहेब कहत बाड़ें की रउरा तीन महीना लागी ठीक होखे में।

–सियावर जी नबीपुर में डाकिया के काम खातिर मशहूर हउएँ। उनकरा लगे कहाँ–कहाँ के खबर होला। पर साल उहे खबर फइलवले रहलें कि चीन अब लड़ाई

www.bhojpurisahityangan.com

करे के तइयारी में बा। ओने पकिस्तानो खुरखुराता। गाँव के हाल इ बा की तहरा बगइचा में आम के तीन गो गाछ पर सुरुज नोनिया पंचायत में केस ठोक देले बाड़ें की मेड़ पर के उ तीनू गाछ उनकर आपन ह।

खबर सुनते विदिया लाल के मन भिन्ना गइल। बताई ना सुरुजवा त भारी डकइत बा। केहू ओकर नाम डकैती में काहे नइखे लिखवा देत। जेल के खिचड़ी खाई त मन ठंढा जाई।

उहो कारवाई जारी बा। गाँव के अइसन अइसन समाचार सुन के मन झवाइन हो गइल। हमार बड़का बेटा कहतारें कि का हे नबीगंज के नरक में बइठल बानी। चलीं हमरा साथे कलकत्ता। ओहिजा आराम से खायेब–पीयेब आ परल रहेब। कवनो हरहर पटपट ना। हवा–पानी बदली त तनमन ठीक रही।

विदिया लाल के मन डूबे लागल। अजब हाल बा ए भाई। एहीजा के तमाशा में पड़के के आपन जान गँवाई। लोग कहऽता– शहर जाके हवा–पानी बदलीं। गाँव के हवा अब बिगड़ गइल बा।

विदिया लाल बेचैन हो गइलें। एह दू हप्ता के दरम्यान तीन चार आदमी आके पूछ गइलें– अपने आपन मकान बेचत होईं त हमके बताएब। हम रउरा के दू चार हजार अधिके दियवाएब। बाहर के दालान में राखल साइकिल कवनो कल्हकी रात उठा ले गइल।

विदिया लाल मन में सोचे लगलें– हम आपन हवा–पानी बदले अइनी। एहीजा त दोसरे रामायन चलत बा। जे जहाँ बा उ ओहिजा ठीक बा।

विदिया लाल अगिला हप्ता दिल्ली लवट अइलें। मेहरारू हँसते पूछली– बदल अइनी हवा–पानी?

मेहरारू के मुस्की उनका जहर नियर लागल। अब बोलस त का बोलस। ••

▩ पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग राजधानी कॉलेज, नई दिल्ली-१५
आवास : टावर-१/६०१, बेवली पार्क अपार्टमेंट, सेक्टर-२२/२ द्वारका, नई दिल्ली-७७.

बिरह - गीतिका

✍ जय शंकर द्विवेदी

हिया बेधेले सँवरिया के बाति
नयनवाँ से लोर झरे !

जागल जबसे बा पहिली पिरितिया
रहि - रहि उभरेले सँवरी सुरतिया
मोंहें निंदिया न आई भर राति
नयनवाँ से लोर झरे !

रहिया निरेखि बितल दुपहरिया
मन मुरुझाइ जाय लखते दुअरिया
बुला आइ जायँ रतियो - बिराति
नयनवाँ से लोर झरे !

हुन - दुन ननदी के गभिया सुनाला
मुसुकी से ओकरा बोखार चढ़ जाला
ऊहो डाहेले सवतिया क भाँति
नयनवाँ से लोर झरे !

हिया बेधेले सँवरिया के बाति
नयनवाँ से लोर झरे ! ••

▩ सी-39, सेक्टर-3, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

गहिर चोट

✍ अनिल ओझा 'नीरद'

देवकान्त आजु रिटायर हो गइले। रिटायर का भइले, नोकरी छोड़ दिहले। अब प्राइवेट कम्पनी में का रिटायर भइल, का नोकरी छोड़ल सब बराबरें बा। ऊहाँ ना त कवनो फंड के सुविधा, ना कवनों पेंशन के व्यवस्था। जब ले हाड़ में जोर बा ठकठकाव, ना त छोड़ि के घरे जा। रहे उहाँ के रिटायरमेन्ट के नीयम रहें। देवकान्त चुँकी अब देहि से थाकि गइल, रहले एसे बिना कवनो हांल–छुज्जति के नोकरी छोड़ि दिहले। तिरसठे बीस के उमिरि में पैंतालिस बरिस हो गइल रहे एके कम्पनी में, एके जगह पर नोकरी करत आ अब त पैसठि के हो गइल रहले। देहिं थाकल–थाकल महसूस होखें लागत रहे अब साँझि होत होत, तेह पर तनखाहों मिले में तीनि–तीनि महीना के देरी हो जात रहे। कम्पनी के हालत खराब बा एह घरी, अइसन मलिक के कहनाम रहे। रोज बक–भक करे के परत रहें, तनख्वाह खातिर–रोज, एक हजार दे द, दू हजार दे द, खर्चा त चलो, तनख्वाह में से काटि लीहऽ, तबो कवनो असर ना होत रहे मालिक पर, कैशियर मैनेज करे त कहाँ से? अक्सर खाली हाथ लवटे के परत रहे घरे। कई दिन से आगा–पाछा सोचत–सोचत एक दिन भारी मन से नौकरी छोड़ि के घरे बइठि गइले। हो गइल रिटायरमेंट।

देवकान्त आज बहुत उदास बाड़े। उदास एह खातिर नइखन कि नोकरी छूटि गइल त अब घर के खर्चा कइसे चली। आगे गुजारा कइसे होई। अतना दिन के नौकरी में, पेंट काटिये काटि के सही, खर्चा में कटौती कइये के सही, कुछ ना कुछ बचइबे करिहें। ऊ उदास एह से बाड़े कि उनुका घर के भविष्य कहीं चलवले आगइू चलइवे करि हे। ऊ उदास एह से बाड़े कि उनुका घर के भविष्य कहीं लउकत नइखे। घर के भविष्य माने उनुका बबुआ, उनुका लइका मनीष उनुका संगे नइखन रहत। बिआह कके अलगा हो गइल बाड़े आ अलगे रहतारे। एकही बबुआ, जेकरा पर जाने केतना–केतना असरा लगवले रहले देवकान्त, जेकरा के पालि–पोसी के, पढ़ा–लिखा के काबिल बनावे में अपना तरफ से कवनो कसर ना उठा रखले देवकान्त, कि इहे बबुआ, हमरा बुढ़ापा के लाठी बनिहे, आजु ऊहे, एह भरल बुढ़ापा में, उनुका के छोड़ि के अलग हो गइले आ अइसन अलग भइले कि एक बेरि झांकियो पारे नइखन आवत हमरा घरे, अतना बेमरवत, अतना बेदिल, काहे हो गइले मनीष ऊ सोचि–सोचि के, देवकान्त के दिल घवाहिल बा।

जिनिगी हऽ, पार त लगबे करी, चाहें जइसे लागो। अपना से लागो चाहें दोसरा से। बाकि आपन आपन ह, दोसर एकर मलाल त रहिये जाला जिनिगी में। आपन के मोह कबों जाला ना मन से। एकरे के मोहजाल चाहें मायाजाल कहल जाला एह संसार में, त भला हम एह मोहजाल से कइसे निकलि पाईं। देवकान्त सोचतारे।

मेहरारू चाह लेके अइली त देवकान्त पलंग पर चिताने सूतल एकटका, घर के छत के निहारत रहले, जइसे कवनो गहिर सोच में होखसु, का परल–परल दिन–राति सोचत रहीलें जी? सोचला से का होई? करम बदलि जाई? छूटि गइल नौकरी त छूटि गइल, होई नू गुजारा। जइसे भगवान का राखे के होई रखिहें। जब आपने खून रंग बदलि दिहलसि त इहो त भगवाने के मर्जी से नू भइल होई? त जवन भगवान ई करवले होइहें, ऊ रउओ बारे में कुछु सोंचले होइहें? त उनुके पर भरोसा करीं। उनुका जवन करने के होई, जइसे करे के होई ओसही करिहें। रउआ दिन–राति सोचला से कुछु ना होई। नइखे बेटा से असरा लउकत त बेटी के बोला के बात करीं, दमाद के बोला के बात करीं, का जाने राउर जिनिगी बेटिये–दामाद से पार होखे के लीखता होखे, त एह लेख के, के बदल सकेला। हुंह, उठीं चाह पीहीं। जवन होखे के होई ऊ होई, ढेर सोचत मति रहीं। चलींए उठीं। कहत कहत ऊ चाह ओही पलंगे पर राखि के कमरा से बाहर निकलि गइली। देवकान्त अपना बीतल दिनन के इयादि करतारे।

एह औरत के जिनिगी बरबाद करें में उनुके नूं हाथ बा। आजु जेई अपना देंहि में बीसन रोग के पालि के बइठल बिया ओकर कारण ऊ, खाली ऊ बाड़े। दवेकान्त के जबबिआह हो के आइल त उनुका घर के हालत ठीक ना रहे। हालत पहिलहीं से ठीक से ठीक ना रहे। दू कमरा के घर में अपन माई – बाबूजी आ भाई बहिन के संगे रहत रहले। बाबूओ जी एगो प्राइवेट कम्पनी में काम करत रहले, उनुको नोकरी एगो प्राइवेट कम्पनी में लागल। तनख्वाह केहू के जादा ना रहे, बाकी गुजारा होत रहे। घर में बिजली तक ना रहें। आपन ग्रेजुएशन तक पढ़ाई ऊ ढिबरी–ललटेन के आगा बइठ के पूरा कइले रहले। जब बिआह भइल त दोसरा के घर मे कनेक्शन मांग के अपना दूनो घर में एके एगो बल्ब जरवले रहले। पंखा अभी बहुत दूर क बात रहे। गर्मी से हाल बेहाल रहत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

जाड़ा अपना उफान पर रहे, जब शादी के करीब तीन साल बाद, देवकान्त के मेहरारू के पहिला डिलिवरी भइल। जेउआँ लइका भइले स। एगो लड़की, एगो लइका। घर मे कुछु खुशी के माहौल बनल, लेकिन भागि का ई खुशी मंजूर ना रहे शायद, पंडी जी बतवले कि लड़िका सतइसा में बाड़े स, एह से सतइसा कि विधि पूरा होखे तक बाप इन्हनी के ना देखी। लागल एगो तितिमा। लइका एह जाड़ पाला में बेसी भाग घरे में राखल जाये लगले सं। घाम–बतास कुछु ना लागल। नतीजा भइल कि दूनो का डबल नमूनिया हो गइल। डाक्टर के देखावल गइल, दवाई चले लागल, लेकिन सफलता मीलल। लइकी त सतइसा का दिनही मर गइली आ एकरा बाद लइका के अस्पताल में भर्ती करावे के परल, बाकी ओकरो कवनो फायदा ना भइल। लइका चउदह दिन अस्पताल में रहि के दम तूरि दिहलसि कुल्हि भाग दौड़ बेकार हो गइल। घर के माहौल गमगीन हो गइल। दवा–दारू आ अस्पताल के खर्चा में कमर टूटल से अलग, ऊपर से कपार पर कर्जा चढ़ि गइल। चारू ओर से टूटल गम के पहाड़ के झेले के परल।

देवकान्त का इयादि परऽता–एह घटना के करीब डेढ़ साल बाद उनुका घरे एगो लड़की के जनम भइल। लड़की, स्वस्थ्य–सुन्दर पैदा भइलि, आ संयोग से जी गइलि। नांच रचाइल संजना। घर में कुछु मनसाइन भइल। देवकान्त का आजुवो इयादि बा कि एही लइकी का चलते, गर्मी का दिन में, ओकरा के गर्मी से बचावे खातिर, ऊ एगो बिजलि पंखा खरीद के ले आइल रहलन। यानी एह तरे उनुका घर में ई सबसे पहिल पंखा गागल। ई लइकी एहू से खास बनि गइल, एह घर में, आ विशेष लाढ़–प्यार के अधिकारी बनि गइलि कि एकरा जनम के बाद देवकान्त का अपना कम्पनी में विशेष तरक्की मिलल रहे। ओहदा का संगे तनखाहो बढ़ल रहे। ठीक जनमाष्टमी के राति एकर जनम भइल रहे।

अउर एकरा ठीक अढ़ाई – पौने तीन साल बाद जनम भइल ओह बबुआ के, जेकरा के देवकान्त पहिलहीं याद कइ चुकल बाड़े मनीष का रूप में। पैदा होते त बबुआ इहो बड़ा भाग्यवान भइले काहें से कि इनिका जनम का बाद देवकान्त का अपना कम्पनी मे एक बेरि फेर तरक्की मिलल। अबकि उनुका जिम्मे कम्पनी के बाहर के कुछु काम अइले स, जवना में तनख्वाह का अलावा, अलग से ओकरा खातिर भुगतान मिले का बात तय भइल। घर के माहौल गुलजार भइल से अलग। इहां इहो इयादि बा देवकान्त के लेकिन, कि ई ऊहे बबुआ हवन जिनिका जनम के बेरि, जब ई अभी होखे वाला रहले, देवकन्त का करीब उनइस दिन, अपना आफिस से छुट्टी ले के, अपना मेहरारू आ लइकी दूनो के सम्हारे के परल रहे, काहे कि ओह घरी उनुकर बाबूजी–माई, गांव गइल रहे लोग, चाचा जी के लइका के बिआह सम्हारे। आपन छोड़ि के उनुका सम्हारे, जबकि ऊ लोग खूब ठीक से जानत रहे कि देवकान्त के मेहरारू के हालत ठीक नइखे, उनुका पेट में पानी बढ़ि गइल बा, आ लइका पेट मे उलटि गइल बा, यानि डिलिवरी जटिल बा, काहें कि ओह लोगन के सामन हीं उनुका लेप्रोस्कोपिक टेस्ट आ सोनोग्राफी हो चुकल रहे। ऊ लोग लड़िका का डिलिवरी का बाद लवटल रहे गांव से।

खैर लड़िका पलाये पोसाये लगले स। नोकरी में तरक्की आ तनख्वाह में बढ़ोतरी जरा मिलल रहे, लेकिन दू दू गो लइकन के खर्चो त कपारे चढ़ल रहे। तरक्की के पइसा के बनिस्पत खर्चा लेकिन बेसी रहे। तबो तालमेल बइठावत गाड़ी आगे सरकत जात रहे।

उमर भइला पर लइकी के नाँव त हिन्दिये मीडियम स्कूल में लिखाइल, बाकी लइके के ढेर लाड–प्यार आ लइका भइला का चलते एगो ढेर मोह, लगाव जे होला, हमनी के समाज ओरा से बेसी के असरा जे लगावेला, ई भावना जे पैदा खून से होला कि लइकी त आखिर लइकी हई, दोसरा के घरे चले जइहें, तब ई लइकवे नू होई जे एह घर के पार लगाई, त एकरा के ढेर बढ़िया से पढ़ावल ठीक रही, आखिर इहे नू एह घर के चिराग होई, एह फारमूला पर बबुआ जी के नाँव अढ़ाइये बारिस के उमिरि में, अंग्रेजी मीडियम में लिखा गइल। लइकी आपन हिन्दिये मीडियम में ठीक से निकलले जात रहे, बाकि कुछ दिन बादे देवकान्त मनीषो के अंग्रेजी मीडियम से निकाल के हिन्दिये मीडियम में ले अइले। खर्चा के संतुलत कुछ अवकात में आइल।

पढ़ाई दूनो के ठीके चलत रहे। लड़की के ध्यान खाली अपना पढ़ाई पर रहे, एह से ऊ ठीक–ठाक निकालत चलि जात रहे अपना के। बबुआ कवनो खराब ना रहले बाकी बबुआ भइला का नाते कुछु जादा छूट लेत जात रहले। कबों स्कूल के नाटक प्रतियोगिता के भाग, कबों किकेट खेल में भागीदारी, त कबों एन०सी०सी० में हिस्सा। किकेट के शौक का चलते त उनुका के एगो किकेट क्लब में भर्ती करावे के परल रहे, आ एन०सी०सी० के शौक त उनुका के जलपाई गुड़ी तक माउन्टेन–ट्रेकिंग खातिर खीचि ले गइल रहे।

लइकी बड़ रहे, आपन पढ़ाई पहिले पूरा कइलसि।

www.bhojpurisahityangan.com

बी0काम आनर्स कइलसि त देवकान्त के इच्छा भइल कि आगे ऊ सी0ए0 खातिर कोसिस करिति बाकी ऊ एम0काम0 में जाये के बारे में सोचे लगलि। देवकान्त का एम0काम0 के कवनो भविष्य ना नजर आवत रहे एह से ऊ अब ओकर पढ़ाई एहिजे रोकि के बिआह क दीहल उचित समझले कि आगे जो कुछुओ पढ़े के मन होई, त अपना ससुरारि वाला लोगन के मर्जी से पढ़ी ना त आपन घर सम्हारी। उमिरि हो गइल बा, अब अपना घरे जो, आ एही उधेड़बुन में परल एक दिन एगो बढ़िया घर–बार देखि के ओकर बिआह कइ दिहले। आजु ऊ अपना घर में सुखी बिया।

बबुओ जी बहिन के देखा देखी कामर्स लिहले आ हाईस्कूल, इन्टर के बाद बी0 कामो0 मे आनर्स लिहले आ गुड सेकेण्ड क्लास पास कइले। घर में दोहरा खुशी आइल। हलांकि लइकिये लेखा इनिको से, देवकान्त का इहे आशा रहे कि कम से कम इहे सी0 ए0 क लिहिते, लेकिन इहो इनिकार क दिहले।

लइकी के इन्कार से देवकान्त का ओतना चोट न पहुंचल रहे जेतना इनिका से, इनिका पर देवकान्त के भविष्य टिकल रहे। एगो अनिका भविष्य खातिर ऊ आपन आगे आवे वाला चार–चार गो भविष्य कुरबान जे कइले रहले। ऊ भइल अइसन कि इनिका जनम के बाद जब उनुका मेहरारू फेर से गर्भवती भइली त ई तनी कांपि गइले। आखिर घर के हालत कवनो बहुत बढ़ियाँ त हो ना गइल रहे। ऊहे तंगी, ऊहे परेशानी, दुइये गो लइका के सम्हाले, पढ़ावे–लिखावे में तरहा डोलत नजर आवत रहे, से ई साफ– साफ मेहरारू से कहि, दिहले कि भाई अब हमरा कवनो अवलाद ना चाहीं। जवन हालत बा घर के, ओह में एही दूनों के पार लगावत मुश्किल लउकत बा। एहसे तूं गर्भपात करवा ल। इहे दूनो रहिहें सऽ अब लइकी पढ़ि लिखि के, बिआह शादी कइके अपना घरे चलि जाई आ लइका रहि जाई ई घर सम्हारे खातिर कुछु बनि जाई त बढ़िये से सम्हारि ली आ ना कुछु बनि पाई तबो, हमनी पर ढेर बोझ ना परी। गरिबियों में गुजारा होत रही। अब नया आई केहू, पता ना के आई, पहिले ओकरा के फेर से नया सिरा से सँभारल करीं त केहू के पूरा ना परी। कुल्हि बजट बिगरि जाई से अलगा।

मेहरारू त मुँह लटका के मानि गइली, हलांकि देवकान्त जानत रहले कि ऊ एह फैसला से सहमत नइखी। आखिर कवनो मेहरारू अपना अवलाद के बलि चढ़ावल थोड़े चाहेले, चाहेला त मरदो ना, बाकि परिस्थिति जे ना करा दे बाबूजी–भाई सुनल लोग त तनी खिसिआइल लोग, कि ई का करावतारऽ, अब रहे द जवन आ गइल बा ओकरा के जनम ले लेबे दऽ, आगे से सावधान रहिहऽ लोग। आखिर ई पापे नू होई। सुनि के देवकान्त के मुंह से निकलि गइल कि ऊ त ठीक बा, बाकि आवे वाला के खिआई के? हमार त अतने में खर्चा नइखे चलत। एह पर फेर से ऊ लोग कुछ ना बोलल। गर्भपात भइल आ अगिला आठ–दस मास के भीतर चारि बेरि भइल। देवकान्त जानतारे कि ऊ पाप कइले बाड़े, बाकि हर पाप का बेरि हर बार अपनहूँ मूअल बाड़े। भ्रूण हत्या, यानी लेले तऽ बाड़े हर बेरि एगो नया जान। ऊ इहो जानतरे कि आजु उनुकर मेहरारू जे बीसन तरह के रोगन के शिकार हो के रहि गइल बाड़ी ओकरा पीछे अउर कवनो कारण ना, इहे उनुकर बार–बार के गर्भपात हऽ। लेकिन भाग्य के बिडम्बना देखी कि आजु ऊहे उनुकर लड़िका ई माने के तेयार नइखे कि हमरा मम्मी के तबीयत, एगो, आ खाली एगो हमरा के बचावे, एकही पर कुल्हि असरा टिकावे, कुल्हि सुख पावे के गरज से, हमरा के पाले – पोसे, पढ़ावे–लिखावे आ काबिल बना के अपना खातिर एगो लम्बा सुख के कामना सजावे खातिर आपन जिनिगी कुर्बान क देले बाड़ी। ई ह महतारी के करेजा, आ ई हऽ बेटा के करेजा।

बबुआ जवन–जवन कहले, देवकान्त तवन तवन पूरा कइले। आखिर उनुको खातिर त ऊ एके आँखि रहले। बाकी आँखि त ऊ फोर चुकल रहले। मतारी अलगे, एके हाथ पर उठवले राखल चाहत रहे। कहां उठाई, कहां बइठाईं के दुलार लइकाई से सेयान आ जवानी तक चालू रहे। से बी0 काम0 पास कइला के बाद जब ना सी0ए0 करे के तैयार भइले ना अभीं कवनो नोकरी खातिर राजी भइले त अपने से कहले कि हम बिजनेस करबि, ऊहो रेडीमेड कपड़ा के। पहिले त देवकान्त झिझकले, काहे से कि ऊ अइसन सुनले रहले कि उनुका खानदान में बिजनेस ना सहे, ऊ मनीष के समझावे के कोसिसो कइले, बाकी लड़िका के जिद के आगे झुके के परल। करजा–पताई कइके लाख–डेढ़ लाख जवन जुटि पावल, दे दिहले बाकी दू बरिस मे सब स्वाहा। पइसा आ बिजनेस दूनो हलांकि ऊ अपना एगो दोस्त के इनिका संगे लगवले रहले, जवन रेडीमेड गारमेंट के जानल मानल व्यापारी रहे। बाकि बाद में ऊहे बतवलसि कि फेल काहें ना होइहें, पार्टी माल लेके बोलावत रहलि हा दस बजे, त ई पहुंचत रहले हा उहाँ बारह बजे। अब के एगो नया व्यापारी खातिर अतना इन्तजार करी भला?

बिजनेस छूटल त अब नोकरी का ओरि रूख कइले मनीष। एक दिन आफिस पहुँचले देवकान्त त देखऽतारे कि एगो कल्र्क के टेबुल पर बइठल मनीष काम कइ रहल बाड़े। उनुका बड़ा अचरज भइल। मालिक से बात

www.bhojpurisahityangan.com

कइले त मालिक कहले कि एमें हर्जे का बा आखिर तोहार गारन्टी त बा नूं? अपना घर के लड़िका बा, जवान बा, कामर्स ग्रेजुयेट बा, कुछ सीखि जाई त काम के आदिमी बनि जाई। संगही इहो हिदायत दिहले कि तू कुछ मति बोलिहऽ, ना अपना अन्डर में लीहऽ। ऊ हमरा अन्डर में रही, आ हमहीं ओकरा से काम लेबि आ काम सिखाइबि।

नोकरी करत मनीष के देखि के देवकान्त कुछ आशान्वित त भइले कि चलऽ लइका राह पर त आइल, बाकि मनीष के एह नोकरी से देवकान्त बहुत खुश ना भइले। उनुका त अपना हीरो लड़िका से एकरा से बहुत के आशा रहे। ऊ ओकरा बारे में जाने कवन-कवन कल्पना सजवले रहले। कुछ दिन बाद मनीष के घर में बोला के कहले कि अगर जो तूं नोकरी करे के मन बना लेले बाडऽ, त हमार मानत तूं एम0बी0ए0 कऽलऽ कम से कम पचीस-पचास हजार के आदिमी हो जइबऽ। पहिले पहिल त एह पर कान ना दिहले मनीष, बाकि देवकान्त का कई बेरि दोहरवला पर, ई नोकरी करते करत प्राइवेट फार्म भरि के एम0बी0ए0 करे के तैयार हो गइले।

बस इँहवे से दूध में खटाई पड़ि गइल। जवान लइका-लइकी के जमघट। नवका जमाना के कादो इन्टरनेट के पढ़ाई। लैपटाप किनाइला इन्टरनेट कनेक्शन फिटभइल आशुरू हो गइल पढ़ाई का संगे चैटिग के कार-बार। अतवार के अतवार का कभीं कभी कवनो नेशनलो हालीडे के दिने क्लास लागे। दूर-दूर से आइल लड़िका-लडिकी, आस-पास मे घर भाड़ा लेके रहें, आपन पढ़ाई करें अउर क्लास के दिने क्लास करें।

पढ़ाई पूरा होत होत देवकान्त का सामने प्रस्ताव आ गइल कि हमरा बनारस के एगो लड़की से प्यार हो गइल बा, हम ओकरे से बिआह करबि, हमार बिआह उहां करवा दीं। देवकान्त के होश फाख्ता। ई चैप्टर भला पढ़ाई में कहँ से आ गइल। देवकान्त के बाबूजी ओह घरी तक गुजरि चुकता रहले। माई बूढ़ हो चुकल रहली। अब सलाह केकरा से करसु। अन्त में अपने मरदे मेहरारू सलाह कइल लोग आ ओह लोगन का लड़िकी के परिवार पसंद ना परल, एह से सीधा-सीधा ना का दीहल लोग। कुछ दिन घर के माहौल दमघोंटू रहल। बंद कमरा में बइठि के रोअन-धोवन चलल मनीष बाबू के फेर एक दिन आपन लैपटाप आ एक आध गो कपड़ा ले के उहां के घर से नपाता हो गइनी। कहां गइनी केहू के पता न चलल। दुइगे गो संदेह, या त ऊ खुद शादी करे गइल बा अकेल या फेर अपना कवनो दोस्त साथी किहां शरण लेले वा कुछ दिन खातिर। पुलिस में जानि के अभी कवनो खबर ना दिआइल। एही बीचे रांची से एक दिन एगो फोन आइल, ओकर कवनो दोस्त बोलत रहे कि हमार नांव केहू मति लीही कभी मनीष का सोझा, हमार कसम, बाकि मनीष हमरे किहां रॉची में बाड़े आ ठीक ठाक बाड़े। बाकी बात फेर कभी बताइबि, ई नम्बर हम उनुका फोन से लेले बानी, ऊ अभी बाथरूम में बाड़े, हम बाहर से फोन कइ रहल बानी, ऊ हमरा के फोन करे के मना कइले बाड़े।

कुछ हद तक शान्ति स्थापित करे वाली खबर रहे देवकान्त के घर खातिर, एह से सभे कुछ दिन खातिर पटा गइल। फेरत बीच मे खबर मिलत रहल कि मनीष अभी रांची में नोकरी ज्वाइ कइ बाड़े, फेर कि मनीष अब पतरातू चलि गइके, कि अब निरसा गइले, उहां से रामगढ़ गइल। यानि कुल्हि साल भरि में चार जगह। बीच में एक बेरि रेलवे के परीक्षा देबे खातिर अइले त अबकी देवकान्त जबरदस्ती रोकि लिहले कि जब नोकरिये करे के बात हम दिआइबि नोकरी तहरा के, तूं एहिजे रह। ओह घरी तक ओह लइकी के शादी हो गइल रहे कहीं जवन बनारस वाली रहे। एहसे ममिला तनी कन्ट्रोल में रहें।

देवकान्त का प्रयास से कुछु दिन मे मनीष के नोकरी एस0एस0 स्टील कम्पनी में लागि गइल। मनीष घरे रहे लगले, नोकरी करे लगले। देवकान्त अब अउर देरी ना कइल चाहत रहले। धीरे-धीरे मनीष के शादी में बारे में सोचे लगले तले त एगो अउर बिस्फोट कुछ दिन का भितर भइल। अबकि खबर आइल कि ऊ एम0बी0ए0 करत खा जवना क्षत्री लड़की संगे पढ़ल रहले, ओह से बिआह करिहे। फेर माहौल बिगड़ल कई लोग बात कइल बाकि कवनो नतीजा ना निकलला हीत-नात, साथी-संघाती, घर-दुआर सभे फेल। कुछ दिन तक कवनो नतीजा ना निकलत देखि, एक दिन कम्पनी के फैक्टरी में ट्रान्सफर डियूटी के बहाना बना के आपन सामान बन्हले आ घर से चलि दिहले। एने देवकान्त चिन्तित कि एगो ब्राहमण के घर में क्षत्री के लइकी भला कइसे आई?

ओने मनीष, एक दिन दवरे पर पकड़ा गइले। ऊ भइल अइसन कि एक आध बेरि मनीष के फोन ना लिलल त देवकान्त उनुका कम्पनी के हेडआफिस में पहुंचि गइले, फैक्टरी के हाल-चाल जाने खातिर आ ई देखि के हरान रहि गइले कि मनीष हेडेआफिस में बइठल काम करऽ तारे। ऊ उनुका के बाहर बोला के कारण पुछले त उनुका पासे कवनो ठोस जबाब ना रहे। देवकान्त बाद में अतने पुछले कि शादी कइ लिहल? मनीष के जबाब रहे-ना। काहे?

www.bhojpurisahityangan.com

देवकान्त पुछले। बिना बाप–मतारी के अनुमति आ शामिल भइले बिआह ना ना करबि। मनीष कहले। लेकिन बिआह ओहिजे करब? देवकान्त पुछले। हँ! मनीष जबाब दिहले। तब कइसे होई? देवकान्त फेर पुछले। जइसे रउआ सभ चाहबि तइसे होई मनीष कहले। लेकिन हमनी काऽ त कबो ना चाहबि जा कि ई शादी होखे? देवकान्त कहले। तब ना होई। मनीष कहले। तबो घरे ना चलब? देवकान्त पुछले बिना शादी कइले ना जाइबि। मनीष जबाब दिहले। सुनि के देवकान्त एक छन सोवचले फेर उल्टे पॉव घरे लवटि अइले।

हारि पाछि के ई शादी देवकान्त का करावे के परल। देवकान्त जब लवटि के अइले, त कुल्हिबात अपना छोट भाई चन्द्रकान्त के बोला के बतवले। सुनि के चन्द्रकान्त तनी दुखी त भइले, बाकि पीठि झारि के ओहि घरी से सक्रिय हो गइले। ऊ मनीष के बोला के भेंट कइले, कुल्हि बात समझते आ ई वादा क के कि चल तूँ जहाँ कहब उहंवे शादी होई, लेकिन तू पहिले घरे चलऽ। हम भइया–भाभी के मना लेबि, मनीष के लेले देले घरे चलि अइले। मनीष कवनो हाल में कोर्ट मैरेज करे के राजी ना रहले, उनुका खातिर बाप–भाई घर परिवार के शामिल भइल जरूरी रहे। चन्द्रकान्त कहले कि रउआ जीजा जी लोगन से बात करी, बात सुनी के ऊहो लोग इहे कहल कि ठीक बा भाई जब लइका नइखे मानत त कद ओकरे मन के, आखिर ओकरे नू निभावे के बा, साथे राखे, रहे के बा, त एह में तूं काहे बाधक बनतारऽ। आखिर एके त लइका बा त का तू ओकरा बिना रहि सकेलऽ?

लड़िकी तलाकशुदा बाप–मतारी के एके संतान रहे मतारी मरि चुकल रहे। ओकर लोकल गार्जियन ओकर मामा लोग रहे। एक दिन चन्द्रकान्त ओहू लोग से मिलने आ घरे बोला लिहले। ऊ लोग बातचीत क के राजी खुशी गइल। दिन तारिख तय भइल। कपड़ा लत्ता, गहना–गुरिया जे जरूरी रहे से बनताऽ, रिश्तेदारो लोग धीरे–धीरे पहुंचि गइल। चन्द्रकान्त के साथी ढेर बाकी देवकान्त के दूइये चारि गो शामिल भइले। कुल्हि मिला के एकतरह से सादा समारोह में शादी हो गइल। विदाई करा के लड़की घरे आ गइलि।

साल भरि मोटा मोटी ठीके ठाक चलल, लेकिन एकरा बाद सासु–पतोहि के छोटा मोटा रगड़ा शुरू हो गइल। लड़की कमासुत रहे ऊ भला घरऊ सासु के दाब काहे माने जाउ। छोटा मोटा रगड़ा अब धीरे–धीरे बड़ा झगड़ा के रूप लेबे लागल। सासु–पतोही में कवना घर में ठकबेनि ना होला, जइसे उपटेला, ओसही शान्त हो जाता। इहे सोचि के पछिले देवोकान्त चुप रहले आ मनीषो।

देवकान्त त करीब करीब हमेशे चुप रहले बाकि रोज रातिखा तृप्ती का ओरि से मनीष के कान भराये लागल। मनीष ऊपर से कुछु बोलसु त ना बाकि जनाइ जे ऊ मेहरारू के पक्ष में हो रहल बाड़े। आखिर होत होत एक दिन होइये गइले आ एलान क दिहले कि अब हम एह घर में ना रहबि। अउर एक दिन मनीष घर छोड़ि के नया घर में चलि गइले। पहिले ई तय भइल कि रहल भले जाई अलगा बाकी तृप्ती दूनो बेरा जइसे खाना बनावत रहली हा, ओइसे एही घर पर आ के बनइहें आ दूनो आदिमी के खाना लेके जाइल करिहें। कुछ दिन इहो नीयम चलल, लेकिन ढेर दिन ना टिक पावल, काहें कि धीरे–धीरे ऊ लोग आपन ओहिजे गृहस्थी बसा लीहल। आजु हाल ई बा कि ओह घर से एह घर में दूनो जाना में से केहू ना आवे, ना तृप्ती, ना मनीष।

टूटि गइले देवकान्त। उनुका अबहियो विश्वास नइखे होत कि ई कुल्हि उनुका संगे भइल बा। आखिर कहां गलती भइल उनुका से? जे आदिमी एगो औलाद से बेसी के कामना ना कइल। जे ओकर हर जायज–नाजायज मांग पूरा कइल, जे आपन कुल्हि शान ओकरे से महसूस कइल, जेकरा के आपन एकलौता भविष्य मनलसि, ऊ ओकर भविष्य अन्धकार कइके चलि गइल, काहें? एक घर में रहला पर केकरा संगे दूगो बोल टेढ़ सोझ ना बोला जाला, कब दूगो बरतन खनकि ना जाला, त एकरा खातिर का बरतन फोरि दियाला कि आपन बरिसन के जोगवल साथ छोड़ि दीहल जाला। आ साथो का अइसन छोड़ि दीहल जाला कि घर के आवाजाही बंद हो जाला? ताका–ताकी बंद हो जाला? आपन कुल्हि काम निकलवा के हइसे दूध के माछी नीयर फेंकि दीहल जाला?

जा मनीष, तूँ बहुते बड़ दगा कइ गइलऽ, हमरा से। हमरा बड़ा नाज रहल तोहरा पर। बहुत भरोसा रहल हा कि तूं हमार जिनिगी पार लगा देबऽ। लेकिन तूं त बहुत चोट दे गइलऽ हमरा के। एकदम गहिर चोट। का एह चोट से हम कबो उबरि पाइबि? तीस साल से मिलल महतारी–बाप के प्यार पर तीनि साल से मिलल मेहरारू के प्यार भारी परि गइल मनीष? देवकान्त के भितरी टीसत गहिर चोट तनी ढेरे करके लागल रहे। ••

28/4, भैरवदत्ता लेन, नन्दीबगान सलकिया, हावड़ा–711006

www.bhojpurisahityangan.com

गंगा प्रसाद अरुण के कुछ गजल

(एक)

एने ओने डधर डहर जाले।
कबो थथमे ठिठक ठहर जाले।

छेह के रेह के सरेह मथे,
नेह दरिआव के नहर जाले।

मन के पूरा बधार हरिअर बा,
दूर जहवाँ तलक नजर जाले।

झोंक झुरुका बेयार के लहरा,
केश-आँचर लहर-फहर जाले।

साध सरसे पिरीत बरसेला,
जिन्दगी फिर सँवर-सुतर जाले।

आँख ई बैल अनेरिया कह लीं,
रूप के खेत सजी चर जाले।

(दू)

बजार ढोल-झाल, का फरका!
बतास आल-जाल, का फरका!

देश-दुनियार हाल-चाल कहीं,
एक आन्हर सवाल, का फरका!

डोर काटल गइल तिलंगी के
कहाव बोल-चाल, का फरका!

लोग चाकू तले खँसी-मुरुगा,
झटाक भा हलाल, का फरका!

भेंड़ भगदड़ मथे कुँचा पसरल,
जवान-बूढ़-बाल, का फरका।

जहान देख रहल, बूझत बा,
कुल्हि राउर कमाल, का फरका!

(तीन)

आपन सूरुज-भान चली।
राउर ना फरमान चली।

ढिमिलाईं अछइत आँखी,
कइसे आन्हर-कान चली?

कोमल आम-अमोला पर,
बज्जर तीर-कमान चली।

भारी भरकम डाली पर,
एक पसर ईमान चली?

अपना जोमे अनका के,
केहू भला गदान चली?

अनका कान्हे-लग्गी से
कोई कहीं उतान चली?

काँव-काँव में कउअन के,
ई कोइलि के तान चली?

www.bhojpurisahityangan.com

(चार)

कुल जाना पहिचाना लोग।
लागेला बेगाना लोग।

अपने मुँह बड़बोला पन,
गढ़ जाला अफसाना लोग।

सोझिया के ना बात करे,
मद में चूर सयाना लोग।

आपन ढेंढ़र ना लउके,
अइसन अँइचा-ताना लोग।

स्वारथ रहले बाप हमें,
बूझेला मरदाना लोग।

नजर बचावत 'अरुण' चले,
फेंके अझुरा-फाना लोग।

(पाँच)

देह-मन करिया कहीं, ना समय के पहिया कहीं।
बोल बहिरा-गूँग-आन्हर, आज तोके का कहीं।

का कहीं धृतराष्ट्र के आ भीष्म-द्रोणाचार्य के,
ना कहीं मुदई, त का ए लोग के दहिया कहीं।

भरल महफिल द्रोपदी के लंग के, अपमान के,
आज ना, तेंही बतादे, फेरु हम कहिया कहीं।

हम बहब उहे, जे मन के बात बाटे, साँच बा,
बात भल, ना नीक लागी, जब कहीं, जहिया कहीं।

कुल सहारा पक्षधरमा कौरवी अंदाज के,
सब कहीं, तहिया कहीं, थहिया कहीं, बहिया कहीं।

(छह)

मयवद्‌दी के बात बताईं,
इनिकर-उनुकर घात बताईं।

हवा-बेआरी के का बोलीं,
मौसम के उत्पात बताईं।

कुल शतरंजी चाल चलंता,
गोटी सह आ मात बताईं।

दू कउड़ी के हाँडी जूठा,
अब का राउर जात बताईं।

अपना गीतन के बउसावे,
हम आपन अवकात बताईं। ••

21—बी, रोड नं०-१, जेन-4, बिरसानगर, जमशेदपुर—19

www.bhojpurisahityangan.com

दू गो कविता

अशोक द्विवेदी

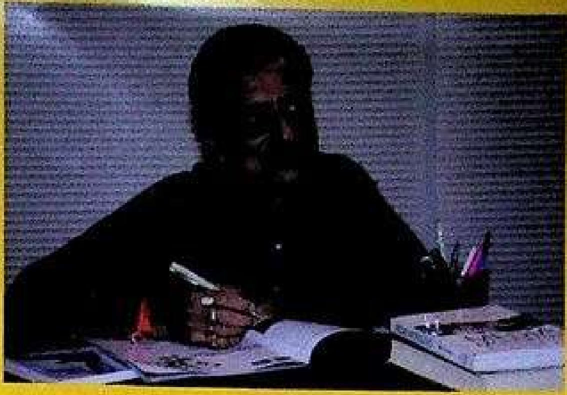

(एक) भूल-चूक माफ करिहऽ !

हे पुरुआ ... हे पछुआ
तुँहीं बतावऽ साँच-साँच
'हम सुख लोढ़नीं कि दुख !'

हे घाम ..हे सीत ..
हे घहरत घन !
का तोहन लोग का डरे
हम कबों मैदान छोड़ि भगनी
कि अपना पैसरम आ बल-बउसाय में
चूक कइनी ?

हे धरती, तूँ त साखी बाड़ू
हमरा खुरुपा-कुदार/हमरा हँसुआ के धार,
हर - फार के
हमरा अनडिग पसेवा के कवनो मोल त होई ?
हे मेघ, तहरे भरोस प
कीच -कानो में लसराइ के
निहुरि -निहुर रोपलीं धान
साइत - सुतार कहीं, दइबे किरिपा
फुटबो कइल त कइसे कहीं
कि ओमें पइया ना रहे !
कइसे कहीं कि जवना ऊखी के कोड़ले रहनी
जेठ का घामा ,बाँहि चिराइ के
ओम्मे कम बरखा का कारन
भरपूर रस ना परल !
कइसे कहीं कि जवना हर का हराई
गिरवले रहीं , जौ-गेहूँ क दाना
ऊ हराई साथ ना दिहलस !

हे दिग्पाल ! ..हे डीह -डिहवार !
तूँ ही बोलऽ..
बाप-दादा का समय से
टुकी -टुकी होत, जवन खेत-बाग-बन-बँसवारि
हमरा हिस्सा- बिरासत में परल
ऊ जीव जोगवे भर रहे का ?
इहाँ त किस्मत का दाँव खातिर
दाँत चियरले एगो खूँटा रहे जौना में
हमार दाना आ दाल दूनों अँटकि गइल !

ओघरी, त इहो ना सूझे
कि खाईं, खियाईं कि परदेस चलि जाईं ।

हे अकास ! सब कुछ तहरे छाँह तर
साँचे- साँच बोलिहऽ...
रहे -बसे खातिर माथ उप्पर
छान्ह -छप्पर चाहीं कि ना !
ना तऽ पैसरम में कमी
ना त नीयत में खोट
तब्बो काहें हमार भागि अतना छोट
कि तिनका-तिनका जोड़-बटोर
बनवलीं जवन खोंता
कबो आन्ही अधियाइल
कबो बाढ़े दहाइल
केहू तरे कुछ बाँचल तऽ..
भाई -भयवद का ओरियानी अझुराइल!

हम जिये क नया अधार खोजत
जियका का फेरा में
जोहत - भुलात अतना दूर चलि अइनीं,
तब्बो ए धरती !
ना तोहार मोह छूटल
ना तोहसे नाता टूटल
तूँ तब्बो माइये रहलू
अब्बो माइये बाड़ू !
हम अनेरिहा...
तोहके का दिहनीं
कि तोहके पावे खातिर
रार बेसाहीं ?
बस तूँ हमरा बदे आपन मनवाँ
साफ रखिहऽ!
हमार भूल- चूक माफ करिहऽ !!

••

www.bhojpurisahityangan.com

(दू) उपराजल

बाबा कहसु
जइसे खरबिरउआ दवाई से
जटिल रोग ठीक ना होला
बे सही उतजोग आ साफ मन के
बड़हन लक्ष ना सधे !

अब ..जबकि बल-बउसाय आ पैसरम ले
मोलगर हो गइल बा उपाय आ जोगाड़
त लमहर साधना के कठिन निष्ठा
कइसे उपजो
ठुक -ठुक के लफड़ा छोड़
एकहीं बेर कस के ठोंक दऽ !
लही त लही
ना त दोसर सही ।

दुइ आखर पढ़ला -लिखला के ज्ञान
ना टिकी बोध बिना
अगिली पीढ़ी के, बताइबि का
जिनिगी के नया शोध बिना !

दू पसर दिहला के
दान कहीं कि दया
ना देनिहार का मोह-मया
ना लिहनिहार का आँखी हया !
राहे घाट/बात -बेबात.. खुरखुरात
उभरिये जाता अभिमान
आपन कइल-धइल इयाद रहे
दोसरा के... मने ना परे
केहु के मिले भा मत मिले
हमरे के मिलल करे !

ए भइया, ई नकली जिनिगी के
ओढ़ल-उढ़ारल धरम हऽ
उपराजल ना !!

••

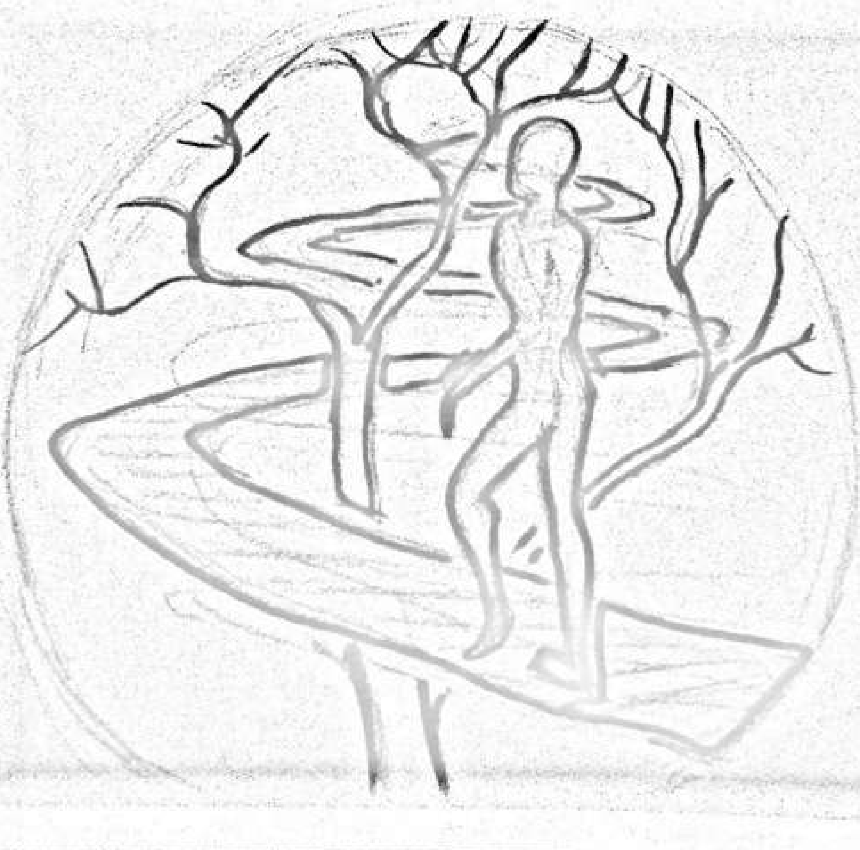

www.bhojpurisahityangan.com

1979 से शुरू भइल भोजपुरी दिशा बोध क पत्रिका 'पाती के सम्पादन, प्रकाशन में सम्पूर्ण समरपन, अथक परिश्रम, जीवन के उतार–चढ़ाव के बादो अबाध गति के निकलत मुकम्मल पत्रिका के रूप में 'पाती' महतारी भासा के साजे–सँवारे, रचे–रचावे, आ एह आन्दोलन के अंतिम पड़ाव आज तक के सफर खातिर ओजस्वी सम्पादक श्री अशोक द्विवेदी जी के बहुत–बहुत साधुवाद। अंक जून 2017 (अंक 84) मिलल। एह अंक में रचनात्मक आन्दोलन पर बतकही में संपादक जी 'रचनात्मक आन्दोलन' पर विस्तार से चर्चा कइले बानी। भोजपुरी साहित्य के पुरहर भंडार होखला के बादो आठवी अनुसूची में शामिल होखे खातिर बाट जोहे के परि रहल बा। रोके खातिर एक से एक लोग अड़ंगा लगावत रहत बा। संपादक के हर एह वाक्य में दरद साफ झलकत बा – ''कुछ महान आत्मा अइसनो लोग बा, जे बिना पढ़ल जनले, भोजपुरी साहित्य में कविता का बढ़ियइला से चिन्तिंत बा। ओ लोगन के किसिम–किसिम के अन्तर्विरोध चिन्ता भोजपुरियन के माथा गरम करे में कवनो कसर नइखे छोड़त। एह लोगन के ई लागत बा कि भोजपुरी भाषा के मान्यता दिहल जाई त हिन्दी के नइया डूबि जाई। जइसे हमनी भोजपुरिया का भीतर हिन्दी से प्रेम हइये–नइखे मय ठीका उहे लोग लेले बा हिन्दी के। हमनी के मातृभाषा का स्वीकार पर बेमतलब कुराग अलापि के ऊ लोग कवनो भाषा के मिले वाला नैसर्गिक न्याय के गला घोंटत बा। भोजपुरिया माटी में उपजल ई लोग हिन्दी पर भोजपुरी से खतरा देखत बा। भोजपुरी के विरोध में एह भोजपुरिया हिन्दीवादी लोग में ईर्ष्या आ डर बा।''

डॉ0 प्रकाश उदय के बेबाक बयानी कि कुछ लोग भोजपुरी खातिर छिंकलो–खँखरला के हीक भर हँकड़ के हिन्दी हित आ हिन्दी हित के खिलाफ सी0आई0ए0–ओ0आई0ए0 केजीबी–ओजीबी के साजिश तक करार देत देर नइखे लगावत। भोजपुरी के प्रति नकारात्मक रवैया क्षोभ उपजावे वाला बा।

भगवती प्रसाद द्विवेदी डॉ0 जयकान्त सिंह जय के तथ्यपरक लेख अच्छा लागल, डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव के व्यंग्य कथा ''छेनी–हथौड़ी'' के जरिये कथाकार समाज में आ देश मे व्याप्त कुव्यवस्था पर सीधा प्रहार कर रहल बा। सिस्टम में जवन घठ्ठा वन गइल बा ओकरा के हटावे खातिर छेनी हथौड़ी क काम पड़ी। तबे उहाँ के कहे के परत बा ''एह खिआइल देश के छेनी से टूँगे के पड़ी।

तुषारकान्त उपाध्याय के कहानी ''ऊ सँवरकी लइकी'' बहुते रोचक आ नया शिल्प के बा। ई बात साँच बा समाज में लइकिन के खतरा गैर से कम अपनन से ज्यादा बा। भेदोभाव बाटे। अजय कुमार के कहानी' भरम टूटल' में आफिसियल कार्यसंस्कृति में लल्लो चप्पो आ चमचागिरी के पूछ ज्यादा बा। साँच अदिमी के कदर नइखे। ई तथ्य स्पष्ट होता। गंगा प्रसाद 'अरूण' के गज़ल व्यवस्था पर चोट करे, में सफल बिया। उनका ठेठ भाषा के असर, लउकत बा।

शशि प्रेमदेव के गज़ल त हमेशा रसगर–मनगर आ असरदार होले, आसिफ रोहतासबी के गज़ल में गाँव आ जंगल का दिसाई बेरूखी उजागर भइल बा। उहाँ क तेवर खास बा। कृष्ण कुमार त सुलझल आ चर्चित कहानीहार हई। कवितो उहाँ के बड़ा धारदार लिखि रहल बानी।

रामयश 'अविकल', पकड़ी, आरा–802301

''पाती'' के नवका अंक (जून 2017) के मुखपृष्ठे देखके मन हरियरा गइल। डॉ0 प्रकाश उदय आ भगवती प्रसाद द्विवेदी के भोजपुरी का विकास खातिर चिन्ता आ विद्वत्तापूर्ण कोशिश से जानकारी बढ़ल त डॉ0 ब्रजुभूषण मिश्र के "प्रयोजनमूलक भोजपुरी" जी के लेख से ज्ञान के नया झरोखा खुलल। पाण्डेय कपिल के लेख से भोजपुरी के एह महान पुरोधा महेन्द्र शास्त्री के इयाद ताजा भईल आ माथा सरधा से झुक गइल। व्यक्ति विशेष में प्रो0 रामदेव शुक्ल के चर्चा प उनुकर उपन्यास "ग्रामदेवता" मन परि गइल। सम्पादक जी के पन्ना में भोजपुरी के विकास खातिर चिन्ता आ रचनात्मक प्रयास के जिकिर ना कइल बड़ी नाइंसाफी होई। हिन्दी आ भोजपुरी के विवाद खड़ा करे वाला लोग प राउर विचार से हर भोजपुरिहा सहमत होइहें। कवनो भोजपुरी अदीब चाहें जनसाधारण होय ओकरा हिन्दी से ना कहियो विरोध रहे, ना होई। विरोध आ विवाद के ई प्रयास त भोजपुरी के रथ के रोके के षडयंत्रे बा।

शशि प्रेमदेव के गज़ल में आम जनता के जीवन–संघर्ष आ तेकरे से पार पावेके कोशिश का साथ बोले के आजादी, कविता के मरजादा बचाने के जिद बा। स्व0 रामजियावन दास जी के भक्ति–भाव के कविता से मन विभोर हो गइल। रोहतासवी जी के गज़ल त जिनिगी के गज़ल बा, हमेशा के तरह सभ गज़ल में अभावग्रस्त

www.bhojpurisahityangan.com

जनता के बानी बा, जवन जिनिगी के जदोजहद में जुझ रहल बिया। एह में जहाँ एक तरफ जनता प अत्याचार, महँगी के चर्चा बा त दोसरा ओरिया ओकरा से लड़े खातिर कवि के तइयारी के जिद लउकता। कृष्ण कुमार जी के कविता स्त्री–विमर्श के कविता बा, जवना में आधा आबादी खातिर सवाल बा। कृष्ण कुमार जी विज्ञान के शिक्षक रहल बानी, कवितो में डाटा देके आपन बात दमदार तरीका से रखलें बानी। गंगा प्रसाद अरूण के पहिलकी गज़ल बड़ा नीक लागल। व्यवस्था प चोट मारत ई गज़ल वर्तमान के दुरदशा वाला जनजीवन घूसखोरी जमाखोरी प कड़ेर चोट करतबिया। मुँह प ताला बन्द बा जवना के चिन्ता अरूण जी के बा। खुद राउर (अशोक द्विवेदी) कविता टूटल सपना के कविता बा। एह में जहाँ स्वार्थ पर चोट बा, तहँवें प्रेम, करूणा, दया न्याय के बात बा जवन जीवन–मूल्य बनावेला। रमाशंकर श्रीवास्तव के कहानी में नशा प चोट त बड़ले बा, पंचइती के मजाक बनावे वाला लोगन के मुँह पर बरियार थप्पड़ बा, ''सॅवरकी लइकी'' में त प्रेम के बड़ा बरियार भितरिया धार बा। साइत उपाध्याय जी एनिये के रहे वाला बानी, तबे आरा के मोहल्ला के जिकिर बा। शिल्प नीक लागल। 'चल खुसरो घर' के सांहसिक प्रेम कथा मानल जाई। 'कुसुमावता कथा' ओह हजारों दाईयन के करून कथा बा, जिनकर जिनिगी कलपते बीत जाता। ई कहानी मन में कचोट पैदा कर देतिया। मेहरारू–जात के गरीबी, बेबसी, आ पराक्रम से ऑख लोरा जाता। गहिर यर्थाथ बा, एह कहानी में। दमगर कथा बा 'ए–रेक्सा'। एह कहानी में नीरद जी डूबि के लिखले बानी। हम त कहब कि पप्पू प्रसाद के चरित्र में डूबि के घुस के नीरद जी कथा रचले बानी। एह कहानी में फुटपाथी जीवन के भय, भुख, अभाव आ एहू में जीवन जीये के ललक कुछ नीमन करे के लालसा कहानी के बड़ा जियतार बना देता। एकर स्वाभाविकता, यथार्थवादी आत्मकथात्मक शैली मन के मोहत बा, झुकझोरता, सुहुरावता आ अंत में पप्पू के संघर्ष जीत जाता। कहानी में अतना रंग बा, मोड़ बा, नाटकीयता बा कि शुरू से अंत ले पाठक के बन्हले रहतिया आ एकरा हर पक्ष के निरेखे में त एगो नया रचना लिखा जाई। फुटपाथ प जनमे, जीए, भुखले रहले आ तबो नया जीवन के सपना देखे के कथा बा साथहीं सपना साकार करे आ पूरो करे के मेसेज देबे वाली ई कहानी बिया। नीरद जी के धन्यवाद।

'डिक्टेशन' कहानी पढ़ के आपन इस्कूली जीवन इयाद पर गइल। 'अनपुरहो' कथा पढ़ के 'ककिया' के इयाद पर गइल। बड़ा नीक लागल। अब ऊ जुग कहाँ, ऊ प्रेम कहाँ, ऊ करूना, ममता के मूरत कमे देखे के मिलत बा। कहीं मिल जाव एह खातिर मन तरसत रहेला। धन्यवाद।

कुल मिलाके पाती के ई अंक बहुत मनभावन सार्थक आ सोहावन बा। इहे सिलसिला लगातार चलते रहे। फले–फूले एकरे प्रभु से विनती बा।

■ अजय कुमार, आनंद नगर मोतीझील, पिपरहिया रोड, तिवारी के हाता आरा, भोजपुर-802302

■ ■ भोजपुरी भाषा साहित्य के, ऊँच पीढ़ा दियावे खाति सन 1979 से लगातार लागल रहे वाली पत्रिका भोजपुरी ''पाती'' के देखि पढ़ के हमेशा गरब के अनुभव होला। हम पछिला दू तीन दशक से एह पत्रिका के विषय सामग्री अउर, मैटर परोसे के ढंग आ सलीका देखि रहल बानी, एकरा में बीनल बरावल रचना आ भोजपुरी लेखकन के सिरिजना के उजागर करे का खासियत से बहुत प्रभावित भइल बानी।

पछिलका दूनों अंक अपना तेवर, अनुशासन आ रचनात्मक विविधता के कारन हमरा बहुते नीक लागल। स्तरीय कविता, कहानी के सँगे सँगे एम्मे भोजपुरी के निठाह गद्य रूप देखे के मिलल । विचार, चिन्तन, अनुशीलन आ विमर्श के सुघर प्रयास ''पाती'' के दिन पर दिन ऊपर ले जा रहल बा।

भोजपुरी के रचनात्मक आंदोलन पर लिखे वाला डा0 प्रकाश उदय, भगवती प्रसाद द्विवेदी जी का साथ राउर सम्पादकी लेख के विचार भोजपुरी भाषा साहित्य के लेके कई स्थितियन के साफ करत बा। अड़ंगा डाले आ अवरोध खाड़ करे वाला अपने आप एक दिन बह–बिला जइहें, अगर भोजपुरी के निष्ठावान लोगन क रचनात्मक अभियान अइसहीं चलत रही ।

एह अंक में अनिल ओझा 'नीरद', प्रेमशीला शुक्ल अउर तुषारकान्त के कहानी अपना थीम, कथ आ शिल्प का कारन बहुते अच्छा लगली सन । सबके बधाई !

■ डा० सान्त्वना, मालवीय नगर, नई दिल्ली

www.bhojpurisahityangan.com

किताब मिलल...

बनारस में, कविताई के एगो साँझ... सरस्वती प्रतिमा पर दिया जरा के माला पहिरावत डा० अशोक द्विवेदी, श्री हरिराम द्विवेदी, डा० अर्जुन तिवारी । दुसरका चित्र में बायें से बइठल श्री हरिराम द्विवेदी, डा० अशोक द्विवेदी आ डा० अर्जुन तिवारी आ खड़ा बायें से डा० वेद प्रकाश पांडेय, जयशंकर प्रसाद द्विवेदी, विजयशंकर पाण्डेय आदि

Anjoria.com

पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

रजि० नं० – आर०एन० 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372
अंक 85-86 सितम्बर - 2017

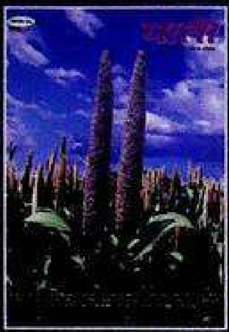

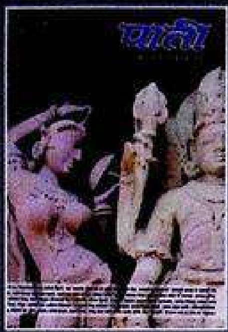

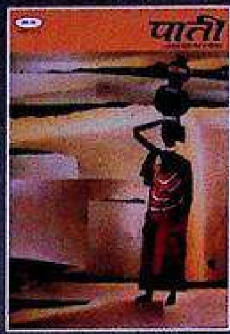

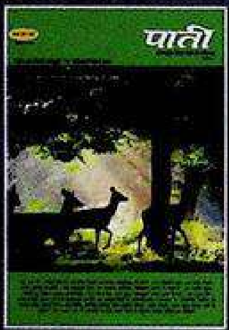

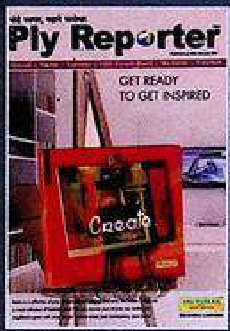

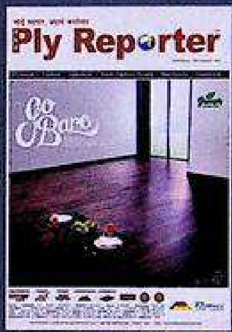

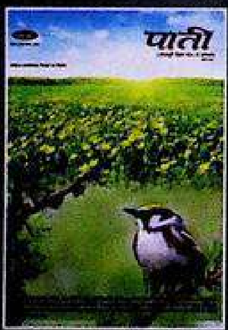

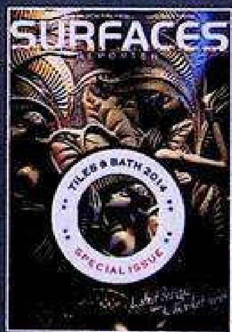

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com